साई युग आए

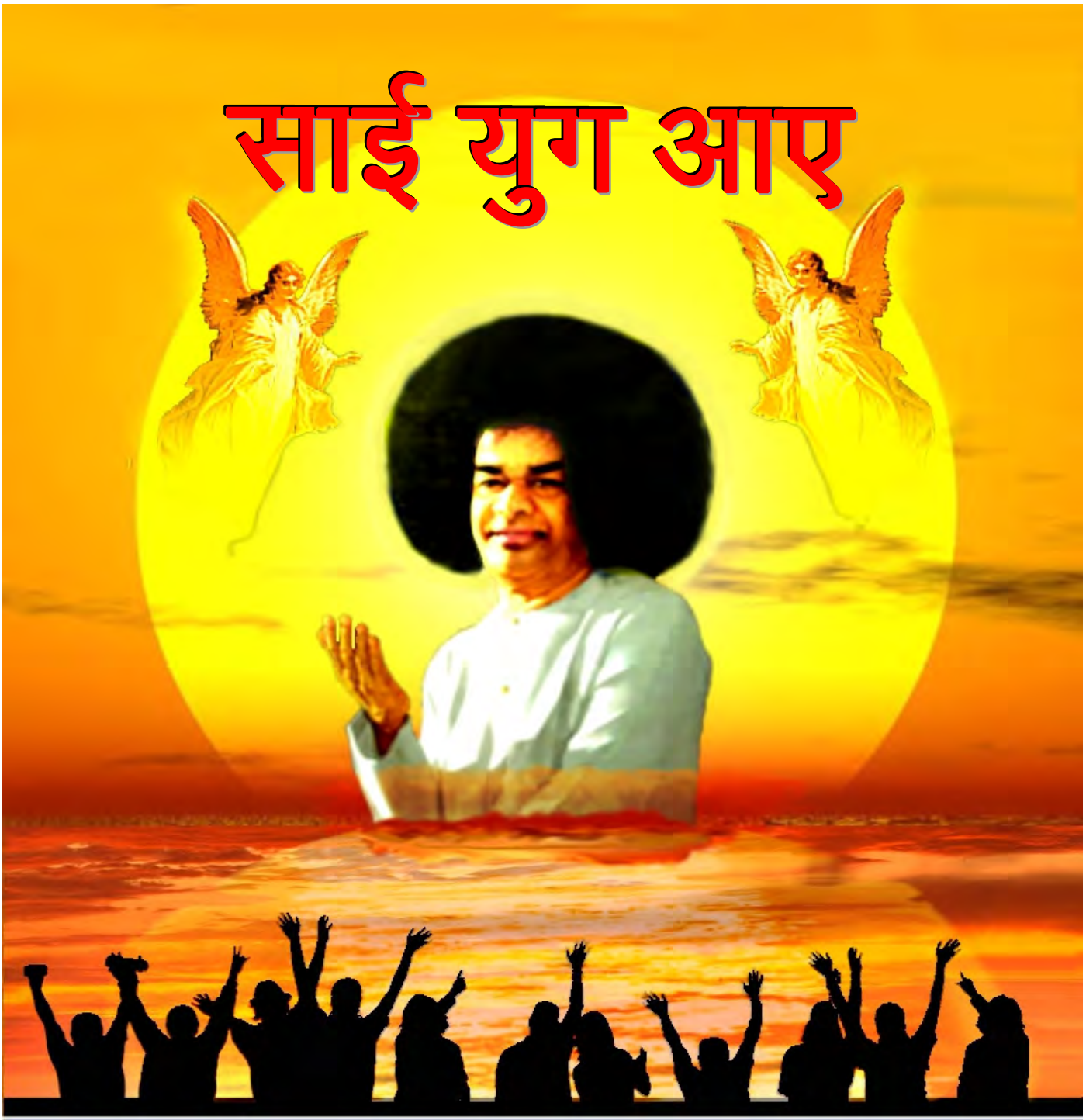

श्री सत्य साई बाबा की सम्भावित वापसी पर विस्तृत तर्कपूर्ण विचार

लेखक– श्रीजित नारायण

हिन्दी अनुवाद– संजय ढगट

हमारे प्रिय भगवान श्री सत्यसाई बाबा
के दिव्य चरण कमलों में
यह पुस्तक सादर समर्पित है। वे भगवान ही थे
जिन्होंने इस पुस्तक का विचार उत्पन्न किया और उस
विचार पर कार्य भी किया।
मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि इसका फल भी वे ही ग्रहण करें।

साई युग आए

श्री सत्य साई बाबा के "पुनः प्रकट" होने की सम्भावना पर विस्तृत तर्कपूर्ण विचार

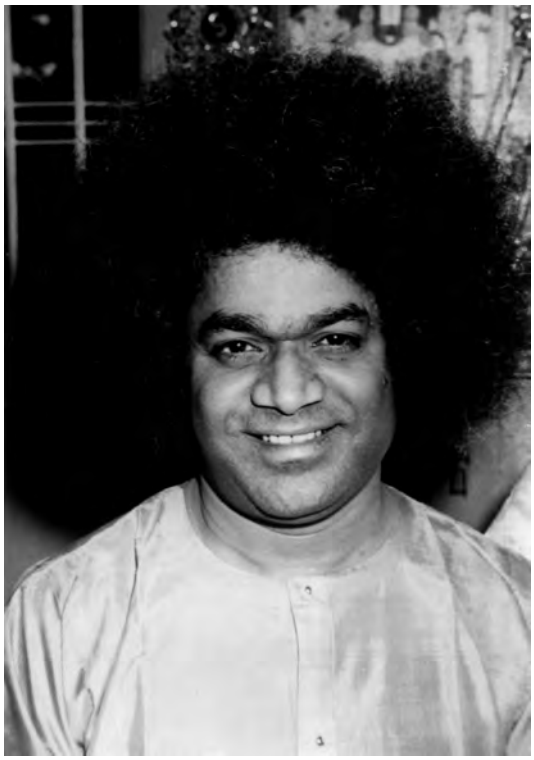

लेखक

श्रीजित नारायण

हिन्दी अनुवाद

संजय ढगट

सचमुच वे धन्य हैं जो पृथ्वी पर स्वर्ग का अनुभव करेंगे।

–श्री सत्य साई बाबा

कॉपीराइट © श्रीजित नारायण

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक को पर्याप्त श्रेय देते हुए संक्षिप्त सारांश या उद्धरण को छोड़कर, लेखक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में किसी भी यांत्रिक या इलेक्ट्रॉनिक या अन्य पद्धति द्वारा प्रकाशित या पुनरुत्पादित या प्रसारित या किसी भी अन्य भाषा में अनुवादित नहीं किया जा सकता है।

ISBN: 978-1-62154-797-6

प्रथम हिन्दी संस्करण

द्वितीय अंग्रेजी संस्करण जून 2012
प्रथम अंग्रेजी संस्करण अप्रेल 2012

Email: snarayan@saikingdom.com

विषय सूची

आमुख ७
लेखक परिचय १२
आभार १३
भूमिका १४
इस पुस्तक के बारे में १४
अनुवादक की कलम से १८
अध्याय 1: क्या स्वामी चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात कर रहे थे? २१
चन्द्र वर्ष का सिद्धान्त २१
शतायु भक्तों के प्रकरण २३
अन्य प्रमाण २५
स्वामी की जीवनी के लेखक का स्पष्टीकरण २६
अध्याय 2: उनकी क्या योजना है? २७
क्या स्वामी ने अपनी योजना बदल दी? २७
तो क्या योजना है उनकी? २८
अध्याय 3: स्वामी के भौतिक जीवनकाल के बारे में उनकी वार्ताऐं २९
एक सम्भावित व्याख्या ३१
अध्याय 4: भविष्य के लिये साई की भविष्यवाणियाँ ३२
हमें संशय का अधिकार नहीं ३४
अध्याय 5: उनके अवश्यंभावी आगमन के लिये संकेत ३६
एक चमत्कार जो होगा ३७
भक्तों के स्वप्न ३९
अध्याय 6: अतुल्यनीय नाड़ी ग्रंथ ४४
श्री सत्य साई अवतार के बारे में नाड़ीग्रंथों में भविष्यवाणियाँ ४४
नाड़ी ग्रंथों के सम्बन्ध में मेरा अनुभव ४८

नाड़ी ग्रंथों की भविष्यवाणियाँः स्वामी वापस आयेंगे! ४८
नास्त्रेदमस की रहस्यमय भविष्यवाणियाँ ५१
अध्याय 7: हजरत महदी का अन्तर्ध्यान होना.....५३
हजरत महदी कौन हैं? ५३
महदी को पहचानने के चिन्ह ५३
पृथ्वी पर महदी का शासन.....५५
महदी का अन्तर्ध्यान होना.....५६
महदी कब वापस आयेंगे? ५८
क्या हजरत महदी नये शरीर में वापस आयेंगे? ५९
महदी का स्वर्णिम युग.....६०
हजरत महदी वापस क्यों आयेंगे? ६१
अध्याय 8: आकाश में एक दिव्य दर्शन? ६२
विश्वरूप दर्शनम् का स्थगन ६५
शान्ति के पहले का तूफान ६७
आकाश के आरपार एक भ्रमण.....६८
अध्याय 9: श्री सत्य साई स्वर्णिम युग का उदय ७०
स्वर्णिम युग का पुनर्आगमन होगा.....७१
किसी की उम्मीद से भी शीघ्र पहले स्वर्णिम युग आयेगा ७१
स्वर्णिम युग की विशेषताऐं.....७२
श्री सत्य साई अवतार की ब्रम्हाण्डीय स्वीकार्यता ७३
साई संस्थाओं का महत्व.....७४
भारत का गौरव ७५
वर्ष 2012 का महत्व ७५
धर्मग्रंथों के अनुसार स्वर्णिम युग ७७
"मानव के पुत्र" का आगमन ७९
अध्याय 10: स्वामी ने उनकी भौतिक देह क्यों त्यागी? ८४
यह देह भक्तों के लिये आयी है.....८४
प्रार्थना की शक्ति ८९
समाचार जो चारों दिशाओं में फैला ९१

एक तीर से कई शिकार ९२
अध्याय 11: पुनर्जीवित होने की महिमा ९३
देह का प्रश्न ९५
निर्माण काया का सिद्धान्त ९७
अध्याय 12: निष्कर्ष ९९
स्वामी प्रत्येक वचन को पूरा करेंगे १०१
उनके भक्तों के लिये प्रशिक्षण का समय? १०२
प्रार्थना १०६
सन्दर्भ सूची १०८

आमुख

जोडी क्लेअरी और टेड हेनरी

श्रीजित नारायण द्वारा लिखित "साई युग आए" के शोध को नजर–अंदाज किये बिना ही मैं कहूँगी कि इसे जरूर पढ़ना चाहिए।

लेखक की गम्भीर,नपी–तुली, अकाट्य तर्क युक्त और परिपूर्ण प्रस्तुति आलोचना से परे है। किसी का दृष्टिकोण चाहे कुछ भी हो, यदि कोई इस पुस्तक के सार को ध्यानपूर्वक ग्रहण करता है तो वह इस पुस्तक में प्रस्तुत विचार आसानी से नज़र अंदाज नहीं कर पाएगा।

श्री सत्य साई बाबा ने मेरे पति टेड हेनरी और मुझे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा है। उनकी अद्‌भुत लीलाओं, शिक्षाओं, स्वप्नों और दिव्य उपस्थिति की अनुभूतियाँ महासमाधि के बाद भी उतनी ही हैं जितनी पहले थी। अगर कुछ परिवर्तन हुआ है तो वह है– हमारी "साउलजर्न"[1] सेवा और प्रेम में वृध्दि। हम जो कुछ सोच सकते थे उससे ज्यादा उन्होंने हमारे लिये किया, जो मांग सकते थे उससे ज्यादा हमें दिया।

हालाँकि, हम (टेड और मैं) इससे ज्यादा नहीं माँग सकते थे, लेकिन फिर भी उनका क्या होगा जिन्हें अभी तक उनसे आनन्द और लाभ प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। और अब भी... दुनिया की हालत देखकर ऐसा लगता है कि इसकी वर्तमान गड़बड़ियों को दुरुस्त करने के लिये और विश्व को वसुधैव–कुटुम्बकम् में बदलने के लिये कुछ और जोरदार झटके की आवश्यकता है, जिस प्रकार से एक बार हमारे स्वामी ने भविष्यवाणी की थी।

लेकिन फिर भी "साई युग आए" का होना हमारे लिये एक राहत है। यह हमारे बहुत से आंतरिक विचारों, प्रश्नों और अव्यक्त संदेहों का समाधान करता है।

और हमने अपने अनुभवों से सीखा है कि हमें निश्चय ही भगवान बाबा की अनिश्चितता प्रिय है।

और सबसे महत्वपूर्ण, उनके सामर्थ्य से परे कुछ भी नहीं है!

ईश्वर की दया से यदि हम व्यक्तिगत और वैश्विक रुपान्तरण देख सके जो स्वर्ण–सत्य (साई) युग का हिस्सा है, जो अवश्य घटित होगा, जिसका संकेत सावधानी और साहस के साथ श्रीजित नारायण ने "साई युग आए" में किया है, तो हम सभी को अत्यन्त आनन्द प्राप्त होगा।

[अमेरिका की जोडी क्लेअरी और उनके पति टेड हेनरी बहुत लम्बे समय से श्री सत्य साई बाबा के भक्त हैं। 40 वर्षों से भी ज्यादा समय से टेड हेनरी टेलिविजन पत्रकार के रुप में कार्य कर रहे हैं। अमेरिका के ओहायो के क्लीवलैंण्ड में ए.बी.सी. की सहयोगी डब्लू.ई.डब्लू.एस.–टी.वी. से हाल ही में सेवानिवृत्त हुए हैं, जहाँ उनकी अनेक जिम्मेदारियों में से एक जिम्मेदारी साप्ताहिक–आध्यात्मिक समाचार "हृदय और आत्मा" प्रस्तुत करना भी था। टेड और जोडी, पिछले 15 वर्षों से सघन यात्राएँ करके साई–भक्तों और आध्यात्मिक–जिज्ञासुओं के "वीडियो"–साक्षात्कार ले रहे हैं। ये वीडियो उनकी वेब साइट "साउलजर्न्स" पर सभी के लिये उपलब्ध हैं।

[1] साउलजर्न वेब साइट

आमुख

जूली चौधरी

साई युग आए... की पंक्ति के बाद प्रार्थना की यह महत्वपूर्ण पंक्ति–"ऐसा ही होगा" आती है। परम प्रिय भगवान की इच्छा सर्वोपरि है। जब और जैसे वे चाहेंगे उनका युग अवश्य आएगा! हमारी तरफ से, हमें आवश्यकता है धैर्य रखने की और एक ऐसी अद्‌भुत घटना के घटित होने का इंतजार करने की, कि आने वाली पीढ़ियाँ अतिविस्मय से इसका बयान करेंगी।

यह संकलन इतना रोमांचकारी है कि आप सामने आने वाले प्रत्येक पृष्ठ का गहन आनंद लेते हुए पढ़ने को बाध्य हो जाते हैं, और पृष्ठ जैसे बलपूर्वक आपको बाँध लेते हैं। लेखक पूरी ईमानदारी के साथ यह स्वीकार करते है कि यह पुस्तक ऐसी कोई भविष्यवाणी करने का प्रयास नहीं है कि क्या घटित होने वाला है, इसलिये यह विद्वत्तापूर्ण शोध का रूप ले लेती है। वस्तुतः यह पुस्तक भगवान की उद्‌घोषणाओं को भगवान के अवतरण से प्रारम्भ करके कई दशकों तक की घटनाओं से सम्बन्ध को सिलसिलेवार प्रस्तुत करती है। और निश्चित रुप से भगवान के कथन "सत्य–वचन" होने के कारण सांत्वना देते है और उम्मीदें जगाते है। प्राचीन त्रिकालज्ञ ऋषि–मुनियों द्वारा लिखे गये "नाड़ीग्रंथों" में उल्लेखित भविष्यवाणियों वाला अध्याय भी अद्‌भुत रहस्योद्‌घाटन है। हालाँकि, कहने के लिये नया कुछ भी नहीं है, फिर भी, विषय ऐसा है कि भावनाओं का ज्वार अभिव्यक्ति चाहता हैं।

क्या कोई कभी भी 24 अप्रेल 2011 को भूल सकता है? प्रशांति ग्राम के जिस आरोग्य मंदिर, श्री सत्य साई उच्च चिकित्सा संस्थान की स्थापना भगवान ने स्वयं की थी, उसमें उन्होंने स्वयं को करीब एक माह के लिये अवरुद्ध कर लिया। अपने भगवान से, स्वयं भगवान को आरोग्य करने, यजुर मंदिर वापस लौटने और नित्य दर्शन प्रारंभ करने के लिये अवरूद्ध श्वासों से, पीड़ा भरे आँसुओ के साथ, भावपूर्ण निवेदन और हार्दिक प्रार्थनाएँ करते हुए सम्पूर्ण विश्व में भक्त एक जुट होकर भगवान बाबा से अनुनय–विनय करने लगे। लेकिन भगवान की स्वयं की योजनाऐं हैं, और वे उनकी इच्छानुसार ही सामने आऐंगी। ईश्वर की लीला केवल ईश्वर ही समझ सकता है, यह मानवीय बुद्धि के परे होती है। दीन–दुनिया के भले के लिये निःस्वार्थ और निरपेक्ष रूप से वे अपने ऊपर क्या ले लेते हैं, यह हमारी सोच–समझ से बाहर की बात है। उनके भौतिक रूप से जाने से सम्पूर्ण विश्व में उनके भक्तों को सदमा पहुँचा, उनके हृदय टूट गये और मन में खलबली मच गई। यह कैसे सच हो सकता है? निश्चित रूप से यह एक भयंकर दुःस्वप्न है। जीवन से उसकी मधुरता छिन गई, एक झटके में ही लय टूट गई। मन में प्रश्नों का अम्बार लग गया था। चकनाचूर हृदय वेदना में दफन हो गया, शोक की सुनामी में निमग्न हो गया और आत्मा गहन शून्य में छटपटाने लगी।

हम सभी जानते है कि साकार हमेशा निराकार में विलीन हो जाता है। एक बार जन्म लेने के बाद आत्मा को इस भौतिक जगत से जाना भी पड़ता है, लेकिन यहाँ कुछ गड़बड़ी मालूम होती है। एक भावना बलवती होती चली गई कि अभी बहुत कुछ आना है। सत्य साई युग में बहुत होना है। उनका अवतरण इतना शानदार इतना अनोखा था, तो उनको अन्तर्ध्यान भी वैसे ही होना था। क्योंकि वे तो सभी अवतारों के भी स्त्रोत हैं। यह एक अल्प–विराम है, "दैवीय–मध्यांतर"। यह विच्छेद, यह ठहराव हमारे प्रयासों और आध्यात्मिक अभ्यासों को सघन करने के लिये दिया गया समय है। व्यक्तिगत और सामूहिक गहन साधना का हमारा गृह–कार्य पूरा करने के लिये, स्वयं पर कार्य कर उच्चतर स्थिति प्राप्त करने के लिये यह मध्यांतर

दिया गया है। साथ ही यह समय है, समस्त नव निर्माण में उनकी सेवा करने के लिये मंथन करने का, प्रतिज्ञा करने का और हमारी इच्छा शक्ति को सुदृढ़ करने का। और एकमत से, प्रिय भगवान की वापसी का अभिलाषी "भक्त जन समूह" एकत्र करनें का।

कहते हैं कि ईश्वर की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं खड़कता, अतः यह पाण्डुलिपि "साई युग आए", लेखक के हृदय, मस्तिष्क और आत्मा से निकली यह ज्ञान–गंगा, दिव्य योजना से अत्यन्त प्रेरित है। प्रिय भगवान के दिव्य वचनों का विस्तृत अनुसंधान इतनी उल्लेखनीय उपलब्धि है जो केवल भगवान की कृपा से ही प्राप्त हो सकती है। और "साई युग आए" के माध्यम से इस महत्वपूर्ण "भक्त जन समूह" में घोषणा करने के लिये समय का चयन भी अनन्य योजनाकार भगवान ने ही किया है। जो सबको सुनाने के लिये नहीं था, जिस विषय के बारे में पहले कानाफूसी होती थी; आस्थाएँ, परिकल्पनाएँ और स्वप्न, उत्कण्ठा और चाहत, दृढ़ विश्वास और सम्पूर्ण आस्था जग जाहिर हो गये हैं। **और ईश्वर की कृपा से इसका श्रेय "साई युग आए" को जाता है**। श्रीजित ने बहुत ही समर्पित भाव से अत्यंत सावधानी पूर्वक यह शोध किया है। प्रत्येक शब्द, प्रत्येक पंक्ति और समस्त पृष्ठ इतने तरल लगते हैं कि आप मंत्र–मुग्ध रह जाते हैं, **यह सब भगवान के दिव्य वचनों, प्रत्येक वचन में निहित संदेश, प्रत्येक वचन में समाहित सत्य, सत्य के वचन, सत्य के ... साई के सत्य के बारे में है!**

यह पूर्णतः उनके हाथ में है कि इस दिव्य नाटक का पर्दा कैसे उठेगा। फिर भी हमारा इरादा, हमारा विश्वास, हमारा प्रबल मत, हमारी श्रद्धा और हमारी धर्मनिष्ठा हमारी पहुँच में है। हममें से प्रत्येक की अपनी सृष्टि है, और हम उसमें क्या देखना चाहते हैं यह हमारे ऊपर है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमारे स्वामी के लिये असम्भव हो। उनकी इच्छा से सभी कार्य सम्भव है। आखिरकार यह नाटक भी तो उनका ही लिखा हुआ है। और जब तक हम प्रतीक्षारत् हैं, तब तक हम बहस से बचें और शांति से भगवान और उनके वचनों का चिंतन–मनन करें। आइये हम साथ आयें, विशुद्ध प्रयोजन और विशुद्ध प्रेममय सम्पर्क सूत्र बनायें, करुणा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें और उस महान घटना के होने का इंतजार करें, जो स्वर्णिम सतयुग के माध्यम से संसार का भला करेगी। यह पुस्तक असंख्य लेखों में से भगवान बाबा की उद्घोषणाओं को एक ही स्थान पर सरल संदर्भ के लिये अद्भुत रूप से सम्मिलित और एकीकृत करती है।

जब हम सावधानीपूर्वक सम्पूर्ण अध्ययन कर लेंगे, तभी यह समझ में आयेगा कि भगवान बाबा ने तो अनेक बार यह घोषणा की है कि उनके वचन कभी निरर्थक नहीं होंगे। जो योजना उन्होंने बनाई है वह अवश्य ही सफल होगी; उनकी क्रियाशीलता और गतिविधियों को बदला नहीं जा सकता; वे वचन पर अटल हैं; हाँ, परिस्थिति के अनुसार इनमें कुछ परिवर्तन हो सकता है, लेकिन यह स्थायी नहीं होगा, लेकिन उनके उद्देश्य को नहीं बदलेगा; स्वर्णिम युग का आगमन सत्य साई के समय में ही होगा और नये आगमन की घोषणा के साथ होगा; एक जागृति दिवस, ईश्वर की वास्तविक शक्ति का प्रकटीकरण।

आइये, हम अपने प्रिय साई से प्रार्थना और अनुनय–विनय करें कि साई युग शीघ्र आए। हम उनसे नम्रतापूर्वक विनती करें कि हम उनके सुपात्र और सुयोग बन सकें।

बन्धनहीन है वह
बावजूद इसके
बन्धा हुआ अपने वचनों से वह,
बन्धा हुआ अपने भक्तों से
बन्धा हुआ शीघ्र लौटने को वह
इस तरह बन्धनहीन होने
इस दिव्य समाधि के नाटक से।

समस्त लोका सुखिनो भवन्तु।

(सुश्री जूली चौधरी उच्चस्तरीय लेखन में दक्ष लेखिका हैं। प्रिय भगवान श्री सत्य साई बाबा के विषय में उनके अनेक लेख और कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। वे अत्यन्त भाग्यशाली है जो कम उम्र में ही "साई–शरण" में आईं। पिछले 10 वर्षों से वे पुणे के युवा संगठन के "सत्य साई न्यूज लैटर" के लेखक और सम्पादक के रुप में सेवा कर रही हैं। उन्हें, नवम्बर 2010 में भगवान बाबा के दिव्य चरण कमलों में उनकी पुस्तक "मदर साई" (साई माँ) अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।)

आमुख

कैप्टन जतिन्दर शाद

भक्तों के लिये, उनके इष्ट देवता की साक्षात भव्य उपस्थिति से बढ़कर संसार में कोई दूसरी वस्तु नहीं हो सकती है। जिस इष्ट की आपने सम्पूर्ण प्रेम और समर्पण से आराधना की है जब वे भौतिक देह त्याग देते हैं तो हृदय में टीस होती है। लेकिन जब आपको उनके पुनःआगमन के बारे में पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होता है तो आप बिना रुके शुरू से आखिरी तक पढ़ डालते हैं।

"साई युग आए" एक अनूठा शोध है–यह धर्म विशेष तक सीमित नहीं रहकर प्रत्येक उपलब्ध जानकारी का अध्ययन करता है। प्रत्येक धर्म में संकेत उपलब्ध हैं, हालाँकि वे उन्हें साई बाबा नहीं महदी या मसीहा कहकर सम्बोधित करते हैं।

कोई भी व्यक्ति जिसे श्री सत्य साई बाबा के बारे में जानकारी है और जिसके पूजाघर में उनका डाकटिकट जितना भी छोटा चित्र है, वह इस पुस्तक को पढ़ने के लिये सुपात्र है और इसे पढ़कर वही आनन्द प्राप्त करेगा जो आनन्द मुझे प्राप्त हुआ है।

मैं इस पुस्तक के लेखक को उनके शानदार कार्य के लिये बधाई देता हूँ। **मेरे मन में अब कोई सन्देह नहीं है। भगवान बाबा वापस आयेंगे–** केवल प्रार्थना और प्रतीक्षा कीजिये।

हाँ, वास्तव में यह पुस्तक इसी उम्मीद को बल प्रदान करती है। हम अपने प्रिय भगवान की वापसी की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं, क्योंकि मानवता को अभी और मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

और जब हम उनकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो हमसे क्या आशा की जा सकती है? हाँ, हम अभी जैसे हैं उससे भी बेहतर बनने का प्रयास कर सकते हैं।

अपने यत्र–तत्र–सर्वत्र भगवान बाबा की उपस्थिति का सतत अहसास रखें।

प्रसन्न हो जाइये!

साई राम!

(भारतीय सेना में कार्य करते हुए कैप्टन जतिन्दर शाद को भगवान श्री सत्य साई बाबा के बारे में ज्ञान हुआ। 1981 में कैप्टन के पद पर रहते हुए सेना छोड़ने के बाद से ही वे विभिन्न सेवा गतिविधियों में शामिल होते रहें हैं। 1985 में स्वामी ने कृपापूर्वक इन्हें 'इंटरव्यू' प्रदान किया और इनके दल को प्रशान्ति मंदिर में पेन्ट करने का सौभाग्य प्रदान किया। 1990 में स्वामी ने उन्हें बाबा का पहला 'होलोग्राम' बनाने के लिये मार्गदर्शन दिया, जिसके बाद बाबा का पहला नक्काशीदार धातुचित्र आया।)

लेखक परिचय

श्रीजित नारायण 1992 में स्वामी की शरण में आए और तब से वे स्वप्नों और अनुभवों के माध्यम से निरन्तर स्वामी के मार्गदर्शन की अनुभूति कर रहे हैं। व्यवसाय से साफ्टवेअर इंजीनियर और मूलतः केरल (भारत) के निवासी श्रीजित वर्तमान में न्यूजर्सी, अमेरिका में रहते हैं। वे क्षेत्रीय साई संस्थाओं में अत्यन्त सक्रिय हैं और साई सेवा गतिविधियों में नियमित भाग लेते हैं। श्रीजित वर्तमान में ब्रिजवाटर साई–सेंटर में सेवा–संयोजक हैं। 1997 में अमेरिका जाने से पहले तक वे केरल में सक्रिय युवा और सेवादल सदस्य थे।

स्वामी के विषय में पुस्तक लिखने की इच्छा उन्हें हमेशा से ही थी, लेकिन अपनी योग्यता पर उन्हें पूरा विश्वास नहीं था। 1997 में अमेरिका जाने से पहले उन्होंने अपनी इस अभिलाषा को पत्र में स्वामी से व्यक्त किया। स्वामी ने कृपा करके इस पत्र (और प्रार्थना) को स्वीकार किया, हौले से इनके हाथों को थपथपाया और पाद् नमस्कार दिया। उन्होंने अपनी पुस्तक लिखने के लिये अनेक स्त्रोतों से बहुत सारे उद्धरण और सन्दर्भ संकलित किये थे। लेकिन अनेक कारणों से जनवरी 2012 तक पुस्तक लिखने की उनकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी। तभी एक दिन अचानक, उन्हें स्वामी के पुनर्आगमन की सम्भावना पर लिखने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई। स्वामी की कृपा से इसके बाद एक–एक करके कड़ियाँ जुड़ती चली गईं और अब पुस्तक आप के हाथ में हैं। अपनी कोई पुस्तक लिखने के लिये किया गया शोध, इस पुस्तक के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध साबित हुआ। जब स्वामी किसी का पत्र स्वीकार करने की कृपा करते हैं तो वे इसे क्रियान्वित भी करते हैं। ऐसा प्रेम है हमारे प्रिय भगवान का अपने भक्तों के लिये, यह हम सभी को ज्ञात है।

इस पुस्तक के लेखक गर्व से अपनी प्रबल आस्था की तुलना एक निष्ठावान शिष्य से करते हैं। क्योंकि प्राचीन भारतीय संस्कृति में एक शिष्य अपने गुरु के वचनों पर अंतिम अक्षर तक सम्पूर्ण आस्था रखता है। लेखक की इतनी प्रबल आस्था और सम्पूर्ण विश्वास स्वामी के वचनों पर है। और वे निःसन्देह विश्वास करते हैं कि स्वामी के समस्त वचन सत्य होंगे।

आभार

> (...) मुझे धन्यवाद् नहीं दो। मैं कोई अन्य व्यक्ति नहीं हूँ। क्या तुम अपनी माँ को धन्यवाद् देते हो जो प्रतिदिन तुम्हें भोजन परोसती है? तुम किसी बाहरी व्यक्ति को धन्यवाद् दे सकते हो जब वह तुम्हारी मदद करता है, लेकिन मैं बाहरी व्यक्ति नहीं हूँ। इसलिये स्वामी को कभी धन्यवाद् नहीं कहो। स्वामी को अपना ही समझो। तभी तुम्हें स्वामी के नज़दीक होने का अधिकार होगा।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 31, अध्याय 45

मेरे अत्यन्त प्रिय स्वामी मैं आपको धन्यवाद नहीं दे रहा हूँ क्योंकि मैं आपका अपना हूँ और यह कार्य भी आपने ही किया है। इस पुस्तक के लिये बहुत से लोगों ने सहयोग दिया है, मैं उन्हें भी धन्यवाद नहीं दे रहा हूँ क्योंकि वे भी मेरे अपने हैं। यह ज्ञात होने पर भी, कि केवल आप ही कर्ता हैं कुछ पल ऐसे हो सकते हैं, जहाँ अनजाने ही, अहंकारवश त्रुटियाँ हुई हों। यदि ऐसा हुआ हो तो मैं आपसे क्षमा प्रार्थना करता हूँ और पाठकों से विनती करता हूँ कि वे मेरे दोषों को अनदेखा कर दें।

एक लोक कथा है कि संत ज्ञानेश्वर[1] के स्पर्शमात्र से ही एक भैंस वेदपाठ करने लगी थी। ज्ञानेश्वर नाम का अर्थ है, "ज्ञान के ईश्वर", अर्थात स्वामी स्वयं। मैं वेदपाठ करने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि उनकी दिव्य कृपा के बिना उनके बारे में एक शब्द भी लिखना असम्भव है। मैं, अत्यंत श्रद्धा के साथ सर्वज्ञान प्रदायक अपने प्रिय भगवान श्री सत्य साई बाबा के चरण कमलों में साष्टांग प्रणाम करता हूँ और हृदय से प्रार्थना करता हूँ कि इस "दुन्नापोतु"[2] को स्पर्श करेंगे।

[1] श्री ज्ञानेश्वर (1275-1296) 13 वीं सदी के संत, मराठी कवि और दार्शनिक थे। भगवद् गीता पर उनकी टीका ज्ञानेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध है। ज्ञानेश्वरी और उनकी एक अन्य रचना "अमृतानुभव " मराठी साहित्य की प्रमुख रचनाओं में से हैं।

[2] जैसे स्वामी अपने भक्तों को प्यार से कभी–कभी चिढ़ाते हैं। भैंसे के लिये तेलुगु शब्द।

भूमिका

ॐ श्री साई राम

प्रिय पाठक, प्रेम भरा साई राम,

कृपया ध्यान दें, मुख्यतः यह पुस्तक भगवान श्री सत्य साई बाबा के भक्तों लिये है। यह इस पूर्वानुमान के साथ लिखी गई है कि श्री सत्य साई अवतार के बारे में पाठक को पहले से ही जानकारी होगी। इस पुस्तक में व्यक्त विचार, लेखक के पूर्णतः निजी विचार हैं और यह आवश्यक नहीं है कि किसी संस्था या समूह की इन विचारों से सहमति हो।

क्या स्वामी वापस आयेंगे?

हाँ, इस सन्दर्भ में मुझे लेशमात्र भी सन्देह नहीं है!

हम सभी साई भक्त विश्वास करते हैं कि भविष्य में स्वामी का अवतार प्रेम साई बाबा के रूप में होगा। लेकिन मैं जिस "वापसी" की बात कर रहा हूँ, वह भगवान श्री सत्य साई बाबा के उसी श्री सत्य साई अवतार वाले भौतिक रूप में उनका पुनःआगमन है।

मैं ऐसा क्यों सोच रहा हूँ?

स्वामी के शब्द कभी व्यर्थ नहीं होंगे। उन्होंने जो कुछ भी कहा है वह होकर ही रहेगा। एक बार यह निश्चित हो जाने के बाद बाकी सब कुछ महत्वहीन हो जाता है। आगे आने वाले अध्यायों में आप स्वामी के दिव्य वचनों को पढ़ेंगे, जो यह स्पष्ट संकेत देते हैं कि अभी उनके अंतिम बार विलीन होने का समय नहीं था। आप यह भी देखेंगे कि स्वामी की योजनाओं में कोई परिवर्तन क्यों नहीं हो सकता है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे लिये इसका केवल एक ही अर्थ है कि वे अवश्य वापस आयेंगे!!! स्वामी ने भी अपनी अवश्यंभावी वापसी पर कुछ अतिविस्मयकारी संकेत दिये हैं। और कुछ विशिष्ट धार्मिक ग्रंथों में भी स्वामी के सम्बन्ध में कुछ अकल्पनीय भविष्यवाणियाँ हैं जो उनके पुनःआगमन का पूर्व कथन करती है। कृपया आगे पढ़ें...

इस पुस्तक के बारे में

रविवार, 24 अप्रेल 2011 को सुबह करीब 2 बजे[1] आए एक फोन 'कॉल' ने मुझे गहरी नींद से जगा दिया। एक साई भक्त भाई ने दिल दहला देने वाला समाचार सुनाने के लिये 'कॉल' किया था। मेरी आत्मा वेदना से भर गई और दिल की धड़कनें बेकाबू हो गई। अचानक मुझे लगा कि कोई मेरा दायाँ कंधा

[1] यू.एस. ईस्टर्न टाइम

थपथपाकर मुझे सांत्वना दे रहा है। यह सोचकर कि मेरी पत्नि होगी प्रतिक्रिया स्वरूप मैं पीछे घूमा, लेकिन देखा कि वे काफी दूर बैठीं थीं। मैं तुरन्त समझ गया कि ये बाबा ही थे और एक अप्रत्याशित शांति के अनुभव ने मुझे आवृत्त कर दिया।

मैं सुनिश्चित हूँ, कि जब हम पीछे मुड़कर उस दारुण क्षण को याद करते हैं तो पाते हैं, कि उस परिस्थिति से बाहर निकलने में हम में से प्रत्येक को उनकी सहायता का अनुभव हुआ था। यह अनुभव किसी भी प्रकार का हो सकता है, एक स्पर्श या स्वप्न या दिव्य बोध या परिवार के सदस्य या किसी अन्य साई भक्त का सहानुभूतिपूर्ण वचन। अत्यन्त श्रद्धा और विस्मय के साथ मैं विचार करता हूँ कि उनके असीमित प्रेम और कृपा ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक भक्त इस सदमे को सहन कर सके।

स्वामी के भौतिक रूप से जाने के बाद, उन कुछ दिनों तक कई विचार मेरे दिमाग में आये ओर गये। मैं यह स्वीकार नहीं कर सका था कि स्वामी इस तरह जा सकते थे। वह भी घोषित समय के पहले। हर एक भक्त जिससे मैंने बात की, वह किसी चमत्कार की आशा में था और एक सर्वमान्य विचार था कि स्वामी स्वयं को पुनर्जीवित कर लेंगे। जल्दी ही वह आशा भी धूमिल हो गई जब स्वामी की भौतिक देह को महासमाधि दे दी गई। इस बीच में कुछ टेलिविज़न समाचार चैनल्स में एक कहानी चलने लगी, कि स्वामी ने अपने कुछ विद्यार्थियों से कहा था कि वे 40 दिन के लिये थोड़ा अस्वस्थ रहेंगे और फिर वापस आ जायेंगे। ऐसा भी कहा गया कि 'तपोवनम' नामक पुस्तक में इसका उल्लेख है। मैंने तुरन्त ही 'तपोवनम' की एक प्रति अर्जित की और उसके एक–एक शब्द को छान लिया। लेकिन उसमें मुझे इस तरह का कोई भी उल्लेख नहीं मिला। जल्दी ही भक्त भी हर तरह की नई–नई व्याख्यायें ले कर आने लगे कि अपनी भविष्यवाणी के अनुरूप स्वामी 96 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके थे। मैंने स्पष्टीकरण देखे, जिनमें कहा गया था कि स्वामी चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात कर रहे थे, ना कि नियमित (ईस्वी) कैलेण्डर वर्षों में। "किसी हद तक" यह हर एक व्यक्ति को संतुष्ट कर देने वाला सिद्धांत था। आखिरकार, स्वामी कभी गलत नहीं हो सकते थे। लेकिन जब मैंने सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया, तो मैंने देखा कि यह कभी नहीं हो सकता था कि स्वामी चन्द्र वर्षों के सम्बन्ध में बात कर रहे हों। मुझे स्वामी के स्वयं के वचन मिले, जिनसे मैं आश्वस्त हो गया कि वे ऐसा नहीं करते थे। लेकिन, रहस्य अब भी बरकरार था।

अब जब मैं पिछली बातें याद करता हूँ और उन कुछ दिनों पर चिन्तन करता हूँ, मैं समझ गया हूँ कि मेरे विचारों पर तर्क शक्ति की अपेक्षा भावनायें बलवती थीं। तर्क शक्ति भी कुछ मदद नहीं कर सकती थी क्योंकि स्वामी उसकी भी पहुँच के बाहर हैं। स्वामी जो भी करते हैं वह हमारी समझ के बाहर है। इसलिये प्रश्न क्यों पूछना? मैं समझ गया कि कुल मिलाकर मुझे "स्वाभाविक" बने रहना चाहिये था। देह में भी और देह से परे भी स्वामी हमारे साथ हैं। देह के विलीनीकरण ने एक तरह से साकार से निराकार की तरफ जाने और प्रत्येक जीव में स्वामी के दर्शन करने जैसे आरम्भिक कदम उठाने में मेरी मदद की। हो सकता है कि स्वामी के इस पूरे प्रहसन का उद्देश्य उनके भक्तों को देह के मोह से ऊपर उठाना हो। प्रशान्ति निलयम में उनकी देह किसी अज्ञात माया स्थान से छाया की तरह थी, ताकि मनुष्यों के साथ ईश्वर के विचारों का आदान–प्रदान हो सके। उनका अन्तर्ध्यान होना भी उतना ही अबूझ हो सकता है जितना वे स्वयं थे।

> मानवता की रक्षा करने और उससे सम्पर्क का उद्देश्य पूरा करने के लिये महाशक्ति को माया शक्ति का आवरण ओढ़ना पड़ता है।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 1 अध्याय 30

तुम्हारे बीच में आने के लिये मुझे मायाशक्ति का आवरण धारण करना पड़ता है। उस सिपाही की तरह, जो चोरों को रंगे हाथों गिरफ्तार करने और उन्हें सजा दिलाने के लिये चोरों का ही वेश धारण करता है ताकि वह उनके गिरोह में शामिल हो सके। ईश्वर अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ अवतरित नहीं हो सकता, उसे अल्प वैभव और सीमित तेज के साथ आना पड़ता है ताकि वह भक्ति और समर्पण का लक्ष्य बन सके।

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग १ अध्याय ३

यह पुस्तक स्वामी और उनके उन गूढ़ तरीकों को समझने के प्रयास के बारे में नहीं है। ऋषियों–मुनियों ने भी उनकी महिमा को समझने का प्रयास किया और विफल रहे, तो मैं प्रयास करने वाला कौन हूँ? यदि मै केवल उनकी शिक्षाओं का पालन करूँ और स्वयं को बचा लूँ, तो सुलझाने के लिये उनके लिये एक समस्या कम हो जायेगी। जितना भी सम्भव हो सकता था उतनी ही सरल भाषा में स्वामी ने शिक्षाओं का खजाना छोड़ा है, ताकि एकदम साधारण मनुष्य भी अपने अस्तित्व के चरम बिन्दु अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सके। जब वे वापस आयेंगे तो शिक्षा देने के लिये अब बचा ही क्या है?

फिर भी, यह मुझे ऐसा विश्वास करने से नहीं रोक सकता कि यह उनके भौतिक रूप से इस संसार से जाने का समय नहीं था। स्वामी के अनेक दिव्य प्रवचनों में मैंने उनके वक्तव्य पढ़े हैं जो मेरे इस विश्वास की पुष्टि करते हैं। श्री सत्य साई इंस्टीट्यूट के पूर्व छात्रों सहित अनेक साई भक्तों से मैं मिला हूँ , और उन्होंने भी यही विश्वास व्यक्त किया है।

जनवरी २०१२ के अंत तक इस प्रकार की कोई भी पुस्तक लिखने की मेरी कोई योजना नहीं थी। तभी अचानक एक दिन स्वामी के पुनःआगमन की सम्भावना पर लिखने की मुझे तीव्र इच्छा हुई। मैंने इसके बारे में अपने एक साई भक्त मित्र से चर्चा की और उन्होंने भी लिखने के लिये मुझे प्रोत्साहित किया। उन्होंने मुझे एक बहुत सुन्दर स्वप्न के बारे में भी बताया जो उन्हें स्वामी के पुनःआगमन के बारे में आया था। मुझे कुछ और भक्तों के बारे में मालूम पड़ा जिन्हें भी स्वामी की वापसी के बारे में इसी तरह का स्वप्न आया था। जैसे–जैसे मैं और खोज करता गया अचम्भित कर देने वाले नये सुराग निकल कर आने लगे। मुझे स्वामी की मदद का अनुभव होने लगा। इस पुस्तक के लेखन के लिये जिस तरह से मेरे पास सामग्री इकट्ठा होने लगी उसे किसी चमत्कार से कम नहीं आँका जा सकता है। जो एक लेख से शुरू हुआ था वह इतना विस्तृत हो गया कि मुझे इसे पुस्तक कहना पड़ा!

यह इस बात की भविष्यवाणी करने का प्रयास नहीं है कि क्या होने वाला है। इस तरह से यह शैक्षणिक शोध का रूप ले लेती है, जिसका अन्तर्निहित सिद्धांत है, "उन्होंने कहा था, अतः यह अवश्य घटित होना चाहिये"। **इसे एक ऐसे विनम्र प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिये जिसमें जानकारियों का तिनका–तिनका जुड़कर एक स्पष्ट आकार बन जाता है** और जिसे जिज्ञासु साधकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। स्वामी की महिमा हम कभी नहीं समझ सकते। सर्वश्रेष्ठ जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम उनकी महिमा में पूरी तरह लीन हो जायें। यह निश्चित है कि जो उन्होंने कहा है वह अवश्य फलित होगा। इस विषय में कोई सन्देह नहीं है लेकिन कैसे होगा यह सिर्फ स्वामी ही जानते हैं क्योंकि सम्भावनाऐं अनेक हैं। अब से कुछ साल बाद जब हम बीते हुए समय को देखेंगे तो आश्चर्य मिश्रित गर्व करेंगे कि सब कुछ वैसा ही हुआ है जैसा उन्होंने कहा था। लेकिन मैं अपनी सीमित मानवीय क्षमता के कारण उनमें से कुछ सम्भावनाओं पर ही विचार कर रहा हूँ। यद्यपि जानकारियों का मुख्य स्त्रोत स्वामी के दिव्य प्रवचन हैं, लेकिन अन्य जानकारियों के लिये मैंने जिन पर विचार किया है उनमें शामिल हैं; कुछ प्रतिष्ठित भक्तों के अनुभव, नाड़ी शास्त्र जिनके ऊपर मुझे अपने निजी अनुभवों के कारण बहुत विश्वास है और वे भविष्यवाणियाँ जो कुछ धार्मिक ग्रंथों के भाग हैं,

इन सबसे अधिक मेरे गुरू और भगवान श्री सत्य साई बाबा के वचनों में मेरा विश्वास जिसने इस पुस्तक तक पहुँचाया है।

> साधारण तौर पर केवल गम्भीर और सतर्क अवलोकन करते हुए, धैर्यपूर्ण मनोयोग के साथ, प्रत्येक शब्द और हावभाव का अर्थ समझते हुए ही मेरा उद्देश्य समझ सकते हो।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 29 अध्याय 29

मैंने ठीक यही करने का प्रयास किया है। मैने दृढ़ निश्चय के साथ उनके प्रवचनों में सूत्रों को खोजा है और धैर्यपूर्ण मनोयोग के साथ उनके शब्दों का अर्थ समझने का प्रयास किया है। मैं पाठकों को आश्वासन देना चाहता हूँ, कि यह किसी उस दुखी आत्मा का निरर्थक प्रयास नहीं है, जो अपने गुरू के प्रस्थान से उबरने का प्रयास कर रहा है। बल्कि मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इसे एक निष्ठावान अनुयायी की प्रबल आस्था के रूप में देखें जो अपनी आँखो–देखी से ज्यादा अपने गुरू के शब्दों पर विश्वास करता है।

मूकं करोति वाचालं
पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे
परमानन्द माधवम्।।

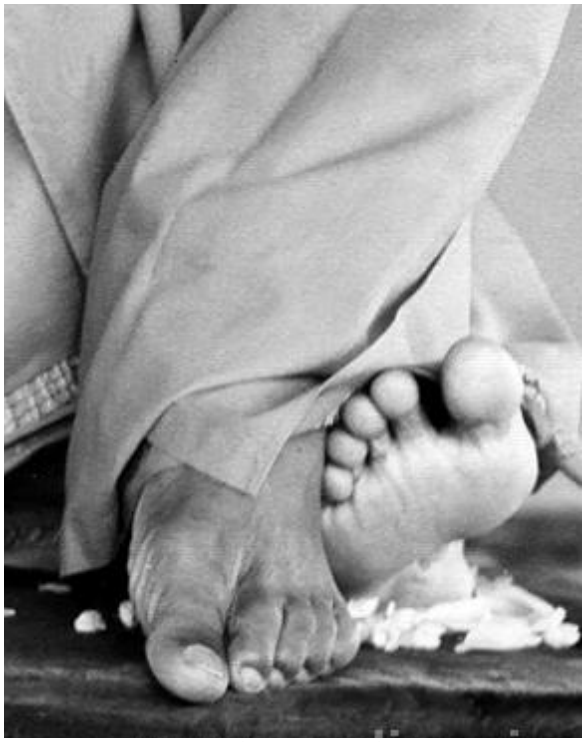

उत्पन्नेन मम् प्रयासेन
अर्पितं त्वं चरण कमलेन।।

अनुवादक की कलम से

भगवान श्री सत्य साई बाबा के श्री चरणों में सादर प्रणाम।

मेरा असीम सौभाग्य है कि मेरे माता–पिता के आशीर्वाद से भगवान बाबा ने मुझ पर असीम कृपा कर के इस महान पुस्तक "साई दाइ किंगडम कम" के हिन्दी अनुवाद की सेवा सौंपी।

यह पुस्तक हाथ में आते ही जीवन में उत्साह और उर्जा का पुनः संचार हो गया।

जब पुस्तक का अनुवाद प्रारम्भ किया तो स्वामी ने अपने चित्र से अमृत–सृजन करके, अपनी सार्वलौकिक उपस्थिति दर्शाकर अपना आशीर्वाद प्रदान किया और समस्त शंकाओं को विराम प्रदान कर दिया।

करीब 10-12 साल पहले की बात है जब सम्पूर्ण विश्व में, विशेष करके पश्चिम एशिया में अशांति अपने चरम पर थी। भगवान बाबा ने मुझे एक स्वप्न दिया। स्वप्न में स्वामी युवा दिखाई दे रहे थे। स्वामी झूले पर बैठे हुए हैं और मैं उनके चरणों के समीप बैठा हुआ हूँ। स्वामी ने मुझे कहा, "और मैंने शाम[1] कर दी!" स्वामी के इतना कहते ही मेरी आँखों के सामने से क्षण भर में जैसे एक "फिल्म" सी घूम गई। मुझे आधुनिक हथियारों से लैस कुछ लोग दिखाई दिये, जो शायद शस्त्रों के जरिये धर्म राज्य लाना चाहते थे। स्वामी के "और मैंने शाम कर दी" कहते ही तुरन्त शाम हो गई। चारों तरफ शाम का स्वर्णिम प्रकाश फैल गया और उन सशस्त्र लोगों ने तुरन्त अपने हथियार रख कर पश्चिम मुखी सूर्य की तरफ मुँह करके इबादत शुरु कर दी! उस समय मुझे इस स्वप्न का अर्थ केवल पश्चिमी एशिया की शान्ति से लगा था। बाद मैं इस स्वप्न को भूल गया। लेकिन इस पुस्तक का अनुवाद करते समय अचानक मुझे यह स्वप्न पुनः याद आया और मुझे इस स्वप्न का सही अर्थ भी समझ में आया।

एक छोटी सी पंक्ति में स्वामी सब कुछ कह चुके थे। यहाँ "शाम" (संध्या का समय) का समय कुछ महत्वपूर्ण बातों का प्रतीक है।

पहला, शाम का समय प्रार्थना का होता है, जो मात्र वैश्विक शांति ही नहीं अपितु भटके हुए लोगों को धर्म की ओर मोड़ने से भी है। दूसरा, सूर्योदय के समय भी सूर्य की आभा स्वर्णिम होती है और यह समय भी प्रार्थना का होता है, लेकिन यहाँ शाम का सूर्य पश्चिम दिशा का संकेत भी करता है। पश्चिम दिशा, पश्चिम एशिया की ओर संकेत करती है जो वर्तमान अशांति का केन्द्र होने के साथ ही विश्व के कुछ प्रमुख धर्मों का उद्गम् स्थल भी है। तीसरा और अत्यन्त महत्वपूर्ण, शाम के समय सूर्य की आभा स्वर्णिम होती है, जो "स्वर्णिम सत्य (साई) युग" का संकेत करती है। शायद यह स्वप्न "स्वर्णिम सत्य (साई) युग" का संकेत ही था जो भगवान बाबा ने अपनी भौतिक उपस्थिति में ही दे दिया था। इस स्वप्न से स्वामी की कुछ विशिष्टताऐं भी समझ में आती हैं जो यह बताती हैं कि ईश्वर और मानव में क्या अंतर है। जो बात भगवान बाबा ने एक छोटी सी पंक्ति में कह दी थी, मुझे उसे समझने–समझाने में पूरा एक पृष्ठ और 10-12 साल लग गये। यह ईश्वर और मानव का अंतर है।

अभी हाल ही में नये पोप का चुनाव भी हुआ। इस दौरान पोप से सम्बन्धित दो और रोचक भविष्यवाणियों से सामना हुआ। पहली भविष्यवाणी सेंट मैलिकी की है। सेंट मैलिकी 12वीं सदी में आयरलैंड में आर्कबिशप थे। वे एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता भी थे। उनकी मृत्यु के 100 साल बाद प्रकाशित एक भविष्यवाणी के अनुसार रोमन कैथोलिक चर्च के सिर्फ 112 पोप होंगे। अभी पद छोड़ने वाले पोप बेनडिक्ट–१६वें

[1] सूर्यास्त या संध्या का समय

कैथोलिक चर्च के 111वें पोप थे। इस आधार पर नये पोप के चुनाव को आखिरी पोप का चुनाव भी कहा जा रहा है।

एक अन्य भविष्यवाणी प्रसिद्ध भविष्यवेत्ता नास्त्रेदमस की है। नास्त्रेदमस ने भविष्यवाणी की थी कि, "जब दिसम्बर में दिन में भी एक पुच्छल तारा दिखाई दे रहा होगा तो आखिरी से पहला रोमन कैथोलिक पोप रोम छोड़ देगा।" तब और आज के कैलेण्डर के अनुसार यह समय फरवरी 2013 का निकलता है। इस फरवरी 2013 के दौरान आईएसओएन पुच्छल तारा दो माह तक पूरे यूरोप में दिखाई दिया था और उसी समय पोप बेनडिक्ट–16वें ने अपना पद छोड़ने की घोषणा की थी। इस आधार पर भी यह आखिरी पोप का चुनाव माना जा रहा है।[1]

तो क्या इस घटना का भी कुछ सम्बन्ध स्वर्णिम युग के आगमन से है?

मैं यह सहर्ष स्वीकार करता हूँ कि इस पुस्तक के अनुवाद में मेरी भूमिका स्वामी के हाथ में एक औजार की तरह रही। क्योंकि अनुवाद करते समय भगवान बाबा ने मुझे अनेक बार बहुत ही स्पष्ट तौर पर यह अनुभव कराया कि अनुवाद के लिये उचित शब्द वे स्वयं ही प्रदान कर रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है, कि जिस तरह इस पुस्तक ने मेरे जीवन में उत्साह और उर्जा का नवीन संचार किया है, उसी तरह यह पुस्तक, "सत्य (साई) युग आयेगा" प्रत्येक पाठक–प्रत्येक भक्त के जीवन में भी उर्जा, आशा और उत्साह का संचार करेगी।

आभार प्रकट करने से हृदय में प्रेम बढ़ता है और व्यक्तित्व में नम्रता आती है। अतः मैं इस पुस्तक के लेखक श्रीयुत् श्रीजित नारायण का हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे सम्पूर्ण विश्वास के साथ अपनी पुस्तक के हिन्दी अनुवाद का सेवा कार्य सौंपा। निश्चित तौर पर इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में भगवान बाबा का अदृश्य हाथ ही कार्य करता रहा।

मैं श्री आर. सी. अवस्थी जी का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने प्रारम्भ में ही अपना मार्ग दर्शन दे कर मेरा उत्साहवर्धन किया।

इस अनुवादित पुस्तक के डीटीपी कार्य में (साई) राम की नन्हीं गिलहरी, साई देवांश ने भी अपनी सहर्ष सेवा प्रदान की। स्वामी उन्हें अपना दिव्य प्रेम प्रदान करें।

सादर साई राम।
संजय ढगट[2]

---

[1] सन्दर्भ स्त्रोतः 'पत्रिका' समाचार पत्र, भोपाल संस्करण, 13 मार्च 2013, पृष्ठ 12 से साभार

[2] भगवान श्री सत्य साई बाबा की कृपा से अनुवादक द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक "श्री ईश्वर उवाच" का प्रकाशन श्री सत्य साई बुक्स एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट की अनुमति से किया गया। यह पुस्तक बुक्स एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट काउंटर प्रशांति निलयम में उपलब्ध है। भगवान बाबा की कृपा से इसका हिन्दी संस्करण भी शीघ्र उपलब्ध होगा।

भाग 1

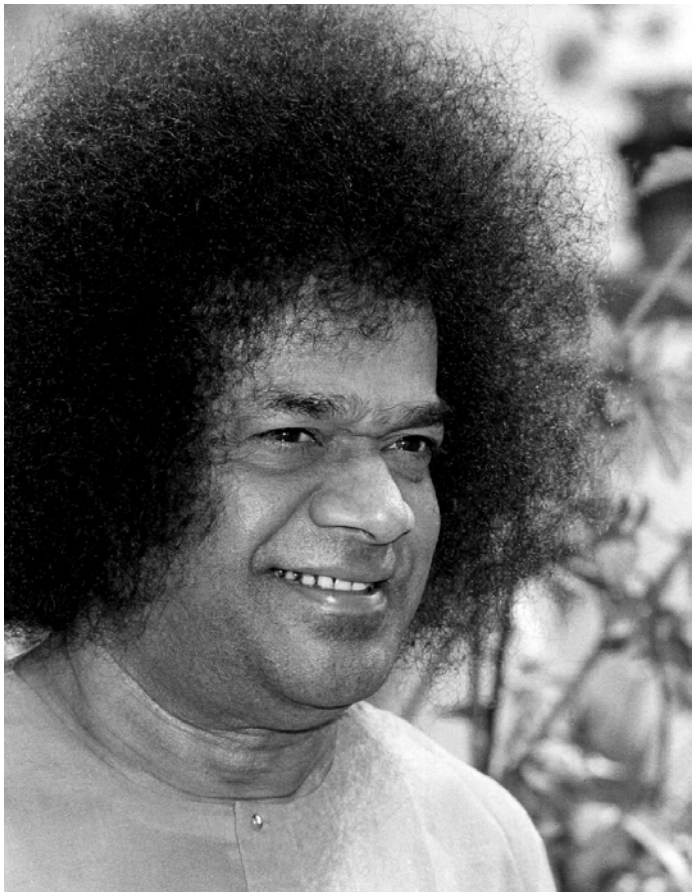

"मेरे शब्द
कभी व्यर्थ नहीं होंगे"

अध्याय 1: क्या स्वामी चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात कर रहे थे?

जब स्वामी ने अपना भौतिक शरीर त्यागा, तो सम्पूर्ण साई परिवार घोषित समय से पहले उनके जाने का स्पष्टीकरण ढूँढने लगा। स्वामी कभी भी गलत नहीं हो सकते थे। उन्होंने जो कहा था वह अवश्य घटित होगा। लेकिन जब स्वामी अपनी 96 वर्ष की घोषित उम्र से बहुत पहले ही 85 वर्ष (ठीक 84 वर्ष और 5 माह) की उम्र में ही चले गये, तब यह मान लेना स्वाभाविक ही है कि वे किसी अन्य कैलेण्डर पद्धति जैसे चन्द्र कैलेण्डर (चन्द्र वर्ष) के सन्दर्भ में बात कर रहे होंगे। जब मैंने पहली बार इसके बारे में सुना तो मैंने भी इस सम्भावना को स्वीकार कर लिया था। लेकिन जब मैंने स्वामी की उम्र के बारे में उन्हीं के वक्तव्यों सहित अन्य जानकारियों पर ध्यान दिया, तो यह पूर्ण रूप से विश्वास करने के लिये अत्यन्त स्पष्ट हो गया कि स्वामी चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात नहीं कर रहे थे। यदि स्वामी चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात नहीं कर रहे थे तो यह सच है कि वे घोषित समय के पहले ही चले गये। यदि ऐसा है तो यह निश्चित है कि स्वामी की भविष्यवाणी अन्ततः सत्य होकर ही रहेगी। यह सम्भव है कि वे उसी दिव्य सत्य साई स्वरूप में वापस लौटें। वास्तव में यही वह विचार रहा जो मेरे शोध को आरम्भ करने का कारण बना और जिसकी परिणति इस पुस्तक के रूप में हुई।

चन्द्र वर्ष का सिद्धान्त

बहुत से साई भक्त यह विश्वास करते हैं कि स्वामी ने उनकी उम्र के बारे में हिन्दू (या भारतीय) चन्द्र वर्ष के सन्दर्भ में कहा था। इन्टरनेट पर मुझे निम्नलिखित व्याख्यायें देखने मिलीं:

जब स्वामी ने भौतिक शरीर त्यागा तब उनकी उम्र के बारे में यहाँ एक विचार प्रस्तुत है।

9 सितम्बर 1960 को उनके दिव्य प्रवचन[1] में स्वामी ने कहा,

> **"मैं इस नश्वर मानव देह में और 59 वर्ष तक रहूँगा और इस अवतार का उद्देश्य अवश्य पूरा करूँगा, इसमें सन्देह मत करो। मैं अपनी योजना पूरी करने के लिये अपने अनुसार समय लूँगा। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मैं इसलिये जल्दी नहीं कर सकता क्योंकि तुम्हें जल्दी हो रही है। मैं कुछ समय इंतज़ार कर सकता हूँ ,** जिस तरह किसी इंजन को केवल एक डिब्बा खींचने के लिये उपयोग में नहीं लाया जाता, बल्कि तब तक इंतजार किया जाता है जब तक कि उस इंजन की क्षमता के अनुरूप ढुलाई इकट्ठा नहीं हो जाती। उसी प्रकार, कई बार, मैं भी एक बार में ही दस कार्य करने के लिये इंतजार करता हूँ। लेकिन **मेरे वचन कभी व्यर्थ नहीं होंगे, जैसा मैं चाहूँगा वैसा ही होगा।"**

इसका अर्थ यह हुआ कि, क्योंकि स्वामी का जन्म २३ नवम्बर 1926 को हुआ था इसलिये वे अपना भौतिक शरीर 93 या 94 वर्ष की उम्र तक छोड़ेंगे। लेकिन उन्होंने 84 वर्ष की उम्र में 24 अप्रेल 2011 (ईस्टर पर्व) को सुबह 7:40 बजे अपनी भौतिक देह त्याग दी। इस असंगतता की क्या व्याख्या है? हो सकता है स्वामी सौर वर्ष के सन्दर्भ में नहीं चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात कर रहे हों। इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर एक त्वरित गणना यहाँ प्रस्तुत है। भौतिक देह में स्वामी 30833 दिन रहे। **एक चन्द्र माह में औसत**

[1] श्री सत्य साई वचनामृत भाग 1 अध्याय 31

27.21 दिन और एक चन्द्र वर्ष में 12 माह होते है। इस तरह स्वामी भौतिक देह में करीब 1133 चन्द्र माह या 94.4 चन्द्र वर्ष रहे। तो इस अर्थ में जब स्वामी ने अपनी भौतिक देह छोड़ी तब वे 94 वर्ष के थे।

अब उपरोक्त व्याख्या को कसौटी पर कसने का प्रयास करते हैं। हालाँकि हिन्दू पंचांग माह में 27.21 दिन (आगे वर्णित) से ज्यादा दिन होते हैं, लेकिन तार्किक दृष्टिकोण से हमारी गणना के लिये इसी अंक का उपयोग करते हैं। भौतिक देह त्यागने के समय स्वामी की उम्र के बारे में उपरोक्त व्याख्या उचित होगी, यदि उपरोक्त प्रवचन में स्वामी ने यह उल्लेख किया हो कि वे 94 वर्ष की उम्र तक रहेंगे। यदि वास्तव में ऐसा है, तो यह तर्क दिया जा सकता है कि 94 चन्द्र वर्ष उन 84 सामान्य ईस्वी वर्षों[1] के बराबर हैं जितने समय स्वामी वास्तव में अपनी भौतिक देह में रहे। लेकिन स्वामी ने वास्तव में क्या कहा था, *"मैं इस नश्वर मानव देह में 59 वर्ष और रहूँगा।"* अतः चन्द्र वर्ष वाली उपरोक्त गणना को केवल उन 59 वर्षों के लिये लागू किया जाना चाहिये, ना कि सम्पूर्ण 94 वर्षों के लिये जैसी कि पहले व्याख्या की है। स्वामी ने यह वक्तव्य १९ दिसम्बर 1960 को दिया था। उन्होंने भौतिक देह 24 अप्रेल 2011 को त्यागी थी। इन दो तिथियों के बीच में वे उनकी देह में 18489 दिन रहे। क्या यह 59 चन्द्र वर्षों के बराबर है? आइये परीक्षण करते हैं।

(अ). चन्द्र वर्ष में दिनों की संख्या = 27.21 दिन x 12 माह = 326.52 दिन
अतः, 18489 दिन बराबर हैं:
18489 / 326.52 = 56.63 चन्द्र वर्षों के (लगभग 57 वर्ष)

जैसा ऊपर दर्शाया गया है, यह अवधि केवल 57 वर्ष के बराबर है। तो हम क्या मान लें? स्वामी अपनी भविष्यवाणी से 2 वर्ष कम रहे?

लेकिन अभी हमारी बात खत्म नहीं हुई है। करीब एक साल बाद स्वामी ने इसी तरह का वचन दोहरायाः

> तुम पुट्टपर्ति को मथुरा[2] नगरी बनते देखोगे। इस विकास को ना तो कोई रोक सकता है, ना ही धीमा कर सकता है। मैं तुम्हारा त्याग नहीं करूंगा, ना ही तुम मुझे छोड़ सकते हो। अगर तुम भ्रमित हो भी गये तो तुम पछताओगे और वापसी के लिये पुकारते हुए शीघ्र ही मेरी शरण में आओगे। **मै इस देह में 58 वर्ष और रहूँगा; मैं इस बारे में तुम्हें पहले ही आश्वस्त कर चुका हूँ।** पृथ्वी पर मेरे अवतरण से तुम्हारे जीवन का गहन सम्बन्ध है। हमेशा इस महान सौभाग्य के अनुरूप कार्य करो।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 2, प्रशांति निलयम, 21 अक्टूबर 1961

जैसा कि हमने उपरोक्त उद्धरण में देखा, स्वामी ने 21 अक्टूबर 1961 को घोषणा की थी कि वे उनकी भौतिक देह में 58 वर्ष और रहेंगे।

[1] आमतौर पर उपयोग किये जाने वाले ईस्वी या ग्रेगोरियन कैलेण्डर वर्ष
[2] श्री कृष्ण जन्म स्थान

(ब). उपरोक्त वक्तव्य देने के बाद स्वामी 18082 दिन अपनी भौतिक देह में रहे थे। जैसा हमने पहले किया था यदि वैसी ही चन्द्र वर्ष गणना हम उपयोग करें तो यह करीब 55.4 चन्द्र वर्ष के बराबर ही होगी। अब हमें लगभग 3 वर्ष कम पड़ रहे हैं!

इसके अलावा हिन्दू कैलेण्डर माह के 27.21 दिन से ज्यादा दिन का होने का एक बड़ा मुद्दा और है। हिन्दू पंचांग के एक माह में 29 दिन, 12 घंटे और 44 मिनिट होते हैं। यदि हम उपरोक्त गणना में इस अंक का उपयोग करेंगे तो बहुत अधिक अंतर आयेगा। उदाहरण के लिये 18489 दिन (ऊपर देखें) 52.2 हिन्दू पंचांग वर्ष के बराबर होंगे, अर्थात् लगभग 7 वर्ष का अंतर (स्वामी के वचन में उल्लेखित 59 वर्ष से)।

चन्द्र वर्ष में 27.21 दिन की धारणा मल मास (अधिक मास) की परम्परा से आती है, यह वह समय है जब चन्द्रमा अपने परिक्रमा पथ के उसी बिन्दु (नोड्स[1]) पर वापस लौटता है। यह अवधि औसतन करीब 27.21 दिन की है। यह दिन हिन्दू पंचांग माह के 27 नक्षत्रों के समकक्ष है, लेकिन एक महिने के कुल दिनों के बराबर नहीं।[2] इसके बावजूद भी यदि हम इस अंक का उपयोग अपनी गणना के लिये करते हैं, तब भी यह ऊपर की गई गणनाओं "अ" और "ब" में दिये गये कारणों से सही नहीं लगता, जो क्रमशः 2 और 3 साल का अंतर दिखाती है।

अतः यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी चन्द्र वर्ष के सन्दर्भ में बात नहीं कर रहे थे।

शतायु भक्तों के प्रकरण

स्वामी चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात कर रहे थे, यह विश्वास करने के लिये एक और लोकप्रिय कारण यह है कि उन्होंने अपने कुछ दीर्घायु भक्तों का उल्लेख करते हुये उन्हें सौ वर्ष की आयु वाला बताया था, जबकि ऐसा नहीं था। उदाहरण के लिये प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान और स्वामी के भक्त, जिन्हें साई गायत्री का बोध हुआ था, परम आदरणीय श्री घंडीकोट सुब्रमण्य शास्त्री 93 वर्ष की आयु में ही स्वामी में विलीन हो गये थे। हालाँकि स्वामी ने श्री शास्त्री के प्रपौत्रों को कहा था कि उनके दादा एक महर्षि थे जो शतायु हुए (जबकि वे 93 वर्ष तक रहे)। स्वामी ने इसका उल्लेख एक बार अपने दिव्य प्रवचन में भी किया था। एक अन्य दिव्य प्रवचन के दौरान स्वामी ने अपने अनन्य भक्त श्री शेषगिरि राव[3] का उल्लेख शतायु कहकर किया था जबकि वे अपनी उम्र के 70 वें दशक में ही ब्रम्हलीन हो गये थे।

> डॉ. पद्मनाभन् के पिता उनकी सेवानिवृत्ति के बाद 63 वर्ष की उम्र में यहाँ आये थे, वे भी शतायु हुए और शांति पूर्ण मृत्यु प्राप्त हुई।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 36, अध्याय 20

स्वामी ने इन्हीं भक्त के बारे में एक अन्य प्रवचन में उल्लेख कियाः

---

[1] नोड्स, वे दो बिन्दु होते हैं जहाँ चन्द्रमा का परिक्रमा पथ पृथ्वी के परिक्रमा पथ के तल को काटता है।

[2] किसी दिये गये माह में वही नक्षत्र दोबारा आ सकता है।

[3] रेडियो साई में प्रकाशित एक लेख के अनुसार श्री शेषगिरि राव ने 1943 में पहली बार स्वामी को देखा था तब श्री राव 58 वर्ष के थे। एक अन्य स्त्रोत के अनुसार श्री शेषगिरि राव का देहान्त 1961 में हुआ था। अतः इनकी कुल आयु 75-76 वर्ष की रही होगी।

प्रशांति निलयम में पहले शेषगिरि राव थे। वे एक अच्छे अधिकारी थे। वे आरती करते थे। वे शतायु हुए।

–दिव्य प्रवचन, प्रशांति निलयम, 22 अगस्त 2001

अगर पहले हम पृथक रूप से, इन उदाहरणों पर गौर करें तो हम इस भ्रम में पड़ सकते हैं कि स्वामी किसी अन्य पद्धति के कैलेण्डर या पंचांग के सन्दर्भ में इन भक्तों की उम्र का उल्लेख कर रहे थे। लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि इन तथ्यों से यह स्पष्ट है कि दो अलग आयु की तुलना 100 वर्ष की आयु से की गई है। इसके अतिरिक्त जैसा कि श्री शेषगिरि के उदाहरण से स्पष्ट हो रहा है, हम कोई ऐसा कैलेण्डर ढूंढने कहाँ जाऐं जो अपने चक्र में '20 वर्ष से अधिक के अंतर'[1] को समाहित कर सकता हो!

श्री गोपाल राव और स्वामी कारूण्यानन्द उन अन्य भक्तों में से थे जिनका उल्लेख स्वामी ने अपने प्रवचनों में शतायु (100 वर्ष की आयु वाला) कहकर किया था। जबकि इनकी उम्र 100 वर्ष से अधिक की रही। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि स्वामी ने जब श्री गोपाल राव के लिये अपने दिव्य प्रवचन में शतायु कहकर उल्लेख किया तब उनकी उम्र 96 वर्ष थी और वे जीवित थे। 4 साल बाद दिसम्बर 2007 में श्री गोपाल राव के 100वें जन्मदिन पर एक सम्मान समारोह में स्वामी ने कृपा कर के इन श्रेष्ठ बुजुर्ग भक्त को सम्मानित किया।

यह समझने के लिये कि "शतायु" की अभिव्यक्ति से यथार्थ में स्वामी का क्या तात्पर्य है, हमें उस प्रसंग को समझने की आवश्यकता होगी जिसके सन्दर्भ में स्वामी ने यह वक्तव्य दिया था। इसके लिये हमें उनके 78वें जन्म दिवस के उसी प्रवचन (ऊपर उल्लेखित) के अलावा अन्यत्र देखने की आवश्यकता नहीं है, जिसमें वे कहते हैं–

> मैं तुम्हें एक और महत्वपूर्ण बात कहना चाहता हूँ। यहाँ प्रशांति निलयम में वे सभी भक्त जिन्होंने अपना जीवन स्वामी को समर्पित किया है, शतायु होंगे। **कस्तूरी यहाँ आये और सम्पूर्ण जीवन जिया।**
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 36, अध्याय 20

हम सभी जानते हैं कि प्रोफेसर कस्तूरी 90 वर्ष की उम्र में ही स्वामी में विलीन हो गये थे। यदि हम उपरोक्त वचनों का बारीकी से अध्ययन करें तो हम स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं कि "100 वर्ष जीवित रहें" (या "शतायु रहें"), केवल एक अभिव्यक्ति थी जिससे स्वामी का आशय था कि उस भक्त विशेष ने एक परिपूर्ण जीवन व्यतीत किया है। स्वामी उससे क्या उम्मीद करते हैं जो 100 वर्ष जीवित रहा हो?

> 100 वर्ष की उम्र में, किसी को भी पंच कर्मेन्द्रियों और पंच ज्ञानेन्द्रियों का स्वामी होना चाहिये और ईश्वर में लीन हो जाना चाहिये। मुख, हाथ–पैर, कंठ, विसर्जनेन्द्रियाँ, जननेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। आँख, नाक, कान, त्वचा और जिव्हा पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं।
>
> –श्री सत्य साई बाबा से वार्तालाप, डॉ. जॉन हिस्लप,
> श्री सत्य साई बुक्स एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट, पृष्ठ 42

[1] श्री शेषगिरि राव की वास्तविक उम्र और स्वामी के वर्णन में उल्लेखित 100 वर्ष के मध्य अंतर

कोई भी भक्त जिसने परिपूर्ण जीवन व्यतीत किया है और जो स्वामी की उपरोक्त अपेक्षाओं पर खरा उतरा हो, तो उसकी वास्तविक आयु चाहे कुछ भी हो, सम्पूर्ण आध्यात्मिक अर्थ में वह "शतायु" ही है। भारत में अनेक क्षेत्रों में, विशेष कर के ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ जन अपने से कनिष्ठ को "शतायु भव्" का आशीर्वाद देते हैं। उसका वास्तविक अर्थ है "सुखी और दीर्घायु हो"। इसकी उत्पत्ति वैदिक आशीर्वाद "शतम् जीवेद्" अर्थात् 100 वर्ष जियो और दीर्घायु आशीर्वाद "जीवेद् शरदः शतम्" से हो सकती है। संस्कृत शब्द शतम् का अंकीय अर्थ 100 है, लेकिन इसको दीर्घकाल के संदर्भ में भी लिया जाता है। अतः पूरे मंत्र का अर्थ है; सत्यनिष्ठ का जीवन, दीर्घ, सम्पूर्ण और सुखी हो। मैं यहाँ क्रिया योग संस्थान के परमहंस श्री प्रज्ञानन्द जी की "शतम् जीवन" के सही अर्थ पर की गई टिप्पणी को उद्धत करना चाहता हूँ: सौ वर्ष का समय सम्पूर्णता का प्रतीक है। यह केवल एक भौतिक अंक नहीं है; प्रतीकात्मक रूप से यह हमें प्रेम और समर्पण से जीवन जीने की राह दिखाता है। अंक 100 में यदि अंक 1 नहीं हो तो '00' का कोई अर्थ नहीं है। इसी प्रकार यदि ईश्वर या प्रेम नहीं हो तो जीवन अर्थहीन है।"[१]

प्रेम और श्रद्धा के उदाहरण इन पुराने समय के साई भक्तों ने दिव्य चरण कमलों की सेवा में सम्पूर्ण समर्पण करके अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भरपूर और सम्पूर्ण "शतम" वर्ष जीवन व्यतीत किया होगा।

अन्य प्रमाण

स्वामी के 79वें जन्म दिवस पर उनके दिव्य प्रवचन के निम्नलिखित अंश का अध्ययन करते हैं:

> आज केवल इस देह का जन्म दिवस है। क्या मैं **79 वर्ष की उम्र** के व्यक्ति जैसा दिखता हूँ? बिल्कुल नहीं!!! लोगों को इस उम्र में अनेक बीमाारियाँ हो जाती हैं। उनको सुनाई कम देने लगता है, आंखों में मोतियाबिन्द हो जाता है, माथे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। मेरे सभी अंग एकदम ठीक हैं। मेरे माथे पर झुर्रियाँ भी नहीं हैं। केवल अभी ही नहीं, 80 और यहाँ तक की 90 वर्ष की उम्र में भी मैं ऐसा ही रहूँगा!!!
>
> –दिव्य प्रवचन, प्रशांति निलयम,
> 79 वां जन्म दिवस, 23 नवम्बर 2004

क्योंकि स्वामी ने उनके 79 वें जन्म दिवस पर "79 वर्ष की उम्र" का उल्लेख किया है, अतः कम से कम इस स्थिति में तो यह सुनिश्चित है कि स्वामी नियमित ईस्वी सन् (ग्रेगोरियन) कैलेण्डर के सन्दर्भ में बात कर रहे थे। कृपया ध्यान दें कि उपरोक्त प्रवचन में ही स्वामी ने अपनी 90 वर्ष की उम्र का उल्लेख किया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी अपने भौतिक शरीर में 90 "नियमित कैलेण्डर वर्षों" से भी अधिक रहने का इरादा व्यक्त कर रहें हैं।

[1] www.kriya.org से साभार

स्वामी की जीवनी के लेखक का स्पष्टीकरण

स्वर्गीय श्री आर. गणपति भगवान बाबा के बहुत नज़दीकी भक्त और विभिन्न भाषाओं में धार्मिक ग्रंथों के गहन विद्वान थे। उन्होंने "बाबाः सत्य साई" के नाम से एक जीवन परिचय माला लिखी थी, जिसे भगवान श्री सत्य साई बाबा के प्रति उनकी असाधारण श्रद्धा माना जाता है। उक्त माला के एक खंड में से निम्नलिखित घटना प्रस्तुत हैः

> उनके (स्वामी के) महाविद्यालय के छात्रों को **जून 1976** में "ऊटकमण्ड समर कोर्स" में एक और अद्‌भुत रहस्योद्‌घाटन देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वामी, जिन्होंने उद्‌घोषणा की कि **वे इस देह में जीवन के 96 वर्ष देखेंगे**, कहाकि **बचे हुए 46 वर्षों में** उनके द्वारा पूरे भारत में 18 महत्वपूर्ण संस्थान स्थापित किये जायेंगे।
>
> –बाबाः सत्य साई, भाग 2, आर. गणपति, पृष्ठ 85

यहाँ, यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि स्वामी ने ना सिर्फ यह उल्लेख किया है कि वे 96 वर्ष तक जीवित रहेंगे, बल्कि यह भी संकेत दिया है कि 1976 के बाद 46 वर्ष और इस देह में रहेंगे। स्वामी उस समय 50 वर्ष के थे और इसलिये वे कुल 96 वर्षों में से "शेष 46 वर्षों" के बारे में चर्चा कर रहे थे। क्योंकि वे परोक्ष रूप से अपनी वास्तविक उम्र का उल्लेख नियमित ईस्वी सन् में कर रहे थे इसलिये यह मानना भी तर्क संगत है कि उल्लेखित 96 वर्ष और 46 वर्ष भी नियमित ईस्वी सन् के सन्दर्भ में ही हैं। वे दो भिन्न पद्धतियों के कैलेण्डर वर्ष का उल्लेख एक साथ नहीं कर सकते थे। इसके अतिरिक्त 1976 के बाद (2011 तक) स्वामी उनके भौतिक शरीर में केवल 35 वर्षों तक ही रहे। यह एकदम स्पष्ट है कि चन्द्र वर्ष तो क्या, किसी भी अन्य पद्धति के कैलेण्डर के 46 वर्ष[1] सामान्य ईस्वी कैलेण्डर के 35 वर्ष के बराबर नहीं हो सकते हैं।

शायद सबसे अधिक विश्वसनीय प्रमाण और कोई नहीं बल्कि स्वयं ईश्वर चयनित दिव्य जीवन चरित्र लेखक (स्वर्गीय) प्रोफेसर कस्तूरी के शब्दों में मिलता हैः

> बाबा ने हमें आश्वस्त किया है कि वे मानव शरीर में **वर्ष 2020 के बाद तक** रहेंगे।
>
> –द् लाइफ ऑफ भगवान श्री सत्य साई बाबा,
> कस्तूरी एन., १९७१ पृष्ठ २३५

हमारे सौभाग्य से, उम्र की अपेक्षा एक वर्ष विशेष (2020 ईस्वी सन्) का उल्लेख करके उनके विशिष्ट संदेश वाहक प्रोफेसर कस्तूरी के माध्यम से स्वामी ने उस वाद्–विवाद को एक बार में ही हमेशा के लिये समाप्त कर दिया है!

[1] इस तरह एक माह में केवल 23 दिन और एक साल में 276 दिन ही होंगे।

अध्याय 2: उनकी क्या योजना है?

पिछले अध्याय में हम देख चुके हैं कि स्वामी चन्द्र वर्षों के सन्दर्भ में बात नहीं कर रहे थे।

क्या स्वामी ने अपनी योजना बदल दी?

तो क्या हुआ? यह अंतर क्यों? क्या स्वामी ने उनकी मूल योजना में परिवर्तन कर दिया और पहले जाने का निर्णय किया?

जब इस बारे में पूछा, तो कुछ भक्तों ने यहाँ तक कहा कि स्वामी उनकी योजना किसी भी समय बदल सकते हैं। अवश्य, वे ऐसा कर सक्ते हैं। वे अवतार हैं। वे ईश्वर हैं। वे जो करना चाहें वो कर सक्ते हैं। लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आता कि अवतार को उनकी स्वयं की योजना में परिवर्तन का पूर्वानुमान न होने का दोषारोपण करने में कौन सी बुद्धिमानी है। वह भी दृढ़ निश्चयपूर्ण उनके बहुत सारे कथन सुनने के बावजूद?

> मेरे वचन कभी व्यर्थ नहीं होंगे, जैसा मैं चाहूँगा वैसा ही होगा।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 1, अध्याय 31

> मैं जो भी संकल्प करूँगा वह अवश्य पूरा होगा, मेरी योजना अवश्य सफल होगी।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 12, अध्याय 38

> एक बार मैने जो वचन दे दिया उसके अनुसार ही होगा। इसमें सन्देह मत करो।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 1, अध्याय 16

> ऐसा कोई नहीं है जो मेरे व्यवहार या मेरे आचरण में थोड़ा भी परिवर्तन कर सके। मैं सर्वोच्च सत्ता हूँ।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 1, अध्याय 30

> अवतार का प्रत्येक कार्य पूर्व निर्धारित होता है।
>
> –दिव्य प्रवचन, 23 नवम्बर 1968

> ईश्वर अपने वचन से कभी विचलित नहीं होंगे।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 2, अध्याय 22

> मेरी गतिविधियों और योजनाओं में कोई परिवर्तन नहीं होगा कोई उसके बारे में चाहे कुछ भी कहे।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 5, अध्याय 42

> परिस्थितिवश कुछ परिवर्तन हो सकता है। लेकिन यह स्थायी नहीं होगा। इस तरह की घटनाओं से मेरे कार्य में परिवर्तन नहीं होगा।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 17, अध्याय 14

उपरोक्त सभी वचन स्वतः स्पष्ट हैं। मेरे लिये सबसे खास और सशक्त वचन है "एक बार मैंने जो वचन दे दिया उसके अनुसार ही होगा। इसमें सन्देह मत करो।" यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि वे सिर्फ इतना कह कर ही नहीं रुक गये कि वे जानते हैं कि क्या होने वाला है। निश्चित तौर पर वे इसके भी आगे चले गये और घोषणा की: **जो भी व्यक्त हुआ है, विद्यमान होगा**!

योजना में परिवर्तन? मैं कहता हूँ, केवल नकारात्मक लोगों के लिये!

तो क्या योजना है उनकी?

> ईश्वर की योजना को स्वयं ईश्वर ही जानते हैं, क्योंकि ये उनकी योजना है। मंच पर नाटक का केवल एक दृश्य ही तुम देख पाते हो और इसलिये यह सब इतना भ्रमित कर देने वाला मालूम होता है। जब सम्पूर्ण कहानी मालूम होगी तब तुम उनकी योजना की प्रशंसा करोगे, उसके पहले नहीं।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 1, अध्याय 30

उनकी क्या योजना है इसका पूर्वाभास या भविष्यवाणी कोई भी नहीं कर सकता। स्वामी ने कई बार उल्लेख किया है कि हम सभी को उनकी अनिश्चितता का आनन्द लेना चाहिये। जो कुछ भी निश्चित है वह यह है कि जो कुछ भी उन्होंने कहा है वह अवश्य घटित होगा। कैसे? कब? कहाँ? ... इसका उत्तर हम मनुष्यों के परे है। केवल समय ही इसका रहस्योद्घाटन करेगा।

> मेरी अनिश्चितता को पसंद करो। क्योंकि यह भूल नहीं है। यह उद्देश्यपूर्ण है और मेरी इच्छा है। याद रखो कि मेरी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता है। शांत रहो। समझना नहीं चाहते; समझने के लिये मत पूछो। समझने का प्रयास मत करो। वह सब छोड़ दो जिसमें समझना अनिवार्य है।
>
> –सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भाग ३

अध्याय 3: स्वामी के भौतिक जीवनकाल के बारे में उनकी वार्ताऐं

उनके स्वयं के जीवनकाल के बारे में स्वामी ने कई अवसरों पर बात की है। उनमें से कुछ दिव्य प्रवचनों में की गई उद्घोषणाएँ थीं, जबकि कुछ "इन्टरव्यू" के दौरान कहीं गईं थी जो बाद में "इन्टरव्यू" के समय उपस्थित भक्तों ने पुस्तकों में प्रस्तुत की। नीचे दिये गये संकलन में स्वामी के दिव्य प्रवचनों और पुस्तकों में लिखित उद्धरण शामिल हैं।

१. मैं इस नश्वर मानव देह में 59 वर्ष और अधिक रहूँगा तथा इस अवतार के उद्देश्य को मैं अवश्य प्राप्त करुँगा; इसमें सन्देह मत करना।

–दिव्य प्रवचन, प्रशांति निलयम, 29 सितम्बर 1960

(उपरोक्त उद्धरण के अनुसार, स्वामी 93 या 94 वर्ष की उम्र तक रहेंगे। 1960 से 59 वर्ष और अधिक सन् 2019 होगा। 2019 में स्वामी की उम्र 93 वर्ष होगी। नवम्बर 2019 में उनके जन्मदिवस के बाद वे 94 वर्ष के होंगे।)

२. मैं इस देह में 58 वर्ष और रहूँगा; मैं तुम्हें इस बारे में पहले ही आश्वस्त कर चुका हूँ।

–दिव्य प्रवचन, प्रशांति निलयम, 21 अक्टूबर 1961

(उद्धरण १ में दी गई उम्र को ही संकेत करता है।)

३. सिर्फ आज ही नहीं ९६ वर्ष की उम्र तक मैं ऐसा ही रहूँगा।

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग 36, अध्याय 14

४. (प्रोफेसर कस्तूरीः) बाबा ने हमें आश्वस्त किया है कि वे भौतिक देह में वर्ष 2020 के बाद तक रहेंगे।

–द लाइफ ऑफ भगवान श्री सत्य साई बाबा
एन. कस्तूरी, पृष्ठ 235

(वर्ष 2020 में स्वामी 94 वर्ष की उम्र के होंगे। 23 नवम्बर को उनके जन्मदिवस के बाद वे 95 वर्ष के होंगे। क्योंकि प्रोफेसर कस्तूरी ने "सन 2020 के बाद तक का" उल्लेख किया है, अतः हम यह मान सकते हैं कि यह 95 वर्ष के बाद की किसी उम्र का संकेत करती है। इसे उद्धरण 3 के समकक्ष मान सकते हैं।)

५. अतिथिः तब प्रेम साई के लिये अधिक कार्य नहीं रह जाएगा! स्वामी ने संसार को शांतिपूर्ण बना ही दिया होगा।
साईः यह सब अभी 40 वर्ष दूर है। उस समय संसार शांतिमय होगा। इसलिये तो नाम होगाः प्रेम साई। सभी प्रेममय होंगे प्रेम, प्रेम, हरतरफ प्रेम।

–माई बाबा एण्ड आई, जे. एस. हिस्लप, पृष्ठ 235

दिसम्बर 1978 के एक इन्टरव्यू से

(उपरोक्त वार्तालाप यह प्रमाण नहीं देता कि स्वामी उनकी भौतिक देह में कब तक रहेंगे। हालाँकि यह संकेत देता है कि प्रेमसाई का अवतार 2018 के बाद होगा और तब तक सत्य साई अवतार संसार को शांतिमय बना देंगे। उद्धरण 3 का यह पुनः समर्थन करता है।)

६. इस "इन्टरव्यू" से एक असाधारण बात सामने आई है। बाबा ने हमें बताया है कि वे 94 वर्ष की आयु तक रहेंगे।

–माडर्न मिराकल्स, अर्लेण्डर हेराल्डसन, पृष्ठ 46

७. समय की कसौटी पर कसने के लिये बाबा की भविष्यवाणियों में से एक को मैं पाठकों के लिये छोड़ता हूँ; उन्होंने बार–बार दोहराया कि वे 94 वर्ष तक रहेंगे।

–माडर्न मिराक्ल्स, अर्लेण्डर हेराल्डसन, पृष्ठ 294

८. यह देह 96 वर्ष तक रहेगी और हमेशा युवा बनी रहेगी।

–श्री सत्य साई बाबा से वार्तालाप, जे.एस. हिस्लप[1]

९. उनके (स्वामी के) महाविद्यालय के छात्रों को जून 1976 में उटकमण्ड समरकोर्स में एक और अद्भुत सृजन देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वामी जिन्होने घोषणा की कि वे इस देह में 96 वर्ष तक रहेंगे, कहा कि बचे हुए 46 वर्षों में उनके द्वारा पूरे भारत में 18 महत्वपूर्ण संस्थान स्थापित किये जायेंगे।

–बाबाः सत्य साई, भाग–2, आर. गणपति, पृष्ठ 85

(उपरोक्त उद्धरण के अनुसार जून 1976 के बाद स्वामी 46 वर्ष तक रहेंगे। यह 2022 या 2021 के अंत में किसी दिन का संकेत करता है)

जबकि ऊपर दिये गये कुछ उद्धरणों में स्वामी की उम्र का उल्लेख 94 वर्ष किया है तो कुछ अन्य अवसरों पर स्वामी ने (भौतिक विलीनीकरण का समय) 96 वर्ष बताया है। श्री सत्य साई अवतार के बारे में भविष्यवाणियों में भी ९६ वर्ष की आयु का उल्लेख किया है।

स्वामी के भौतिक विलीनीकरण का उन्हीं के द्वारा पूर्व घोषित समय जानने के लिये हम ऊपर दिये गये उद्धरणों का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं।

अ. उद्धरण 1 और 2, अक्टूबर 2019 और अगस्त 2020 के बीच के समय अन्तराल को संकेत करते हैं।

[1] श्री सत्य साई बाबा से वार्तालाप, जे.एस. हिस्लप, बर्थ डे पब्लिकेशन कं. सेनडिएगो 1978, पृष्ठ 83 (उल्लेखित इन्टरव्यू केवल इस संस्करण में ही प्रकाशित हुआ है।)

ब. उद्धरण 3 और 8 का अर्थ हो सकता है कि दिसम्बर 2021 से नवम्बर 2022 के बीच किसी भी समय स्वामी देह छोड़ सकते हैं।

स. उद्धरण 4 और 5 को उद्धरण 3 और 8 के समान मान सकते हैं।

द. उद्धरण 6 और 7, दिसम्बर 2019 से नवम्बर 2020 के बीच की समयावधि का संकेत करते हैं।

ई. उद्धरण 9, वर्ष 2022 (या 2021 के बाद) के किसी दिन का संकेत करते हैं, जिसे उद्धरण 3 और 8 में शामिल मान सकते हैं।

यदि हम केवल विश्लेषण "अ" और "द" लें जहाँ उम्र 94 वर्ष उल्लेखित है और उनका परस्पर सम्बन्ध देखें तो हमें दिसम्बर 2019 से अगस्त 2020 की समयावधि प्राप्त होगी। विश्लेषण "ब" से इसकी तुलना करने पर ("स" और "ई" को "ब" के समान मानने पर) जिसके ऊपर यह 96 वर्ष का सूचक है, हम 15 से 36 महिने की अवधि का अन्तर देख सकते हैं। दूसरे शब्दों में, स्वामी की जीवन–अवधि के बारे में दो भिन्न विवरणों में, एक तरफ जहाँ वे 94 का उल्लेख कर रहें हैं, और दूसरी तरफ जहाँ वे 96 का उल्लेख कर रहें हैं, यहाँ कम से कम 15 महिने का अन्तर आता है।

(अगस्त 2020 और दिसम्बर 2021 को छोड़कर इनके बीच के न्यूनतम समय की गणना करने पर यह 15 माह आती है। दिसम्बर 2019 और नवम्बर 2022 को मिलाकर इनके बीच का अधिकतम समय की गणना करने पर यह 36 माह आती है।)

एक सम्भावित व्याख्या

मैं ऐसा एक भी शब्द नहीं कहता जिसका कोई महत्व ना हो।

–"द लाइफ ऑफ भगवान श्री सत्य साई बाबा"
एन. कस्तूरी, पृष्ठ 196

स्वामी के दो भिन्न वक्तव्यों में उपरोक्त अन्तर के लिये क्या कोई व्याख्या है? हम इस बारे में केवल अंदाज लगा सकते हैं, क्योंकि केवल वे ही जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। हम निश्चित तौर पर केवल एक ही बात जानते हैं कि वे कभी गलती नहीं कर सकते। स्वामी जो कहेंगे वह घटित होगा ही। इस दृष्टिकोण से हम एक निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। एक ओर स्वामी कहते हैं कि वे अपनी देह में 94 वर्ष तक रहेंगे, दूसरी ओर वे संकेत करते हैं कि वे करीब 96 वर्ष तक रहेंगे। तो इसका क्या अर्थ है? **क्या यह संकेत करता है कि 2 वर्ष तक स्वामी "उनकी भौतिक देह के बाहर[1]" रहेंगे?** इस तरह की पूरी सम्भावना हो सकती है। अभी[2] वे अपनी देह के बाहर हैं, क्या वे नहीं हैं?

मेरे द्वारा पूर्व में किये गये विश्लेषण से प्राप्त "समयान्तराल" को यदि हम लागू करें तो, इस समयान्तराल का यह अर्थ हो सकता है कि **स्वामी उनकी देह त्यागने के 15 माह बाद या 36 माह के पहले "वापस" आ सकते हैं।** क्योंकि स्वामी ने 24 अप्रेल 2011 को देह त्यागी थी अतः यह अवधि जुलाई 2012 से अप्रेल 2014 के बीच की हो सकती है।

मेरी सर्वज्ञता पर आस्था रखो, मैं गल्तियाँ नहीं करता हूँ।

–सनातन सारथी, अगस्त 1984

[1] या अर्न्तध्यान.

[2] प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने की तिथि 8 अप्रेल 2012 को

अध्याय 4: भविष्य के लिये साई की भविष्यवाणियाँ

स्वामी ने स्वयं के बारे में और साई अवतार के उद्देश्य के बारे में कई बातें कहीं हैं। जैसा हम जानते हैं कि स्वामी की कई भविष्यवाणियाँ फलित हो चुकी हैं। लेकिन उनमें से कुछ आंशिक रूप से घटित होने वाली हैं या निकट भविष्य में घटित होंगी। मैंने उनमें से कुछ को संग्रहित करके यहाँ प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया है।

(कृपया ध्यान दें कि इन्हें यहाँ इसलिये प्रस्तुत किया है ताकि सत्य साई अवतार में और अद्भुत समय के आने की सम्भावना की पुष्टि की जा सके।)

> आने वाले समय में इतना विशाल जन समूह एकत्र होगा कि मुझे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिये कार ही नहीं हवाई जहाज भी त्यागना होगा; मुझे आकाश मार्ग का उपयोग करना पड़ेगा; हाँ, मुझ पर विश्वास करो कि ऐसा भी होगा।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 2, अध्याय 18

> मेरा विश्वास करो, एक दिन ऐसा आएगा, जब तुम अत्यन्त दूर से बड़े प्रयास के बाद ही मेरे वस्त्र की छोटी लाल झलक भी बड़ी मुश्किल से देख पाओगे। जब मैं आकाश मार्ग से एक छोर से दूसरे छोर तक जाऊँगा तब तुम्हें स्वामी की महिमा का ज्ञान होगा।
>
> –तपोवनम, श्री सत्य साई सत्चरित्र, जन्ध्याला वेंकटेश्वर शास्त्री, अध्याय 11

> पहले जब नन्हे बालक ने गोवर्धन गिरि उठाया उस समय गोप–गोपियाँ पहचान सके कि कृष्ण तो ईश्वर हैं। तुम देखोगे, कि अब, केवल एक गोवर्धन गिरि ही नहीं, सम्पूर्ण पर्वतमाला उठाई जाएगी। धीरज रखो, विश्वास रखो।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 3, अध्याय 15

(उनके कार्य की विशालता दिखाने के लिये शायद इस प्रकरण में स्वामी एक रूपक का उपयोग कर रहे थे। स्वामी के लिये सब कुछ सम्भव है।)

> पुनः तुम लोग कितने भाग्यशाली हो कि तुम संसार के सभी देशों को भारत का सम्मान करते हुए देखोगे। इस देह के रहते हुए ही तुम पूरे विश्व में सत्य साई के नाम के जप की प्रतिध्वनि सुनोगे। और पुनः, सारे संसार के लोगों के भले के लिये जिसे वेदों में दिया गया है, उस सनातन धर्म को तुम अतिशीघ्र ही उसकी प्रामाणिक और प्राकृतिक स्थिति में पुर्नस्थापित होते देखोगे।
>
> –दिव्य प्रवचन, 17 मई 1968

> यह शरीर एक विशेष उद्देश्य से धारण किया गया हैः धर्म स्थापना और धर्म की शिक्षा देने के लिये। जब यह उद्देश्य पूरा हो जाएगा, पानी के बुलबुले की तरह यह शरीर भी अन्तर्ध्यान हो जाएगा।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 10, अध्याय 39

जैसा कि उपरोक्त उध्दरणों से स्पष्ट है कि स्वामी उनके वर्तमान साई अवतार के भौतिक रूप में रहते हुए ही अद्भुत चमत्कारों के होने के बारे में स्पष्ट रूप से बात कर रहे थे। स्वामी ने यह भी स्पष्ट तौर पर कहा कि उनके वर्तमान अवतार के रहते हुए ही संसार के सारे देश भारत को सम्मान देंगे। उनके अन्तर्ध्यान होने के पहले ही सम्पूर्णतः धर्मस्थापना होने के बारे में भी उन्होंने उल्लेख किया है।

जबकि स्वामी के उपरोक्त वक्तव्य उनके भौतिक जीवनकाल के दौरान ही इन असाधारण घटनाओं के होने का स्पष्ट संकेत देते हैं, स्वामी ने सत्य साई अवतार के दौरान होने वाली कई और अद्भुत बातों का संकेत भी दिया है। नीचे दिये गये अंश स्वामी के दिव्य प्रवचनों और प्रामाणिक "इन्टरव्यूज़" से लिये गये हैं। मूल उद्धरण एक अन्य अध्याय "सत्य साई स्वर्णिम युग का उदय" में दिये गये हैं।

- प्रेम साई के आने तक वैश्विक शांति स्थापित हो चुकी होगी।
- स्वामी स्वर्णिम युग में ले जायेंगे और यह हर एक की उम्मीद से पहले आएगा। कोई भी इस स्वर्णयुग की श्रेष्ठता की कल्पना नहीं कर सकता। यह प्रत्येक कल्पना से ज्यादा भव्य होगा।
- यह परिवर्तन सार्वभौमिक होगा और प्रत्येक स्थान में होगा।
- साई–राज्य की स्थापना होगी और वे लोग सौभाग्यशाली होंगे जो पृथ्वी पर स्वर्ग का अनुभव करेंगे।
- पृथ्वी से हर तरह की अस्थिरता का शीघ्र ही उन्मूलन होगा। सभी में पवित्र भावों का विकास होगा। प्रत्येक व्यक्ति दिव्य आनन्द का अनुभव करेगा। पूरा राष्ट्र शीघ्र ही शांति और आनन्द का अनुभव करेगा। कहीं कोई परेशानी या दुःख नहीं होगा।
- सभी देशों के लोगों में एकता हो जायेगी।
- शीघ्र ही स्वामी का नाम और रूप हर जगह स्थापित हो जाएगा, पूरे संसार के एक–एक इंच पर छा जाएगा।
- साई सभाओं में लोगों के खड़े होने की भी जगह नहीं होगी।
- भविष्य में साई संस्थाओं की सदस्यता अत्यन्त लाभकारी होगी। साई सभाओं में इतनी भीड़ होगी कि सामान्य जन को जगह मिलना भी मुश्किल हो जायेगा। सभी उपलब्ध स्थान साई संस्थाओं के लोगों के लिये ही आरक्षित रखें जायेंगे।
- सम्पूर्ण विश्व सत्य साई संस्था में परिवर्तित हो जायेगा और प्रत्येक हृदय में सत्य साई स्थापित हो जायेंगे।
- सभी देश भारत को सम्मान देंगे। आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक हर दृष्टिकोण से भारत विश्व का नेतृत्व करेगा।
- आने वाले दिनों में सम्पूर्ण संसार को प्रशांति निलयम आने का अनुग्रह प्राप्त होगा।
- हम सभी पुट्टपर्ति को मथुरा नगरी (श्री कृष्ण जन्म स्थान) बनते देखेंगे। हर जगह विश्व मानचित्र में पुट्टपर्ति को महत्वपूर्ण स्थान की तरह चिन्हित किया जायेगा।

(मूल उध्दरण के लिये अध्याय 9, "सत्य साई स्वर्णिम युग का उदय" देखें)

हमें संशय का अधिकार नहीं

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् (भाग 4) में प्रोफेसर कस्तूरी वर्णन करते हैं कि कैसे छोटा–सा गांव पुट्टपर्ति, एक बार जिसका वर्णन अर्नाल्ड शुल्मन ने "पाषाण युग से मुश्किल से पाँच मिनिट की दूरी पर" कह कर किया था केवल दिव्य इच्छा से सुन्दर आध्यात्मिक स्वर्ग में परिवर्तित हो गया। स्वामी जब सत्रह साल के थे, उन्होंने लक्ष्मैया नामक एक पुजारी को रहस्योद्घाटन किया था कि बड़ी संख्या में लोग उनके दर्शन के लिये पुट्टपर्ति आयेंगे। लक्ष्मैया ने जो सुना उस पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ क्योंकि उस समय ऐसा कुछ होने की संम्भावना उन्हें नजर नहीं आ रही थी। लेकिन जब समय गुजरता गया और बहुत बड़ी संख्या में भीड़ आने लगी तो लक्ष्मैया को दूर से ही भगवान की एक झलक देख कर संतोष करना पड़ता था। इसके बाद उन्हें विश्वास हुआ!

स्वामी ने उनके 65वें जन्म दिवस पर घोषणा की कि वे मुफ्त चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवाने के लिये एक सर्वश्रेष्ठ उच्च चिकित्सा अस्पताल बनायेंगे और यह भी कि यह पहले हृदय आपरेशन के लिये केवल एक साल में ही बनकर तैयार हो जायेगा। विशेषज्ञों ने उपहास किया और कहा कि यह सम्भव नहीं हो सकता। स्वयं भगवान के कुछ निजी सेवकों ने प्रश्न किया कि इतने विशाल उद्यम को कार्यरत रखने के लिये धन कहाँ से आयेगा। इस अस्पताल की रूपरेखा (डिजाइन) बनाने वाले विश्व प्रसिद्ध वास्तुविद् (आर्किटेक्ट) डॉ. कीथ क्रिचलो के मन में भी संदेह था। उन्हें आश्चर्य हुआ, **"कि अमेरिका जैसे तकनीकी रूप से विकसित देश में भी इस स्तर के सुपर अस्पताल को सात साल से कम समय में तैयार नहीं किया जा सकता। तो स्वामी इस अस्पताल को केवल छः माह में कैसे तैयार कर लेंगे?"** सभी सन्देहों के विपरीत, दिव्य इच्छानुसार ठीक अगले साल स्वामी के 66 वें जन्म दिवस के अवसर पर एक नहीं बल्कि चार ओपन हार्ट सर्जरी के साथ इस अस्पताल का उद्घाटन हुआ![1] इस तरह की कई चमत्कारिक घटनाऐं सुनने के बाद भी हमारी प्रकृति संदेह प्रकट करने की है। वास्तव में हालात इतने गिर गये हैं कि इसने स्वयं भगवान को यह स्पष्ट करने के लिये बाध्य कर दिया कि उनके दावे अतिशियोक्ति पूर्ण नहीं हैं।

> दिव्य प्रेमस्वरूपों! मैं जो कह रहा हूँ उसे अतिशियोक्ति पूर्ण नहीं समझना। मुझमें लेशमात्र भी स्वार्थ नहीं है।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 23 अध्याय 34

साई युग ने हमें दिखाया है कि जिन चीजों को पहले अबोधगम्य समझा जाता था वे बाद में उनकी दिव्य इच्छा के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में प्रकट हो जाती थीं। जिन लोगों ने पहले अविश्वास किया बाद में उन लोगों ने ही ठीक उसी चीज को केवल अवतार के उद्देश्य से प्रासंगिक बताया। उनमें से ज्यादातर लोग भूल गये कि इस तरह की चीजों की विश्वसनीयता के प्रति उनके मन में भी संदेह थे। जिन्हें याद रहा वे शर्मिन्दा हुए और अवतार पर सन्देह करने के लिये अपनी अज्ञानता पर पछताये।

जब स्वामी कुछ कहते हैं तो वह अवश्य घटित होगा, उसे घटित होना ही होगा। हमें सन्देह करने का कोई अधिकार नहीं है। हम उनसे प्रार्थना करें कि इतनी आश्चर्यजनक चीजों की विश्वसनीयता आत्मसात करने के लिये वे हमें बुद्धि और विवेक प्रदान करें, जिनका श्री सत्य साई अवतार की सर्वशक्तिमानता के साथ प्रस्फुटित होना अनिवार्य है, भले ही हम सामूहिक रूप से उनकी भव्य महिमा पर ध्यान करें!

---

[1] सन्दर्भः तपोवनम् श्री सत्य साई सद्चरित्र लेखक श्री जन्ध्याला वेंकटेश्वर शास्त्री

भाग 2

नया आगमन

अध्याय 5: उनके अवश्यंभावी आगमन के लिये संकेत

स्वामी ने घोषणा की कि पृथ्वी पर प्रेम और शान्ति के एक नये युग का आगमन होगा जिसको उन्होंने स्वर्णिम युग कहा, जो उनके भौतिक जीवनकाल के दौरान आयेगा।

> बहुत लोग यह विश्वास करने से संकोच करते हैं कि स्थिति में सुधार आयेगा, सभी लोगों का जीवन आनन्दमय होगा **और स्वर्णयुग आयेगा। मैं तुमको आश्वासन देना चाहता हूँ कि यह धर्मस्वरूप, यह दिव्य देह व्यर्थ ही नहीं आई है।** मानवता पर जो संकट आया है उसके निवारण में यह अवश्य सफल होगी।
>
> –1968 में बाबा–साई बाबा, द् होली मेन एण्ड द् सायकिआट्रिस्ट, पृष्ठ 91

(आगामी स्वर्णिम युग पर स्वामी के और अधिक उद्धहरणों के लिये कृपया "श्री सत्य साई स्वर्णिम युग का उदय" नामक अध्याय देखें)

स्वामी ने स्वर्णिम युग के बारे में कई दिव्य प्रवचनों और साक्षात्कारों में विस्तार से बात की है। उन्होंने अपने कुछ नजदीकी भक्तों को आने वाले स्वर्णयुग के बारे में विस्मयकारी विवरण बताये हैं। एक ब्रिटिश साई भक्त लुकास रेल्ली ने स्वामी के कुछ संदेशों को "साई मैसेजेस फॉर यू एण्ड मी" नामक पुस्तक में संग्रहित किया है जो चार खण्डों में प्रकाशित हुई है। इनमें से एक संदेश कहता है:

> स्वर्णयुग के आगमन की घोषणा **एक नये आगमन के द्वारा** एकाएक बड़े परिवर्तन के साथ होगी जो वर्तमान में जारी अधर्म को उखाड़ फेंकने के लिये पर्याप्त होगा।
>
> –साई मैसेजेस फॉर यू एण्ड मी, भाग 2, लुकास रेल्ली 1988, पृष्ठ 70

अब तक मैंने जितनी पुस्तकें देखीं हैं, जो उपरोक्त वक्तव्यों का उल्लेख करती हैं, उनके अनुसार "नये आगमन" का अर्थ प्रेम साई के आगमन से है। लेकिन उम्मीद किये गये समय से पहले ही स्वामी के भौतिक देह त्याग देने के कारण उपरोक्त वक्तव्य एक नया अर्थ ले लेता है। स्वामी जिस "नये आगमन" के बारे में संकेत दे रहे थे, क्या वह उनके ठीक उसी सत्य साई अवतार के रूप के लिये था? विशेषकर जब वे सत्य साई अवतार में ही स्वर्णयुग आने का उल्लेख कर रहे हैं। मेरे विचार में इस युग में जब अधर्म और अराजकता सब तरफ फैल रही है, तब कोई इतने बड़े पैमाने का चमत्कार ही अधर्म को खत्म करके लोगों का ध्यान ईश्वर की तरफ मोड़ सकता है।

प्रोफेसर वी.के.गोकाक एक प्रसिद्ध भारतीय कवि, प्राध्यापक और श्री सत्य साई इंस्टीट्यूट ऑफ हायर लर्निंग के पहले कुलपति थे। उन्हें स्वामी के साथ कई व्यक्तिगत साक्षात्कार (पर्सन्ल् इंटरव्यू) प्राप्त हुए थे। उन्होंने स्वामी के बारे में अनेक पुस्तकें भी लिखीं हैं। उनकी पुस्तक "भगवान श्री सत्य साई बाबा" में वे कहते हैं कि श्री सत्य साई अवतार के दौरान एक विशिष्ट समय आयेगा। जिसे वे "ईश्वर का समय" (पृष्ठ 54) कहकर पुकारते हैं। क्या यह विशिष्ट समय सत्य साई रूप का पुनरागमन हो सकता है? स्वामी ने भी संकेत दिया है कि स्वर्णयुग का सूत्रपात एक घटना (या क्रमिक घटनाओं) के द्वारा होगा, जो समस्त संसार का ध्यान उनकी ओर खींचेगी।

जागृति दिवस बहुत दूर नहीं है और जब यह आयेगा **तब ईश्वर की वास्तविक शक्ति का रहस्योद्घाटन होगा**, ईश्वर की सार्वलौकिकता का प्रकटीकरण। यह एक महान यात्रा का संकेत होगा और उन लोगों की छटनी कर देगा जो उस क्षण की चुनौती स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं होंगे।

–साई मैसेजेस फॉर यू एण्ड मी, भाग 1, रेल्ली लूकास, 1985

एक चमत्कार जो होगा

२४ अप्रेल २०११ को अपनी देह त्यागने के पूर्व, भगवान ने केन्टान, ओहिओ, अमेरिका निवासी एक भक्त सुश्री सीमा देवन को तीन प्रेरणादायक सन्देश दिये। सुश्री सीमा देवन का नाम बहुत से भक्तों के लिये जाना पहचाना है, क्योंकि उनकी पुस्तकें साई भक्तों में लोकप्रिय हैं। अगस्त १९९० में स्वामी ने सुश्री सीमा देवन से स्वामी के साथ अन्तःकरण में होने वाले वार्तालापों को अभिलेखित (रिकार्ड) करते जाने के लिये निर्देश दिये, ताकि एक दिन ये सन्देश मानवता के लिये उपयोगी हो सकें। इस तरह से उन्होंने अपनी पहली पुस्तक "साई दर्शन"[१] लिखनी शुरू की। सितम्बर १९९७ के दौरान स्वामी ने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि को ग्यारह बार आशीर्वाद दिया और दो बार इसके ऊपर विभूति डाली। उनकी पुस्तक साई दर्शन के समान ही वे सन्देश जो स्वामी ने उन्हें अपनी भौतिक देह त्यागने के ठीक पहले (दिव्य दर्शन और अन्तःकरणीय वार्तलाप के द्वारा) दिये थे, समस्त संसार में साई भक्तों के लिये सांत्वना और प्रेरणा के भरपूर स्त्रोत है। उनके स्वयं के शब्दों में[2]:

> उन्होंने (स्वामी ने) मुझे उस समय निम्न तीन सन्देश दिये थे, "तुम लोगों के लिये", "सब कुछ सम्भव है" और "एक चमत्कार होने वाला है", जो उनके स्वास्थ्य के बारे में अंतिम हो सकते थे और यह कि ये उनके भक्तों को सुखदायक होंगे। उन्होंने तीसरे सन्देश का वीडियो बनाने के लिये टेड और जोडी हेनरी[3] को कहने के लिये निर्देश भी दिया।

"एक चमत्कार जो होगा" नामक संदेश सुश्री सीमा देवन को स्वामी के भौतिक देह त्यागने के एक दिन पहले २३ अप्रेल २०११ को प्राप्त हुआ था। उस संदेश में स्वामी कहते हैं[4]:

> मेरे प्रिय, एक चमत्कार होने वाला है... केवल मैं ही इसे बेहतर जानता हूँ। यदि तुम समय के गुजरने का इंतजार कर सको और सहनशील रहो, यदि तुम थोड़ा ठहर सको... जितना तुम सोचते हो उससे थोड़ा ज्यादा, तब मेरे प्रिय, तुम वह देखने वाले हो जो मैं तुम्हारे साक्षी होने के लिये प्रकट करूँगा... तुम्हें जीने के लिये... एक चमत्कार होने वाला है, तुमने इसके लिये प्रार्थना की है।

---

[1] श्री सत्य साई बुक्स एवं पब्लिकेशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित

[2] सुश्री सीमा देवन को प्राप्त संदेशों के अंश saidivineinspirations.blogspot.com से साभार लिये गये हैं

[3] क्लीवलैण्ड ओहिओ के श्री टेड हेनरी एक सेवा निवृत्त टेलिविज़न पत्रकार हैं। वे स्वामी के पुराने भक्त हैं। उनकी पत्नि श्रीमती जोडी के साथ उन्होंने साई भक्तों के अनेक वीडियो इंटरव्यू लिये हैं। ये वीडियो उनकी वेबसाइट souljourns.net पर उपलब्ध हैं। उनकी वेबसइट पर सुश्री सीमा देवन को प्राप्त संदेशों के वीडियो रूपांतर भी उपलब्ध हैं।

[4] केवल अंश दिये जा रहे हैं।

इस संदेश के बारे में सुश्री सीमा देवन कहतीं हैं[1]:

> उसके बाद वे शनिवार की सुबह इस संदेश के साथ मेरे ध्यान में आये, "एक चमत्कार... होने वाला है"। उन्होंने मुझे संदेश सुबह ब्रह्ममुहूर्त में ही दे दिया था, लेकिन सुबह ९ बजे के पहले तक किसी के भी साथ इसे साझा करने पर रोक लगा दी थी। **वास्तव में मैंने उस समय यही सोचा था कि वे देह में पुनः प्रवेश करेंगे। स्वामी बातों को स्पष्टतः वर्णित नहीं करते हैं लेकिन यह सुनिश्चित कर देते हैं कि उनका कार्य पूरा हो जाये।**[2]

जैसा कि सुश्री सीमा देवन स्वीकार करती हैं कि उस समय उन्होंने सोचा था कि स्वामी स्वयं को स्वस्थ कर लेंगे और वापस आयेंगे। जिसने भी उस समय वह संदेश पढ़ा उसने भी यही सोचा होगा कि स्वामी ने कहा था कि एक चमत्कार होगा। लेकिन फिर भी उन्होंने देह त्याग दी। तो वह कौन सा चमत्कार था जिसके बारे में स्वामी बात कर रहे थे?

अपनी देह छोड़ने के एक दिन बाद स्वामी ने २५ अप्रेल २०११ को उनका एक और संदेश दिया: "मैं कहीं नहीं गया हूँ"[3]:

> (...) शुद्ध मन और प्रेमपूर्ण समर्पित हृदय मुझे समय–समय पर पुकार सकते हैं। केवल वे ही उनकी पवित्रता की शक्ति के साथ मुझे एक बार फिर संसार को दर्शन देने के लिये दृश्यमान कर सकते हैं और मैं एक बार फिर भरे हुए हाथों के साथ आऊंगा। तुम्हें मेरे शब्दों पर विश्वास करना चाहिये क्योंकि मेरा कहा हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता है। मैं जो भी कहता हूँ वह सत्य बन जाता है। हमेशा मेरा स्मरण रखो, ध्यान रखो मैं हमेशा तुम्हारे समक्ष हूँ। **अपने आप को भावनाओं से मुक्त कर लो और मेरे आने का इंतजार करो।**

इस संदेश में स्वामी कहते हैं कि वे इस संसार में पुनः दृश्यमान होंगे। इसे प्रेम साई के आगमन के रूप में समझा जा सकता है। लेकिन वे उनकी वापसी का वर्णन कराने के लिये संसार को पुनः दृश्यमान होने की अभिव्यक्ति का उपयोग क्यों करते? (इस विषय पर एक अन्य अध्याय "आकाश में एक दिव्य दर्शन?" में विस्तृत चर्चा करेंगे।) यदि हम केवल इस संदेश को पहले वाले संदेश, "एक चमत्कार जो होगा" के साथ जोड़कर देखें तो हमें सन्निकट चमत्कार का एक संकेत मिलता है। जिस चमत्कार के बारे में हम बात कर रहे थे वह प्रेम साई बाबा का आगमन नहीं हो सकता क्योंकि उनका अवतार तो होना ही है और उनका इंतजार तो है ही। यही कारण है कि "तुम्हें मेरे शब्दों पर विश्वास करना चाहिये क्योंकि मेरा कहा हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता", "मैं जो भी कहता हूँ वह सत्य बन जाता है" जैसे आश्वासनों को प्रेम साई बाबा के आगमन के साथ नहीं जोड़ा जा सकता। यह श्री सत्य साई अवतार स्वरूप ही थे जो समय से पहले "छोड़ गये"। अतः ठीक समय पर मिला यह आश्वासन, उन्हीं श्री सत्य साई अवतार स्वरूप की वापसी से सम्बन्धित है। फिर भी, क्योंकि स्वामी कहते हैं कि "जितना तुम सोचते हो उससे थोड़ा ज्यादा ठहरो", अतः

---

[1] केवल अंश दिये जा रहे हैं।

[2] **अनुवादक की टिप्पणी**: उनके द्वारा बात को स्पष्ट नहीं करने से, हमें उनकी योजना के घटित होने तक उनकी उस योजना की पूर्व जानकारी नहीं हो पाती है। लेकिन इस तरह से हमें अस्पष्ट जानकारी देकर ही वे हमें इस बात का आभास करा देते हैं कि इस संसार का प्रत्येक कार्य उनकी योजना के अनुसार ही होता है। इस तरह से वे हमें उनकी दिव्यता का परिचय करा देते है।

[3] केवल अंश दिये जा रहे हैं।

उनकी तुरन्त वापसी की सम्भावना को नकारा जा सकता है। और यह दूसरे अन्य संकेतों की पुष्टि करती है जो उनकी अवश्यम्भावी वापसी पर इस पुस्तक में प्रस्तुत किये गये हैं।[१]

भक्तों के स्वप्न

स्वामी के बारे में स्वप्न भी केवल स्वामी की इच्छा से ही आते हैं। यह वास्तविक होते हैं और भक्त को एक स्पष्ट संकेत देते हैं।

> स्वामी का स्वप्न में आना अत्यंत शुभदायक है (...) जो कुछ तुम्हारे अंदर है स्वप्न उसका प्रतिबिम्ब, प्रतिक्रिया और प्रतिध्वनि है। लेकिन जिस स्वप्न में स्वामी आते हैं उस स्वप्न पर यह नियम लागू नहीं होता है। स्वामी स्वप्न में तब आते हैं जब उनकी इच्छा होती है, तब नहीं जब तुम चाहते हो।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 31, अध्याय 44

> जो स्वप्न मेरी इच्छा से आते हैं वे अत्यन्त स्पष्ट होते हैं, और भ्रम या सन्देह के लिये कोई स्थान नहीं छोड़ते। मैं तुम तक आता हूँ और तुम्हें सीधे–सीधे बताता हूँ कि मैं क्या चाहता हूँ।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 31, अध्याय 44

स्वामी के भौतिक देह त्यागने के कुछ माह बाद, श्री सत्य साई उच्च शिक्षा संस्थान के मुद्दनहल्ली परिसर के वर्तमान वार्डन श्री बी.एन. नरसिम्हामूर्ति[२] को एक स्वप्न आया जिसमें स्वामी ने उन्हें मुद्दनहल्ली परिसर के बारे में विस्तृत निर्देश दिये।

स्वामी ने स्वप्न में कहा[३]: हिल–टॉप बिल्डिंग को इस गुरूपूर्णिमा (15 जुलाई 2011) को मेरे आगमन के पूर्व मेरे रहने के लिये तैयार करो। गुरूपूर्णिमा पर मैं वहाँ प्रवेश करूँगा और स्थायी तौर पर वहीं रहूँगा। मैं यहाँ से विभिन्न स्थानों पर जाऊंगा और वापस आऊंगा। लेकिन मैं हमेशा यहीं रहूँगा।

स्वामी उल्लेख करते हैं कि वे वहाँ प्रकट दिखाई भी देंगे।

> स्वामी ने फिर कहा,"नेनु अक्काडिकी वस्तानु, अक्कडा कनबदुतानु"। (मैं वहाँ आऊंगा और मैं वहाँ दिखाई भी दूंगा।)

उनके स्वप्न में स्वामी के उपरोक्त वक्तव्य पर श्री नरसिम्हामूर्ति वर्णन करते हैं:

> वे किसको दर्शन देंगे और नहीं यह उनकी मधुर इच्छा पर निर्भर करता है। एक समय था जब वे पात्र–अपात्र सभी को दर्शन दिया करते थे। यह अवसर 24 अप्रेल 2011 से खत्म हो गया। **हममें से वे लोग जो उनके दर्शन के पात्र होंगे उन्हें दर्शन मिलेंगे–उनकी इच्छा होने पर उन्हें साक्षात भौतिक रूप में भी देख सकेंगे। क्योंकि, मैं पिछले करीब 46 वर्षों से उनसे जुड़ा हुआ हूँ, उनका कोई भी शब्द कभी भी असत्य नहीं हुआ है। मैं पूर्णरूप से आश्वस्त हूँ कि हम एक ना एक दिन उनके दर्शन अवश्य करेंगे।**

---

[1] ये लेखक की अपनी व्याख्या है।

[2] श्री सत्य साई बाबा की अधिकारिक जीवनी, "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" के भाग 5 और 6 के लेखक

[3] केवल अंश दिये जा रहे हैं। अंश सन्दर्भ स्त्रोत: www.ssso.net से साभार

श्री सत्य साई विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति स्व. डॉ. के हनुमन्थप्पा ने उनकी पुस्तक "श्री सत्य साई बाबा अ युगावतार" में अपने उस स्वप्न का विस्तृत वर्णन किया है जिसमें स्वामी ने उन्हें पुट्टपर्ति का भविष्य बताया है। "फ्यूचर विज़न ऑफ पुट्टपर्ति" नामक अध्याय में डॉ. हनुमन्थप्पा समझाते हैं (पृष्ठ 165–166):

> एक दिन मेरे स्वप्न में स्वामी समझाने लगे कि भविष्य में पुट्टपर्ति कैसा होगा। वे मुझे एक ऊँचे स्थान पर ले गये, और वहाँ से उन्होंने एक–एक करके अत्यंत महत्वपूर्ण विकास कार्य दिखाना शुरू किया। स्वामी का अपने प्रशांति मन्दिर वाले वर्तमान निवास से चित्रावती नदी के सामने पहाड़ी पर एक भव्य भवन में स्थानांतरित हो जाना उन कई महत्वपूर्ण चीजों में से एक था जिन्हें मैंने देखा था। पहाड़ी के चारों तरफ एक बड़ी दीवाल बनाई जा रही है (...) पूरा आंगन सशस्त्र सेनाओं द्वारा सुरक्षित किया गया है।

स्वप्न से कुछ प्रासंगिक तथ्यः

- विभिन्न देशों के भक्तों ने पुट्टपर्ति के चारों तरफ कॉलोनियाँ बना ली हैं। स्वामी पहाड़ी से नीचे आयेंगे और खुद को कई स्वरूपों में विभक्त कर लेंगे और इन कॉलोनियों में एक साथ दर्शन देनें जायेंगे।
- स्वामी स्वयं को सैंकड़ों बाबा में परिवर्तित कर लेंगे और प्रत्येक देश के प्रत्येक साई केन्द्र में दर्शन देंगे।
- अत्यंत आधुनिक सुविधाओं के साथ पुट्टपर्ति एक जीवंत और समृद्ध नगर में विकसित हो गई है, इतनी विशाल जैसे न्यूयार्क शहर।
- केवल कुछ चुने हुए भक्त ही स्वामी से मिल सकेंगे।
- भविष्य में स्वामी की एक झलक पाना भी बहुत कठिन होगा।

डॉ. के. हनुमन्थप्पा एक सम्मानित विद्वान थे। उन्हें स्वामी के अद्भुत् अनुभव हुए थे। उल्लेखित पुस्तक में उन्होंने वर्णन किया है कि किस तरह से स्वप्नों के माध्यम से स्वामी ने उन्हें जीवन के अनेक क्षेत्रों में मार्गदर्शन दिया। वास्तव में स्वामी ने स्वयं भी उनके स्वप्नों को प्रामाणिक कहा है (पृष्ठ 8)। रोचक तथ्य यह है कि 7 मार्च 2008 को महाशिवरात्रि पर स्वामी ने स्वयं इस पुस्तक का अनावरण किया था। अतः स्वामी के पुनःआगमन की घटना से भविष्य के उपरोक्त दृश्य सरलता से साकार होते दिखते हैं। स्वामी के भौतिक रूप में जाने से पहले, स्वामी के भक्त भविष्य में इस तरह का परिवर्तन होने की कल्पना आसानी से कर सकते थे। लेकिन अब क्या इन स्वप्नों को केवल काल्पनिक मानना उचित होगा? लेकिन, स्वामी के स्वप्न भक्तों की कल्पना मात्र से ही उत्पन्न नहीं होते हैं। क्योंकि स्वामी कहते हैं:

> जब मैं किसी के स्वप्न में आता हूँ तो उस व्यक्ति विशेष को कुछ सूचित करने आता हूँ। यह केवल एक स्वप्न नहीं है जिस प्रकार आमतौर पर समझा जाता है। यह मत सोचो, कि ये घटनायें जो तुम अपने स्वप्न में अनुभव करते हो तुम्हारी कल्पना की उड़ान हैं।
>
> सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भाग 4, पृष्ठ 100

स्वामी की कृपा से मुझे उन कई साई भक्तों का अनुभव सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिन्हें मेरे समान ही स्वामी की वापसी में विश्वास है। जबकि उनमें से कुछ का विश्वास है कि स्वामी पहले कि तरह नहीं रहेंगे। वे सभी सोछाते हैं कि वे बड़े पैमाने के चमत्कार करेंगे और उनकी "उपस्थिति" या "दिव्य दर्शन" बड़ी संख्या में लोगों को विश्व के अनेक स्थानों पर होंगे। कुछ भक्तों को तो स्वामी के पुनःप्रकट होने तक के स्वप्न आये हैं।

स्वामी की वापसी से सम्बन्धित जिन स्वप्नों के बारे में मुझे जानकारी है उनमें से सबसे ज्यादा जानकारी देने वाला स्वप्न श्री जाएरो बोरजास का है। 1988 में साई की शरण में आये श्री जाएरो वेनेजुएला के हैं। वे आर्लेण्डो, कोलम्बिया, मैक्सिको ओर वेनेजुएला के साई केन्द्रों मे सक्रिय सदस्य रहते हुए साई संस्थाओं मे विभिन्न पदों पर रहें हैं। वे अनेक बार प्रशान्ति निलयम की यात्रा कर चुके हैं। 1997-1998 में एक इंटरव्यू के दौरान स्वामी के आदेश पर वे एक साल तक आश्रम में रह चुके हैं। वर्तमान में वे बोगोता, कोलम्बिया में रहते हैं।

29 अप्रेल 2011 को उनको एक सुन्दर स्वप्न आया था जिसमें स्वामी ने उन्हें निर्देश दिया कि वे साई भक्तों को अवगत करायें कि मानवीय इतिहास का सबसे अलौकिक समय शीघ्र ही आने वाला है। उनके मूल स्पेनिश[1] विवरण के अनुवाद का सारांश इस प्रकार है:

> पिछली रात, घर पहुँचने के पहले, क्या होने वाला है उसके लिये तैयार रहने का कहते हुए मुझे स्वामी की आवाज का आभास होने लगा। वह आवाज मुझे पूछती जा रही थी कि क्या तुम तैयार हो? फिर यह तीव्र और तीव्र होती जा रही थी जिससे मैं शुरू में घबरा गया। मैं घर नहीं पहुँचना चाहता था क्योंकि मैं यह नहीं जानता था कि इस प्रश्न का उत्तर कैसे दूँ। मैं स्वामी को कह रहा था कि उनके पुत्र के रूप में मैं उनकी सम्पूर्ण सुरक्षा और प्रेम का पात्र हूँ। मैं उनके लिये हमेशा तैयार हूँ और मेरे प्यारे पिता और ईश्वर के रूप में उन पर मेरा विश्वास हमेशा मेरी रक्षा करता रहेगा। यह सब कहते हुए मैंने गायत्री मन्त्र का जाप शुरू कर दिया, लेकिन आवाज तब भी तीव्र होती जा रही थी। तब मैं समझ गया कि यह मुझे किसी महान और विशिष्ट चीज के लिये तैयार कर रही है।
>
> घर पहुँचने के बाद, सोने के पहले आमतौर पर जैसे मैं कार्य करता था, उसी तरह मैंने कार्य करना शुरू कर दिया। बहुत अधिक थका होने की वजह से मैं ज्यादा देर कार्य नहीं कर पाया और गायत्री मन्त्र जपते हुए सो गया। अत्यंत स्पष्ट स्वप्न में स्वामी मेरे पास आये। स्वप्न में मैं, मेरे सत्य साई बाल विकास के बच्चों के साथ था। उनमें से एक नारद नाम का बच्चा स्वामी के अनुसार उन महान ऋषि का वंशज था। तब स्वामी हमारे पास अभय हस्त मुद्रा में आये। वे अत्यन्त सुन्दर और युवा दिख रहे थे। उन्होंने हमें पाद नमस्कार दिया। और अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से यह इतना गहन अनुभव था कि मुझे लगा स्वामी वास्तव में वहाँ थे। इतना वास्तविक कि मैं शपथ पूर्वक कह सकता हूँ कि मैंने उनके भौतिक शरीर का स्पर्श किया था। स्वामी ने मुझे बताया कि वे सचमुच में जीवित हैं और उन्होंने उनका भौतिक शरीर नहीं छोड़ा है। जैसे ही उन्होंने मुझे स्पर्श किया और गले लगाया मेरी आँखों से अश्रु प्रवाहित होने लगे। तब स्वामी ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे इंटरव्यू रूम में ले गये। जैसे ही हम अंदर गये स्वामी ने मुझे पूछा, क्या तुम तैयार हो। और कहने लगे : "अब समय आ गया है और मुझे तुम्हारी आवश्यकता है। जो मैं कहता हूँ वह करने के लिये तैयार हो जाओ।" मैं इतना आनन्दित था जैसा मैं ने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था, अत्यन्त अवर्णनीय। मैंने स्वामी से कहा, "मेरा शरीर और मन आपका है, इन्हें मैं आपको समर्पित करता हूँ।" अपने हाथ फैलाते हुए मैंने उन्हें कहा कि ये उनके हाथ हैं और मेरा शरीर भी उनका है, वे जैसा चाहें इसका उपयोग कर सकते हैं। मैंने उनसे प्रार्थना की कि वे हमेशा मुझे इस चैतन्य अवस्था में रखें जहाँ मेरे स्वामी और मुझ में कोई अंतर नहीं रह जाता है। संतोष और आनन्द की इस अवस्था के साथ उस सत्य के प्रति स्थायी रूप से चैतन्य हुए बिना मैं वापस निद्रावस्था में जाना नहीं चाहता था। उन्होंने मुझे कहा, "मेरे किसी कार्य के लिये मुझे तुम्हारा पुत्र चाहिये।" तो मैंने उन्हें हाँ कहा और उनसे केवल उनकी इच्छा स्पष्ट करने के लिये कहा। जवाब में उनकी मुस्कुराहट ने मुझे दिव्य प्रकाश से भर दिया जो, मेरे पूरे व्यक्तित्व पर छा गई।

---

[1] श्री जाएरो बोरजास की अनुमति से यहाँ प्रकाशित किया है। उनके मूल स्पेनिश विवरण का अनुवाद श्री जाएरो और लेखक, दोनों के मित्र श्री एना डायज़ विएना की मदद से किया गया है।

इसके बाद वे मुझे मेरी बहन कोरो के पूजा घर में ले गये... वहाँ एक कालीन था जिस पर बैठ कर के कोरो ध्यान करतीं थीं... अंदर जाने के बाद, स्वामी स्वयं भगवान राम के स्वरूप में परिवर्तित हो गये। उन्होंने मुझसे कहा कि यह स्थान ईश्वर के नाम और प्रेम से आवृत्त है। स्वामी ने मुझे कहा कि कोरो एक महान भक्त थीं। वे हमेशा उनका जप करती रहतीं थीं और ध्यान में रहतीं थीं। वेदी के चारों तरफ घूमते हुए स्वामी आनन्द में ताण्डव नृत्य जैसा नृत्य करने लगे। उनकी आँखों से आनन्द के अश्रु प्रवाहित हो रहे थे और चमकदार प्रकाश में झिलमिलाते हुए परमानन्द छलका रहे थे। मुझे कहते हुए: "कि भगवान राम का नाम यहाँ सर्वत्र व्याप्त है, कोरो एक महान भक्त है, और उसे बहुत प्रेम और स्नेह प्राप्त है।" आनन्द की इस अवस्था में नृत्य खत्म होने के बाद वे पुनः बाबा में परिवर्तित हो गये और कहा कि मैं ईश्वर हूँ, साथ ही मैं समस्त नाम और रूप भी हूँ।

हम वापस 'इंटरव्यू–रूम' में आ गये। बाबा ने समझाया कि पवित्र हृदय वाले भक्त जब भगवान का नाम जपते हैं तो दिव्यत्व प्रकट होता है, और कोरो भगवान में लीन भक्त थीं, उनका नाम जपने वाली। इस तरह का समर्पण मुझे प्रिय है, आँखों में आनन्द के अश्रुओं के साथ यह कहते हुए... उन्होंने मुझे कहा, यह वही है जो सभी भक्तों को करना चाहिये। **फिर अपनी बात पर बल देते हुए उन्होंने मुझे कहा कि हम लोग मानवीय इतिहास की सबसे असाधारण घटना के गवाह होंगे। और यह अत्यंत शीघ्र होगा। और स्वामी की शक्ति और कीर्ति इस तरह प्रकट होगी, कि हमने ना कभी देखा होगा ना कल्पना की होगी।** वह समय नज़दीक आ रहा है...

स्वामी ने मुझसे कहा: "मेरे भक्तों को स्वप्न से जागना चाहिये। मैं शरीर या ईश्वर का एक या दूसरा रूप नहीं; बल्कि सभी नाम और सभी रूप हूँ। उस अनन्त और अपरिमित ईश्वर को किसी एक नाम या एक आकार में कैसे सीमित कर सकते हो। यह कैसे कहा जा सकता है कि मैंने आनन्द की किसी अवस्था को प्राप्त कर लिया है, या कि मैं समाधि में या महासमाधि में हूँ। जब कि, मैं ईश्वर होने के कारण हमेशा ही परमानन्द में रहता हूँ और वास्तव में मैं स्वयं परमानन्द हूँ। मैं तो वहीं हूँ जिसे तुम हमेशा से ढूँढ़ रहे थे, समस्त खुशियों और परमानन्द का स्त्रोत मैं स्वयं ही हूँ।"

"हे भक्तों, जागो, जागो, जागो... वह समय जिसके लिये महान ऋषि और साधक युगों से इंतजार कर रहे हैं... शीघ्र आ रहा है। मैं कौन हूँ, मेरे सर्वज्ञ होने की वास्तविकता, वह महानता; और महिमा पहचानो और अपने आप को उस असाधारण क्षण के लिये तैयार कर लो जो आने वाला है...*जब मैं उस तरह से वापस आऊंगा जो तुम कभी सोच भी नहीं सकते हो।* मुझ पर विश्वास करो, सम्पूर्ण विश्वास करो और समर्पण करो। शीघ्र ही मेरी महिमा और महानता को सभी लोग पहचान जायेंगे।"

"अब तुम सारे संसार में घूम–घूम कर मेरा संदेश फैलाओ। सभी को तैयार रहने के लिये कहो। यह एक महत्वपूर्ण समय और महान अवसर है। मानवीय इतिहास में कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण घटित होने वाला है।" स्वामी ने अपनी बात खत्म की और मुझे अलविदा कहा; मैंने अश्रुपूरित आँखों से उनकी बात सुनी और उनसे नहीं जाने के लिये और मुझे इस मायावी संसार में वापस नहीं छोड़ने के लिये प्रार्थना की। मैंने उनसे प्रार्थना की कि मेरा मन शाश्वत में ही लगा रहे और वे मेरी साधारण आवश्यकताओं का ध्यान रखें क्योंकि मेरे हाथ हमेशा उनकी सेवा में उपयोग किये जायेंगे। हे स्वामी, मुझे हमेशा इस प्रसन्नता और परमानन्द में रहने दीजिये, कि आप ही कर्ता हैं। हौले से उनका हाथ हिलाकर मैंने उन्हें अलविदा कहा। मैं प्रेम, आल्हाद और आनन्द के आँसुओं में भीग गया था। हे मेरे प्रिय भगवान, मैं आपको कितना प्रेम करता हूँ!

श्री जाएरो बोरजासका स्वप्न एक सुन्दर घटना के आगमन का संकेत देता है। बहुत से साई भक्तों ने उनके स्वप्नों के विवरण मुझसे साझा किये हैं, जिनमें स्वामी ने उनकी अवश्यंभावी वापसी के स्पष्ट संकेत दिये हैं। तथापि, क्योंकि ये स्वप्न स्वामी और उनके भक्तों के बीच व्यक्तिगत या प्रत्येक के लिये अलग अलग होते हैं, अतः विवरण आवश्यक नहीं है। संक्षिप्त में, वे सभी स्वप्न सम्बन्धित भक्तों को स्वामी के पुनः उसी भौतिक रूप में वापस आने के संकेत हैं। कुछ भक्तों को आश्चर्यजनक रूप से एक से स्वप्न दिखे, उन स्वप्नों में विश्व के अनेक भागों के लोग यह

दावे कर रहें हैं कि उन्हें स्वामी ने एक ही समय में विभिन्न स्थानों पर प्रकट होकर दिव्य दर्शन दिये हैं। मैं धार्मिक ग्रंथों में उल्लेखित इसी प्रकार की रोमांचकारी भविष्यवाणियों के सम्पर्क में आया हूँ। इनका विवरण आगे आने वाले अध्याय में दिया गया है।

स्वामी के पास हम सबके लिये क्या है यह समय ही बता सकता है। लेकिन विभिन्न भक्तों के स्वप्नों और अनुभवों के आधार पर मैं विश्वस्त हूँ कि हम कुछ अद्‌भुत् देखने वाले हैं।

अध्याय 6: अतुल्यनीय नाड़ी ग्रंथ

नाड़ी ग्रंथ भारतीय ऋषियों द्वारा हजारों वर्ष पूर्व ताड़पत्र पर लिखे गये पवित्र धार्मिक ग्रंथ हैं। उनमें से अधिकांशतः प्राचीन तमिल भाषा में काव्यात्मक छंदों में लिखे गये हैं। मानवता के कल्याण ओर धर्म की रक्षा के लिये इन महान ऋषियों ने इन्हें लिखा है। इन ऋषियों ने असंख्य लोगों की व्यक्तिगत विशेषताऐं, पारिवारिक इतिहास, आध्यामिक जीवन के साथ–साथ उनकी आजीविका की भविष्यवाणियाँ भी की हैं। तमिल में "नाड़ी" का अर्थ है "की खोज में"। इन नाड़ी ग्रंथों में प्रत्येक उस व्यक्ति के लिये भविष्यवाणियाँ लिखीं हैं जिसके बारे में इन्हें पढ़ा जायेगा। ऐसा इसलिये क्योंकि इन ग्रंथों में उन विशिष्ट लोगों की इन महान संतों द्वारा की गई कुछ अद्वितीय भविष्यवाणियाँ हैं जो अपने जीवन के किसी विशिष्ट समय में इन्हें खोजते हुए इन तक पहुँचेंगे। इन भविष्यवाणियों को करने वाले ऋषियों को इतनी अतीन्द्रिय दृष्टि प्राप्त थी कि उन्होंने मानवता के पूरे भविष्य की सटीक भविष्यवाणी कर दी। भारत के विभिन्न भागों के कई विद्वानों के संरक्षण में अनेक नाड़ी ग्रंथ (ताम्रपत्र ग्रंथ) हैं। इनमें से कुछ ताड़ पत्र ग्रंथों को करीब एक हजार वर्ष पूर्व चोल साम्राज्य काल में मानकीकृत, व्यवस्थित ओर वर्गीकृत किया गया था। रचनाकार ऋषियों के नाम पर आधारित अनेक नाड़ी ग्रंथ उपलब्ध हैं, जैसे अगस्त्य नाड़ी, शुक नाड़ी, ब्रह्मा नाड़ी, कौशिक नाड़ी आदि। केवल कुछ नाड़ी वाचक ही हैं जो इन नाड़ी ग्रंथों में लिखी गई काव्यात्मक भाषा की सही व्याख्या कर सकते हैं।

श्री सत्य साई अवतार के बारे में नाड़ीग्रंथों में भविष्यवाणियाँ

फरवरी 1961 की सनातन सारथी में "भगवान श्री सत्य साई बाबा की 500 साल पुरानी जन्म कुण्डली" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ था। इसमें इण्डियन एस्ट्रो ऑकल्ट रिसर्च एसोसिएशन नई दिल्ली के एक प्रसिद्ध और विद्वान सदस्य डॉ. ई. वी. शास्त्री के बारे में विस्तृत वर्णन है जिन्हें भगवान श्री सत्य साई बाबा और उनके जीवन के बारे में अद्भुत वर्णन और भविष्यवाणियों वाला कई सौ साल पुराना नाड़ी ग्रंथ ताड़ पत्र मिला था। अपनी पुस्तक "लिविंग डिव्हिनिटी" में सुश्री शकुन्तला बालु ने बंगलुरु के जानेमाने ज्योतिष विद्वान श्री गंजूर नारायण शास्त्री के स्वामित्व वाली शुक नाड़ी के ताड़ पत्र के पाठ का विवरण दिया है। ये नाड़ी पाठ भगवान श्री सत्य साई बाबा की वंशावली और उनके बारे में अनेक तथ्यों का सटीक वर्णन करते हैं। अनेक साई भक्तों ने श्री सत्य साई अवतार की भव्यता और उनके द्वारा किये जाने वाले चमत्कारों और असाधारण कार्यों का रहस्योद्घाटन करने वाले नाड़ी पाठों के बारे में लिखा है और पुष्टि की हैं।

श्री सत्य साई अवतार के नाड़ी ग्रंथों में उल्लेखित कुछ लक्षणः

ब्रह्मा नाड़ीः

- यह अवतार एक भ्रम उत्पन्न करेंगे जैसे कि वे एक साधारण मनुष्य हैं, पर्ति (पुट्टपर्ति) के निवासी, सत्य साई नारायण (श्री सत्य साई बाबा का मूल नाम), शक्ति और शिव के अवतार, शिर्डी बाबा (उनका पिछला अवतार) के अवतार, चित्रावती के तट पर स्थित पर्ति के शांत क्षेत्र में शान्तिस्वरुपा।
- श्री कृष्ण, श्री लिंग, श्री रुद्रकाली, श्री शक्ति, श्री विष्णु के अवतार।

- मनुष्य के चोले में सत्य के स्वरूप, महाराष्ट्र के शिर्डी में शिर्डी बाबा के रूप में जीर्ण–शीर्ण कपड़े पहन कर, गरीब के समान और सादगी भरा जीवन व्यतीत किया, फिर सत्य नारायण के रूप में नागशय्या के साथ एक और अवतार।
- दत्तात्रेय के समान त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) के संयुक्त अवतार।
- सत्य साई एक और अवतार प्रेम साई के रूप में लेंगे, परम गुरू का शक्ति के रूप में अवतार होगा।
- बालक सत्य साई द्वारा गुरूवार के पवित्र दिन होने की घोषणा।

अगस्त्य नाड़ीः

- वे दया के दिव्यस्वरूप हैं और संसार के पिता हैं।
- सत्य साई अवतार में पलक झपकते ही स्वस्थ करने की दक्षता होगी।
- वे बहुत सारे शिक्षा संस्थान स्थापित करेंगे, नैतिक आचरण पर साहित्य का सृजन करेंगे और सम्पूर्ण जीवन आध्यात्म पर शिक्षा देंगे।
- वे कम उम्र में ही घर छोड़ देंगे और अपने जीवन के उद्देश्य के रूप में धर्म संस्थापना में लग जायेंगे। अपने पिछले जन्म में वे शिर्डी के साई बाबा थे।

शुक नाड़ीः

- उनकी दया, प्रेम और ज्ञान से वे इस संसार में नित्यानन्द – शाश्वत आनन्द स्थापित करेंगे।
- जहाँ वे रहेंगे वह स्थान पापमोचक तीर्थस्थान हो जायेगा।
- मानवता की सेवा करके उन्हें आनन्द प्राप्त होगा।
- वे अवतारों के भी अवतार होंगे।
- वे एक अत्यन्त उच्च स्तरीय संकल्प सिद्ध हैं; और महाशक्तियों में से एक हैं, लेकिन भौतिक सम्पत्ति और यश के आकर्षण रहित।
- उनमें इच्छा–मरण प्राप्ति की शक्ति होगी और वे निर्विकल्प समाधि की अवस्था में रहेंगे, केवल धर्म के पोषण के लिये जीवित।
- उनका 'मिशन' दुखियों के दुख दूर करना होगा।
- उनका जन्म धर्म संस्थापना के लिये होगा और जिस स्थान में वे रहेंगे वह स्थान तीर्थस्थान हो जायेगा।
- वे अनेक रूप धारण करने, एक साथ कई स्थानों पर दर्शन दे सकने और कठिनाईयाँ और बाधायें दूर कर संकट मोचन में सक्षम होंगे।
- अनेक पहियों वाले वाहन के स्थान (रेल्वे स्टेशन) के पास वे अपना आश्रम (व्हाइट फील्ड आश्रम के संदर्भ में) स्थापित करेंगे और आध्यात्मिक क्षमता वाले शिक्षण संस्थान भी पुनःस्थापित करेंगे।
- जो भक्त सम्पूर्ण विश्वास के साथ उनको समर्पित होंगे, उन्हें वे विभिन्न प्रकार से अपने सर्वज्ञानी होने का परिचय देंगे और उन्हें अपने पापों से मुक्ति पाने और शांति और अच्छाई प्राप्त करने का अवसर दिया जायेगा।

- उनका यश चारों दिशाओं में फैल जायेगा और बहुत से लोग उनके पास आयेंगे। लेकिन पूर्व कर्मों के कारण सभी को उनकी कृपा प्राप्त नहीं होगी।
- वे एक महान ब्रह्मचारी हैं और दूसरों को नैतिकता स्थापित करने में मदद करेंगे। स्त्री और पुरुषों के प्रति उनका समभाव होगा। महिलाओं के बीच वे एक माँ के समान होंगे।
- वे प्रेमस्वरूप, आनन्दस्वरूप, ज्ञानस्वरूप होंगे, लेकिन जिन्हें आत्मज्ञान प्राप्त हो चुका है केवल वे ही उन्हें आनन्द के रूप में अनुभव करने में सक्षम होंगे।
- उनको अनुभव तो किया जा सकेगा लेकिन व्यक्त नहीं किया जा सकेगा; जैसे मूक भोजन तो कर सकते हैं लेकिन उसका स्वाद बयान नहीं कर सकते हैं। उनका सम्पूर्ण आत्मसंयम होगा। वे संसार को घास के तिनके की तरह देखेंगे। वे सार्वजनिक विचारों से अप्रभावित रहेंगे और वही करेंगे जो नैतिक होगा।
- वे शिर्डी साई बाबा का प्रतिनिधित्व करेंगे और शिर्डी साई बाबा से की गई प्रार्थनाओं के परिणाम स्वरूप ही उनका जन्म होगा।
- शिर्डी साई बाबा के भक्तों को वे समाधि दर्शन देंगे ; और इसी प्रकार, जब वे अपनी देह से प्रयाण कर जायेंगे, सत्य साई भक्तों को व्हाइटफील्ड में समाधि दर्शन होंगे, जिसे तीर्थस्थान का गौरव प्राप्त होगा।
- उनका जीवन उसी तरह से मानवता के कल्याण के लिये होगा जिस प्रकार से भगवद् गीता में कृष्ण ने वर्णन किया है।
- वे वृन्दावन बंगलौर में एक वृक्ष लगायेंगे और वह क्षेत्र एक सिद्ध क्षेत्र बन जायेगा और वह वृक्ष एक कल्पवृक्ष (इच्छापूर्ण वृक्ष)।
- श्री सत्य साई बाबा के दर्शन मात्र से ही शुभ फल प्राप्त होगा। उनकी कृपा लोगों को समस्याओं से उबारेगी, कठिनाइयों पर विजय दिलायेगी और उन्हें प्रशांति के पथ पर अग्रसर करेगी।
- वे एक साथ कई स्थानों पर प्रकट हो सकेंगे, जबकि वे एक ही स्थान पर होंगे वहाँ अनेक दिव्य कार्य और घटनायें होंगी।
- वे क्षमाशील और दयालु होंगे और प्रत्येक के लिये समभाव रखेंगे। भूलवश त्रुटि हो जाने पर वे ना ही भावनाओं को आहत करेंगे ना ही क्रोध करेंगे।
- अनेक बार वे परिहासपूर्वक भी कहेंगे, लेकिन वे सत्य कहेंगे। जब वे स्वयं के बारे में या अपने कार्यों के बारे में लोगों का ध्यान आकर्षित करेंगे, जो हमेशा नहीं होगा, तो वह ऐसा किसी विशेष समय में करेंगे और हमेशा धर्म की वृद्धि के लियेः जीवन के आदर्श मूल्यों की स्थापना करने और सद्भाव का वातावरण उत्पन्न करने के लिये।
- यह अवतार स्वस्थ करने की शक्ति और जल झिड़क कर स्वयं को निरोगी करने की शक्ति से युक्त होंगे। वे उपचार करने की अपनी शक्ति का उपयोग इस पृथ्वी लोक ही नहीं अपितु अन्य लोकों के जीवों और देवताओं के लिये भी करेंगे।
- साईनाथ प्रत्येक कार्य अपनी योजना के अनुसार ही करेंगे।
- उनके पास (आन्तरिक) शुद्धिकरण की प्रखर शक्ति होगी। उनकी दृष्टिमात्र या उनसे बातचीत के दो शब्द भी किसी को पावन कर सकते हैं। उनके पास आयु वृद्धि की शक्ति है।

- साई नाथ (भगवान साई) महाविष्णु स्वरूप हैं।
- अधिक आयु होने के बावजूद भी सत्य साई बाबा हमेशा युवा दिखेंगे।

समस्त नाड़ी ग्रंथों में इस बात पर जोर दिया गया है कि श्री सत्य साई बाबा सर्व देवता स्वरूप हैं। आज हम जो वर्णन देखते या सुनते हैं उन सबका प्रत्येक नाड़ी ग्रंथ में विस्तृत वर्णन किया गया है। शुक नाड़ी में एक और रोचक भविष्यवाणी दी है, कि ये श्री सत्य साई बाबा अवतार एक पवित्र दिन "स्वर्णिम आदित्य रथम्" पर आरूढ़ होंगे और भक्तों के द्वारा शोभा यात्रा निकाली जायेगी। दिन, जिसका उल्लेख किया गया था वह था, ईश्वर नामक वर्ष[1] में, सोमवार को, कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि को, भाद्रपद[2] माह में। शुभ समय जिसकी भविष्यवाणी की गई थी वह था करीब सुबह 7 बजे का। वर्ष 1971 में पादुका–महोत्सव[3] के दौरान, श्री सत्य साई पादुका ट्रस्ट के अध्यक्ष, श्री सुब्रमण्यन चेट्टियार की अगुवाई में मदुरै, तमिलनाडु के भक्त स्वामी के लिये एक स्वर्ण रथ लाये। रथ में स्वर्ण छत्र वाला एक सिंहासन ओर उसके पीछे सूर्य देवता का एक विशाल चक्र था। शिव–शक्ति के अवतार के रथ पर शिव–पार्वती की स्वर्ण प्रतिमा रखी गई थी। सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा इस रथ के सारथी थे। ठीक उसी दिन, जिस दिन का नाड़ी ग्रंथ में उल्लेख था अर्थात् सोमवार 22 सितम्बर 1997 को यह असाधारण ऐतिहासिक घटना घटित हुई। भक्तों, विद्यार्थियों और विद्वानों से घिरे हुए भगवान उनके दिव्य निवास से बाहर आकर पारम्परिक वाद्य ध्वनियों और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सुबह 7:05 बजे रथ पर सवार हुए। सूर्योदय की स्वर्णिम किरणों से आलोकित अपनी अद्भुत शोभा के साथ रथ पर सवार होकर स्वामी प्रशान्ति मन्दिर की ओर चल दिये।

हजारों साल पहले ही इन नाड़ी ग्रंथों ने श्री सत्य साई अवतार की शोभा और गरिमा की सटीक भविष्यवाणी कर दी थी। विभिन्न नाड़ी ग्रंथों में की गई कुछ भविष्यवाणियाँ निकट भविष्य के उज्वल समय की ओर संकेत करती है जिस दौरान पूरे संसार को स्वामी की शक्ति का ज्ञान हो जायेगा और उन्हें महान सम्राट की तरह पूजा जायेगा।

- जब कलियुग का प्रभाव और तीव्र हो जायेगा तब लोगों को उनकी वास्तविक शक्ति का ज्ञान होगा और तब लोग स्वीकार करेंगे कि स्वामी सर्वोच्च शक्ति हैं। तब मानव समाज उनके प्रति महान सम्राट की तरह नतमस्तक हो जायेगा।
- एक हवाई जहाज का ईंधन खत्म होने के बाद भी वे उसे अपनी इच्छाशक्ति से लम्बे समय तक उड़ता रखेंगे।
- समय आने पर वे धर्म ध्वजा फहरायेंगे और उसके बाद धर्म की वृद्धि स्पष्ट तौर पर दृष्टिगोचर होगी।
- वर्तमान में वे उनकी वास्तविक शक्ति का केवल दसवां भाग ही प्रदर्शित कर रहे हैं। कुछ समय बाद विश्व को बचाने के लिये इनके प्रयास 10 गुणा बढ़ जायेंगे। वे दिखा देंगे कि प्रकृति के क्रोध को केवल वे ही नियंत्रित कर सकते हैं।
- अब अधर्म तीन–चौथाई अनुपात में पनप चुका है। जब यह एक चौथाई और बढ़ जायेगा तब सब तरफ अधर्म हो जायेगा, तब श्री सत्य साई बाबा की पूरी शक्ति का आगमन होगा और पूरे संसार को ज्ञात होगा। उनकी दिव्य शक्ति का पूर्ण अनुभव होने के पहले अधर्म को अपने चरम तक पहुँचना होगा।

---

[1] भारतीय पंचांग कैलेण्डर में 60 वर्षों में से एक

[2] भारतीय पंचांग कैलेण्डर में छठवां माह अर्थात 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर

[3] एक त्यौहार जिसमें भगवान द्वारा धन्य की गई पादुकाओं का पूजन किया जाता है।

- थोड़े ही समय में उनकी महिमा फैल जायेगी और फिर सत्य साई की आराधना सम्पूर्ण संसार करेगा।

नाड़ी ग्रंथों के सम्बन्ध में मेरा अनुभव

मेरे अपने निजी अनुभवों के अनुसार, 'नाड़ी ग्रंथ फल–पाठ'[1] बहुत ही सटीक और विश्वसनीय हैं, बशर्ते "रीडिंग" किसी अतिनिपुण नाड़ी ग्रंथ ज्योतिष ने की हो। मैंने स्वयं 1997-98 में दक्षिण भारत के एक नाड़ी ज्योतिष केन्द्र में महान सप्त ऋषियों में से एक, महर्षि अगस्त्य द्वारा लिखित प्रसिद्ध अगस्त्य नाड़ी ग्रंथ में मेरा नाड़ी ग्रंथ पाठ करवाया था। मैं नाड़ी ग्रंथ की विशुद्धता से चकित था। उसमें मेरे माता पिता का नाम, उनकी आजीविका, मेरे बचपन की विस्तृत जानकारियाँ और उस समय मेरी स्थिति के बारे में जानकारियाँ शामिल थीं। इसमें मेरी जिन्दगी में होने वाली समयबद्ध घटनाओं के साथ ही मेरे भविष्य के बारे में विभिन्न भविष्यवाणियाँ थीं। इन नाड़ी ग्रंथ पाठों में सबसे अधिक उल्लेखनीय "रीडिंग्स" मेरे गुरु श्री सत्य साई बाबा के बारे में हैं।

ये "रीडिंग्स" इस प्रकार हैं:

> तुम्हारे एक गुरु हैं। उनके तीन अवतार हैं। पहला अवतार महाराष्ट्र राज्य (शिर्डी) में था। वर्तमान में वे उनके द्वितीय अवतार में आन्ध्र प्रदेश में हैं। इस अवतार में वे शिव–शक्ति स्वरूप में हैं। उनका नाम श्री सत्य साई बाबा है। उनका तीसरा अवतार कर्नाटक राज्य में होगा। इस अवतार में वे प्रेम साई नाम धारण करेंगे (...) तुम अपने गुरु से स्वप्न में मार्ग दर्शन प्राप्त करोगे।

मैं यहाँ स्पष्ट करना चाहता हूँ कि ऐसा कोई भी तरीका नहीं था जिससे वे नाड़ी ज्योतिष यह जानकारी ले सकते थे कि मैं साई भक्त हूँ। बाद में अनेक साई भक्त वहाँ गये और उन्होंने बताया कि उनकी नाड़ी "रीडिंग्स" भी बिल्कुल सही थी। मेरे जीवन में अब तक सभी भविष्यवाणियाँ उसी प्रकार फलित हुई हैं जिस प्रकार से नाड़ी ग्रंथों में लिखा था। इनमें मेरा विवाह, बच्चे, आजीविका, यात्रायें, आध्यात्मिक जीवन आदि जानकारियाँ शामिल हैं।

ये नाड़ी ग्रंथ स्वामी के अन्तर्ध्यान होने और उनकी सन्निकट वापसी के बारे में क्या कहते हैं? कृपया पढ़ते रहें।

नाड़ी ग्रंथों की भविष्यवाणियाँ: स्वामी वापस आयेंगे!

स्वामी के भौतिक देह त्यागने के एक माह बाद तमिलनाडु में मदुराई की एक साई भक्त सुश्री वसंता साई जानना चाहतीं थीं कि नाड़ी ग्रंथों में स्वामी के समय पूर्व प्रयाण के बारे में क्या लिखा है। उन्होंने अपने एक सहयोगी को तमिलनाडु में मन्दिरों की नगरी वैदीश्वरनकोइल भेजा, जहाँ कई नाड़ी ग्रंथ सुरक्षित हैं। जो जानकारी प्राप्त हुई वह अत्यंत अद्‌भुत् थी। सुश्री वसंता साई के स्वयं के शब्दों में:

[1] "नाड़ी रीडिंग्स"

एस.वी.[1] शीघ्र गये, कुछ नाड़ी ग्रंथ देखे और मुझे सम्पर्क किया। उन्होंने बताया कि सभी नाड़ी ग्रंथ कहते हैं कि , "स्वामी शीघ्र वापस आयेंगे" (...) एस, वी, को अनेक नाड़ी ग्रंथ मिले। उनमें से प्रत्येक ग्रंथ ने उस बात की पुष्टि की जो स्वामी ने मुझे ध्यान में बताई थीः "वे फिर वापस आयेंगे" (...) एस. वी. जुलाई अंत में फिर वापस गये और स्वामी के सम्बन्ध में कुछ और नाड़ी ग्रंथ पाठ करवाये। इन सभी नाड़ी ग्रंथों ने एक ही रहस्योद्घाटन कियाः स्वामी आ रहें हैं।

सुश्री वसंता साई एक सिद्धात्मा हैं। एक ऐसी साई भक्त जिन्हें उनके भगवान श्री सत्य साई बाबा के अनगिनत दिव्य दर्शन, स्वप्न और उनकी अद्भुत कृपा के चमत्कारिक अनुभव हुए हैं। भगवान श्री सत्य साई बाबा के प्रति सुश्री वसंता साई की भक्ति और प्रेम ने उन्हें आध्यात्मिक संसार में राधा–तत्व का उदाहरण बना दिया है। सुश्री वसंता साई ने स्वामी के बारे में और अध्यात्म के अनेक पहलुओं पर पर पुस्तकें लिखीं हैं। "लिबरेशन! हिअर इटसेल्फ! राइट नाउ!" नामक उनकी पहली पुस्तक 1997 में प्रकाशित हुई थी। पूर्व में मैंने उल्लेख किया है कि किस प्रकार से स्वर्णिम सूर्य रथ के बारे में नाड़ी ग्रंथों में की गई भविष्यवाणियाँ सही सिद्ध हुई थीं। श्री सत्य साई पादुका ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुब्रमण्यन चेट्टियार की अगुवाई में मदुराई के भक्त स्वामी के लिये स्वर्ण रथ लाये थे। भगवान श्री सत्य साई बाबा ने 7 मई 1997 को मदुराई में श्री सुब्रमण्यन चेट्टियार का घर अपने चरण कमलों से पवित्र किया था। वहाँ उन्होंने सुश्री वसंता साई की पुस्तक की पाण्डुलिपि पर हस्ताक्षर करके उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया था। उनको प्राप्त दिव्य दर्शनों ओर अनुभवों की प्रामाणिकता का यह पर्याप्त प्रमाण है। वर्तमान में वे मदुराई के पास अपने आश्रम "मुक्ति निलयम" (अर्थात् मुक्ति का स्त्रोत) में निवास करतीं हैं। उनका आश्रम आध्यात्मिक आनन्द का एक स्त्रोत है और जरूरतमन्दों को निःशुल्क भोजन, आवास, दवा और शिक्षा प्रदान करता है।

सुश्री वसंता साई ने स्वामी के पुनःआगमन के बारे में नाड़ी ग्रंथों के लेखों को एक पुस्तक "सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स" (पावन नाड़ी ग्रंथ पाठ) में अनुवादित और संग्रहित किया है।

इस पुस्तक में सुश्री वसंता साई स्पष्ट करतीं हैंः

भगवान श्री सत्य साई बाबा साधारण अवतार नहीं हैं। सभी सोचते हैं कि उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया है। केवल सामान्य लोग ही नहीं जो भक्त उनके नजदीक थे वे भी इसी प्रकार से सोचते हैं। यह सही है कि उन्होंने भौतिक शरीर छोड़ दिया है। फिर भी यह भी सही है कि वे पुनः इसी रूप में वापस आयेंगे।

उनकी पुस्तक "सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स"[2] से इन नाड़ी ग्रंथों के कुछ अंश निम्नलिखित हैंः

इस नाड़ी को देखते समय उनकी देह अब नहीं है। लेकिन कुछ भ्रम है। **उनकी देह यहाँ नहीं है, फिर भी उनकी देह यहाँ है।** वे एक बार फिर वापस आयेंगे और उस देह को धारण करेंगे, जो उन्होंने अपनी देह छोड़ने के पहले तैयार की हुई है। (राजऋषि विश्वामित्र नाड़ी, नाड़ी ग्रंथ 25 मई 2011 को पढ़ा गया) पृष्ठ 8.

---

[1] सुश्री वसंता साई के एक सहयोगी श्री के. एस. वेंकटरमण

[2] "सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स"– सुश्री वसंता साई द्वारा संग्रहित, श्री वसंता साई बुक्स एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुक्ति निलयम, 2011 (www.mukthinilayam.org)

वह देह जिसने इतने महान कार्य किये हैं और वह देह जो सभी ने अभी तक देखी है वह उनकी असली देह नहीं है। यह माया देह है (...) पूर्णिमा के दिन शनि के तुला राशि में प्रवेश करने के बाद ईश्वर अपने वर्तमान स्वरूप में दर्शन देंगे। यह उनकी (स्वामी की) वास्तविक देह का दर्शन होगा। इसे अनेक लोग देखेंगे जो अत्यधिक आश्चर्य और श्रद्धा से भर जायेंगे। (अगस्त्य नाड़ी, नाड़ी ग्रंथ 27 मई 2011 को पढ़ा गया) पृष्ठ 20.

यद्यपि उनकी आत्मा उनकी भौतिक देह छोड़ गई है वही आत्मा पुनः आयेगी और पुनः उसी भौतिक रूप को धारण करेगी। यही नियति है (...) वे वृद्ध देह या एक युवा देह में ही नहीं, बल्कि अधेड़ उम्र वाली देह में होंगे। (राजऋषि विश्वामित्र नाड़ी, नाड़ी ग्रंथ 31 मई 2011 को पढ़ा गया) पृष्ठ 86.

(...) अभी इस समय, ईश्वर उनकी भौतिक देह में नहीं हैं। वे नई देह में पुनः वापस आयेंगे। (भृगु नाड़ी, नाड़ी ग्रंथ 31 मई 2011 को पढ़ा गया) पृष्ठ 96.

इस नाड़ी ग्रंथ का पाठ करते समय वे आत्मिक अवस्था में हैं (...) उनकी सांसारिक देह नहीं है। वे पृथ्वी लोक में पुनः वापस आयेंगे (...) यही उनकी नियति है (...) 88 वर्ष की उम्र में संसार के लोग उन्हें बिना किसी संदेह, कलंक या दोषारोपण के स्वीकार कर लेंगे। वे सात वर्ष रहेंगे। (गोरख नाड़ी, नाड़ी ग्रंथ 14 जून 2011 को पढ़ा गया) पृष्ठ 26.

जब वे यहाँ अवतरित होंगे,तब उनकी देह 58 से 60 वर्ष की उम्र वाली होगी। वे इस पृथ्वी पर इस उम्र की देह में पुनर्जन्म लेंगे। तभी वे स्वयं को संसार के सामने प्रकट करेंगे और सभी लोग उनका सत्य जान पायेंगे। (मच्छमुनि नाड़ी, नाड़ी ग्रंथ 5 अगस्त 2011 को पढ़ा गया) पृष्ठ 102.

जिस प्रकार इस पुस्तक "सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स" में व्याख्या की गई है, इन नाड़ी ग्रंथों में कई और आश्चर्यजनक विवरण दिये गये हैं। यद्यपि प्रत्येक ऋषि ने स्वामी के अन्तर्ध्यान होने की घटना के प्रति अपने दिव्यबोध के अनुसार विभिन्न दृष्टिकोण दिये हैं। इसी तरह स्वामी की प्रतिक्षित वापसी के समय के बारे में की गईं भविष्यवाणियाँ भी एकमत नहीं हैं। इनमें से कुछ नाड़ी ग्रंथ अलग ज्योतिष योग या आकाशीय घटनाओं को सन्दर्भित करते हैं, जिनके घटित होने के बाद स्वामी स्वयं को अपने नये भौतिक शरीर में प्रकट करेंगे। क्योंकि नाड़ी ग्रंथ कई बार गूढ़ भाषा का प्रयोग करते हैं इसलिये स्वामी के पुनः आगमन के बारे में एकदम सही समय का निरुपण करना कठिन हो सकता है। शुक नाड़ी और राजऋषि विश्वामित्र नाड़ी ग्रंथ उनके पुनः प्रकटीकरण के लिये 86 वर्ष की उम्र का उल्लेख करते हैं। जबकि गोरख नाड़ी ग्रंथ 88 वर्ष की उम्र का संकेत करती है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या ये उम्र सम्बन्धी भविष्यवाणियाँ उन वर्षों को जोड़कर या घटाकर है जितने समय स्वामी उनकी भौतिक देह से बाहर हैं। चाहे कुछ भी हो 86 ओर 88 दोनों उम्र उस समय सीमा में आती हैं जिसे पृथ्वी पर स्वामी के जीवनकाल के बारे में "स्वामी की वार्तायें" नामक अध्याय में सुझाया गया है (कि यह समय जुलाई 2012 और अप्रेल 2014 के बीच का हो सकता है)।

नास्त्रेदमस की रहस्यमय भविष्यवाणियाँ

अधिकांश साई भक्त नास्त्रेदमस[१] की श्री सत्य साई अवतार के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणियों से परिचित हैं। इनमें से दो भविष्यवाणियाँ विशिष्ट हैं:

जल की तिकड़ी जन्म देगा एक मनुष्य को
चुनेंगे गुरूवार को पवित्र दिन वो अपना
उनकी वाणी, साम्राज्य और शक्ति बढ़ेंगे
थल और जल के पार, पूर्व में तूफानों के मध्य
–छंद 1:50

धरती और हवा में हर तरफ होगा जल ही जल,
जब सब आयेंगे आराधना करने गुरूवार को.
क्या होगा जो पहले नहीं था इतना सुन्दर,
संसार के हर भाग से वो आयेंगे शीश झुकाने उनको
–छंद 10:71

यह पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि ये दोनों भविष्यवाणियाँ श्री सत्य साई बाबा के बारे में हैं। "जल की तिकड़ी" से तात्पर्य एक ऐसे स्थान से है जो तीनों तरफ से जल से घिरा हो। भारतीय उपमहाद्वीप विशेषकर इसका दक्षिणी हिस्सा बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिन्द महासागर से घिरा हुआ है। यह भविष्यवाणी बताती है कि किस प्रकार से पूरे संसार से लोग ईश्वर के समक्ष यहाँ शीश झुकाने आयेंगे।

जहाँ कहीं भी "साई का अवतरण" एक विषय होता है वहाँ नास्त्रेदमस के ये छंद साई–साहित्य का हिस्सा होते हैं। मैं इनके सम्पर्क में कई बार आया हूँ। फिर भी, उन भविष्यवाणियों की एक पंक्ति मेरे लिये हमेशा से पहेली रही है क्योंकि मैं उन्हें साई अवतार की किसी भी घटना से सम्बध्द नहीं कर पाया हूँ। यह पंक्ति है "धरती और हवा में हर तरफ होगा जल ही जल, जब सब आयेंगे आराधना करने गुरूवार को"। ऐसा विश्वास किया जाता है कि नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों में एक ही छंद में भविष्यवाणी के उद्देश्य की पहचान और महत्व से सम्बन्धित घटनाएँ होती हैं। मैने हमेशा से ही ऐसा विश्वास किया था कि यह भविष्य की किसी घटना, संभवतः पानी से सम्बन्धित कोई असाधारण प्राकृतिक घटना हो सकती है। फिर भी, यह भविष्यवाणी हमेशा से पहेली ही थी। लेकिन तब तक ही, जब तक स्वामी की वापसी के बारे में निम्नलिखित भविष्यवाणी मैंने देखी नहीं थी:

(...) इस दिन, तुम जहाँ भी देखोगे हवा और पानी होगा। तब आन्ध्रप्रदेश में प्रशान्ति निलयम में स्वामी उनके स्वरूप में ही आयेंगे।

(कागभुजंगर नाड़ी, नाड़ी पाठ 24 मई 2011 के दिन किया गया)–पृष्ठ 7

[१] नास्त्रेदमस के नाम से प्रसिध्द 'मिशेल दि नास्त्रेदम' 16 वीं सदी के एक फ्रांसीसी अध्यात्मवेत्ता थे। इतिहास प्रसिध्द उनकी भविष्यवाणियाँ आज भी उतनी ही लोकप्रिय हैं। उनकी भविष्यवाणियाँ छंद रूप में 100 के समूह (सेंचूरीज़ या शतक) में हैं।

क्या यह विस्मयकारी नहीं है? हालाँकि, एक सीमा के बाद सभी भविष्यवाणियाँ और अनुमान अप्रासंगिक हो जाते हैं क्योंकि केवल स्वामी ही जानते हैं कि कब और कैसे कार्य होगा। जो ज्ञात है, वह यह है कि स्वामी के श्री सत्य साई बाबा वाले रूप में ही उनकी इस पृथ्वी लोक में वापस आने का सभी नाड़ी ग्रंथ संकेत करते हैं। कुछ नाड़ी ग्रंथ विशेष रूप से यह उल्लेख करते हैं कि उनकी नई देह युवा या अधेड़ उम्र की होगी। आइये हम सभी प्रार्थना और इन्तजार करें, मानवीय इतिहास में होने वाले अब तक के सबसे बड़े चमत्कार और अत्यन्त विस्मयकारी घटना के लिये। आज पूरे संसार की जो स्थिति हम देख रहे हैं यह घटना इसे हमेशा के लिये बदल देगी!

(कुछ पाठकों के लिये यह रुचिकर हो सकता है कि मैंने अपने अगस्त्य नाड़ी पाठ (1997-98) में से एक विशेष भविष्यवाणी का उल्लेख किया है, जो आगे इस तरह से हैः "तुम अपने गुरू (श्री सत्य साई बाबा) के बारे में किताबें लिखोगे और उन्हें (भारत के) बाहर वितरित भी करोगे"। वस्तुतः अभी तक यह मेरी पहली पुस्तक है; लेखन के मेरे सीमित अनुभव को देखते हुए, जिसे मैंने कभी दिवास्वप्न समझा था, मैं उल्लेखनीय उपलब्धि का एहसास कर रहा हूँ। आश्चर्यजनक रूप से एक और नाड़ी ग्रंथ पाठ यह भी कहता है कि मैं नाड़ी ग्रंथों की महानता के बारे में लिखूँगा। यह पुस्तक उस भविष्यवाणी को भी पूरा करती है। धन्य–धन्य, हे अतुल्यनीय नाड़ी ग्रंथ !!!)

अध्याय 7: हजरत महदी का अन्तर्ध्यान होना

हजरत महदी कौन हैं?

इस्लामिक परम्परा में महदी (या मेहदी) एक मसीहा जैसी शख्सियत हैं जिनके बारे में माना जाता है कि वे इस संसार में भविष्यवाणी किए गए "निर्णय के दिन"[१] के पहले आयेंगे। कई मुसलमान मानते हैं कि अल्लाह उनके सन्देशवाहक महदी को मानवीय इतिहास के सबसे कठिन दौर में इस संसार में आस्था को जागृत करने और शांति बहाल करने के लिये भेजेंगे। महदी नाम के लिये कई अर्थ दिए गए हैं जिसमें "पथ प्रदर्शक", "संकटमोचक", और "वादा किया हुआ गुरू" शामिल हैं। शिया परम्परा में उन्हें कई बार कईम या अल–कईम (अर्थात् "वह जो सत्य के लिये खड़ा हुआ हो") की तरह कहा गया है। "अल–महदी", "हजरत महदी", और "महदी मउद" वे अन्य नाम हैं जिनसे साधारणतः महदी को संबोधित किया जाता है।

महदी को पहचानने के चिन्ह

श्री सत्य साई इंस्टीट्यूट ऑफ हायर लर्निंग की सुश्री जेबा बशीरुद्दीन, श्री सत्य साई बाबा की श्रेष्ठ भक्त हैं। उन्होने "हजरत मेहदी और बाबाः भविष्यवाणी का सत्य" नामक एक खोजपरक लेख लिखा था। जो नवम्बर 1991 की सनातन सारथी में प्रकाशित हुआ था। इस लेख में उन्होने इस बात पर प्रकाश डाला कि हजरत मेहदी के बारे में की गई भविष्यवाणियाँ श्री सत्य साई बाबा पर पूरी तरह ठीक बैठतीं हैं। उनके अनुसारः

> सारे संसार के मुसलमान एक महान पथप्रदर्शक के अवतरण में विश्वास करते हैं। वे सब उन्हें महदी (मालिक) के नाम से जानते हैं। पैगम्बर हजरत मोहम्मद ने संकेत दिया था कि 1400 हिजरी (अभी समाप्त हुआ है)[२] के अंतिम दशक में मुसलमानों के कल्याण के लिये हजरत मेहदी का अवतरण होगा। यह कठिनाईयों और भौतिकतावाद का दौर होगा। पवित्र कुरान में बताए गये मूल्यों और उनके पालन करने की उपेक्षा होगी और मनुष्य का हृदय संसार और उसके आकर्षण की और मुड़ जायेगा, कुरान की भाषा में "दूसरे आराध्य"। भविष्यवाणी आगे कहती है कि हजरत महदी सत्य को स्थापित करेंगे और सम्पूर्ण संसार का धर्म "इस्लाम"[३] होगा।

इस्लामिक परम्परा में अनेक "हदित" (या "हदीस")[४] हैं जो प्रतिक्षित महदी के बारे में पैगम्बर मोहम्मद के वर्णन का उल्लेख करती है। महदी के व्यक्तित्व और समय से सम्बन्धित 150 से अधिक विभिन्न चिन्हों के बारे में पवित्र पैगम्बर से चौथे खलीफा और सूफी रहस्यों के ज्ञाता हजरत अली तक ने इन चिन्हों का जिक्र किया है। ये चिन्ह इमामों, हजरत अली के वंशजों के संरक्षित खजाने बन गये और पैगम्बर की लोकोक्तियाँ शिया परम्परा (मुख्यतः ईरान) का हिस्सा बन गये। इन चिन्हों को प्रसिध्द विद्वान मो. बकिर बिन

---

[1] कयामत का दिन

[2] पुस्तक के हिन्दी अनुवाद के समय अप्रेल 2013 में वर्तमान हिजरी सन् 1434 चल रहा है।

[3] "इस्लाम" का मूल अर्थ शांति होने के कारण, इसका अर्थ सम्पूर्ण संसार में शांति छा जाने से लगाया जा सकता है।

[4] पैगम्बर मोहम्मद के कार्यों और वक्तव्यों के वर्णन के लिये इस्लामिक शब्दावली में "हदित" शब्द का उपयोग किया जाता है।

मो. तकी–अल मजलिसी–अल इसफाहनी (1627-1698) ने 17वीं ईस्वी सदी में अरबी में लिखी अपनी विशाल पुस्तक बिहार–उल–अनवर में संग्रहीत किया था।

बिहार–उल–अनवर के पर्सियन[1] अनुवाद से ली गईं इस्लाम के पैगम्बर की इनमें से कुछ लोकोक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैंः एक लम्बे समय तक उनके अवतरण के बारे में अनेक मुसलमानों को जानकारी नहीं हो पाएगी। वह पवित्र आत्मा दो परिधान धारण करेगी, एक आंतरिक और दूसरा बाह्य (पृष्ठ 239)। नारंगी रंग का वह परिधान इस आकार का होगा कि उनकी पीठ की बाह्य रूपरेखा स्पष्ट दिखाई देगी (पृष्ठ 292, 777)। उनका नारंगी रंग का वस्त्र लोगों के मध्य प्रकाश फैलायेगा (पृष्ठ 245)। उनके घने और काले बाल उनके कंधों तक पहुँचेंगे (पृष्ठ 25)। उनकी भौहें मध्य में मिली हुई होंगी (पृष्ठ 242)। उनके दूसरे विशेष गुण हैंः चौड़ा और साफ माथा (पृष्ठ 263)। प्रारंभ में गहराई लिये हुए सीधी नाक, गाल पर एक तिल, हजरत मोसा की याद दिलायेगा, सितारे की तरह चमकते दाँत, सामने के दो के मध्य स्थान (पृष्ठ 243), काली आँखें (पृष्ठ 777)। यहूदियों की ऊँचाई की तुलना में मध्यम ऊँचाई (पृष्ठ 239)। चेहरे का रंग स्वर्णिम–कांस्य सिक्के समान अधिकांशतः वर्णित किया गया है; इतना तेजमय कि उसका वास्तविक रंग पहचानना असंभव है (पृष्ठ 262-293)। उनके प्रति सामान्य भावना; करूणा से भरपूर, शालीन, उन्नत (पृष्ठ 239)।

उनका दृष्टिकोण प्रत्येक के प्रति भातृत्व भाव लिये होगा, जैसे कि वे उनसे भलीभाँति परिचित हों (पृष्ठ ३१४)। वे सभी पैगम्बरों और सन्तों को प्रेम करेंगे; और वे जो भी चाहेंगे पूर्ण किया जाएगा। वे समस्त विरोधों पर विजय प्राप्त कर लेंगे (पृष्ठ २४२)। उनके अनुयायियों को संरक्षण प्राप्त होगा (पृष्ठ ३४२)। लोग उनको स्वर्गिक परम–आनन्द के मानवीकरण के रूप में देखेंगे (पृष्ठ ३४१)। निःशक्तों और त्यागे गये लोगों के लिये वे छत्रछाया होंगे (पृष्ठ २३५)। प्रातःकाल और सायंकाल लोगों को वे अबिए–ए–तुहुर कौस्र (आध्यात्मिकता) प्रदान करेंगे (पृष्ठ ३४३) (यह बाबा के प्रतिदिन दर्शन देने से संदर्भित है)। उनसे दिव्य ज्योति का सृजन होगा (पृष्ठ २५२)। वे नये धर्म का प्रारम्भ नहीं करेंगे (पृष्ठ ६) (बाबा ने कई बार विशेष बल देकर कहा है कि वे किसी नये धर्म का प्रवर्तन करने नहीं आये हैं)। सभी तरह का ज्ञान और सभी धर्मों का सार उनके हृदय में उसी तरह पुष्पित होंगे जैसे कि नया बगीचा हो (पृष्ठ २३८)। वे पृथ्वी को शांति से भर देंगे। वे एक मित्र और सलाहकार होंगे (पृष्ठ २८७)। हे मुसलमानों, यह ज्ञात हो कि जिसका जन्म तुमसे छिपाया गया है वे ही तुम्हारे मालिक हैं। **वे महदी हैं** (पृष्ठ २९२)[2]।

बिहार उल अनवर पुस्तक में दिये गये अन्य संकेतः वे उपहार प्रदान करेंगे जो वजन में हल्के होंगे। वे अपने अनुयायियों के बीच घूमेंगे और उनके मस्तक को अपने हाथ से स्पर्श करेंगे। मनुष्य ही नहीं देहविहीन आत्माएँ भी, हर आँख जो उनको देखेगी प्रसन्न होगी। **वे ९५ वर्ष तक जीवित रहेंगे।** उनके जीवन के अंतिम २० वर्षों में वे सम्पूर्ण विश्व के सम्राट होंगे, लेकिन उस समय दो–तिहाई विश्व ही उनका विश्वास करेगा। **संसार से उनके जाने के केवल ९ वर्ष पहले** ही मुसलमान उनको पहचान पायेंगे। वे संसार को प्रसन्न और शांतिमय कर देंगे। इसलिये छले जाने के लिये नहीं, तुम्हें जान लेना चाहिये कि संसार का मालिक उनके शरीर से वस्तुएँ बाहर निकालेंगे, उनके मुख से (शिवरात्री के दौरान स्वामी के मुख से शिवलिंगम के आविर्भाव से संदर्भित?)।

उनकी पुस्तक, "द हार्ट ऑफ साई" में आर. लोवेनबर्ग कहते हैं कि वे आश्रम में "ईरानी माँ" के नाम से जानी जाने वाली एक ईरानी महिला से मिले जिन्हें महान पथप्रदर्शक के आगमन के बारे में (बिहार उल अनवर में)

---

[1] ईरान की एक भाषा

[2] संदर्भः

अ. इन सर्च ऑफ साई डिवाइन, सत्यपाल रुहेला, एम. डी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 1996.

ब. गॉड डिसेन्डस् ऑन अर्थ, संजय कान्त द्वारा, श्री सत्य साई टॉवर्स प्रा. लिमिटेड.

पैगम्बर मोहम्मद की भविष्यवाणियाँ मिलीं थीं। लोवेनबर्ग को उन्होंने कई पहचान चिन्हों के बारे में बताया जो श्री सत्य साई बाबा के विशिष्ट लक्षणों के समान हैं। स्वामी महेश्वरानन्द ने उनकी पुस्तक "साई बाबा और नर नारायण गुफा आश्रम" में उल्लेख किया है कि पैगम्बर मोहम्मद की भविष्यवाणियों को ईरानी माँ पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाना चाहतीं थीं, लेकिन स्वामी ने उन्हें आज्ञा नहीं दी।

बहुत बड़ी संख्या में ईरानी भक्तों का पुट्टपर्ति आना ही बिहार–उल–अनवर में की गई भविष्यवाणियों के प्रामाणिक होने और उन भविष्यवाणियों के श्री सत्य साई अवतार के व्यक्तित्व, लक्षणों और उद्देश्यों पर केन्द्रित होने का संकेत करता है। वे सभी चिन्ह जो पैगम्बर मोहम्मद ने मेहदी को पहचानने के लिये बताये हैं, स्वामी के भौतिक रूप और लक्षणों से पूर्णरूप से मेल खाते हैं। नाड़ी ग्रंथों की भविष्यवाणी कि "मानवता उनके सामने उसी तरह ही नतमस्तक होगी जैसे कि कोई एक महान सम्राट के प्रति होता है" के समान ही, मेहदी के बारे में भविष्यवाणियाँ उल्लेख करती हैं कि वे "समस्त संसार के सम्राट होंगे"।

पृथ्वी पर महदी का शासन

पृथ्वी पर हजरत महदी के कार्यकाल की अवधारणा पर बिहार–उल–अनवर की दो भविष्यवाणियाँ विशिष्ट रूप से सम्बद्ध हैं। एक वह जो कहती है कि हजरत महदी **95 वर्ष तक जीवित रहेंगे**। दूसरी वह जो यह उल्लेख करती है कि **संसार से उनके जाने के केवल 9 वर्ष पहले** ही मुसलमान उनको पहचान पायेंगे। यह माना कि **95** वर्ष इस्लामी कैलेण्डर[1] से हैं, यह अभी भी प्रचलित ईस्वी कैलेण्डर के 93 से 94 वर्ष के बीच है, जो स्वामी के जीवनकाल के बारे में उनके स्वयं के वक्तव्य से सामंजस्य रखती है (कृपया "पृथ्वी पर उनके जीवनकाल के बारे में स्वामी की वार्ताऐं" नामक अध्याय देखें)। दूसरी भविष्यवाणी किसी ऐसी प्रभावी घटना के होने का संकेत करती है जो संसार से हजरत महदी के अंतिम प्रयाण के 9 वर्ष पूर्व ही हजरत महदी के प्रति लोगों में आस्था उत्पन्न कर देगी। स्वामी ने अपनी भौतिक देह 85 वर्ष की उम्र में त्यागी थी। यदि हम इस उम्र में 9^2 वर्ष जोड़ें तो यह 94 हो जायेगी। "पृथ्वी पर उनके जीवनकाल के बारे में स्वामी की वार्ताएँ" नामक अध्याय में पहले ही मैं यह सुझाव दे चुका हूँ कि, चूँकि स्वामी ने विभिन्न स्थानों में 94 और 96 वर्ष की आयु का उल्लेख किया है, अतः इन दो वर्षों का अंतर उनके "देह से बाहर" रहने के समय को बताता है।

इन सभी तथ्यों पर विचार करने के बाद, यह ऐसा विश्वास करने को बाध्य करता है कि स्वामी का पुनःप्रगटीकरण ही एक मात्र ऐसा कारण हो सकता है कि सारे संसार के अधिकांश लोग उन पर आस्था रखने लगें। तब वे इस संसार में करीब 9 वर्षों के लिये होंगे। ये जानना रुचिकर होगा कि मैं कुछ इस तरह की हदीस के सम्पर्क में भी आया हूँ, जो यह उल्लेख करती हैं कि, (उनके उत्थान के बाद) हजरत महदी (9 की अपेक्षा) 7 या 8 वर्ष के लिये विश्व पर शासन करेंगे।

> हमारे महदी का चौड़ा मस्तक और सुस्पष्ट नाक होगी। जैसा कि पृथ्वी अभी अन्याय और निरंकुशता से भरी है, वे पृथ्वी को न्याय से भर देंगे। वे सात वर्ष तक शासन करेंगे।
>
> –बिहार–उल–अनवर खंड 13, भाग 2, अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ 143.

[1] इस्लामी कैलेण्डर में 354 या 355 दिन के एक साल में 12 माह होते हैं। क्योंकि 95 वर्ष की उम्र को 95 से 96 वर्ष के बीच का कोई भी समय मान सकते हैं, 355 दिन पर आधारित गणना प्रचलित ईस्वी कैलेण्डर वर्ष के 93 से 94 के बीच की उम्र देती है।
[2] या इस्लामी कैलेण्डर से गणना करते हुए 8.75 प्रचलित ईस्वी वर्ष.

(...) उनका शासन सात वर्ष, अन्यथा आठ वर्ष या अन्यथा नौ वर्ष का होगा।

–बिहार–उल–अनवर खंड 13, भाग 2, अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ 143.

(महदी) पृथ्वी को समानता और न्याय से भर देंगे, क्योंकि यह अन्याय और अत्याचार से भर जायेगी। स्वर्ग और पृथ्वी के निवासी उनसे खुश होंगे। स्वर्ग अपना कोई भी सौभाग्य नहीं छोड़ेगा बल्कि भरपूर मात्रा में नीचे उतार देगा, पृथ्वी इसे बाँटने में एक पौधे को भी नहीं छोड़ेगी, यह इतना भरपूर होगा कि जीवित लोग मृतकों का सम्मान करेंगे। वे इसमें सात या आठ या नौ वर्ष रहेंगे।

–बिहार–उल–अनवर खंड 13, भाग 2, अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ 91.

स्वामी की वापसी के बारे में नाड़ी ग्रंथों की भविष्यवाणियों से ये भविष्यवाणियाँ गजब का साम्य रखती हैं:

88 की उम्र में संसार के लोग उन्हें बिना सन्देह, कलंक या दोष के स्वीकार कर लेंगे। वे सात वर्ष रहेंगे। (गोरख नाड़ी, ग्रंथ पाठ का दिन 14 जून 2011)

–सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स, श्री वसन्ता साई, पृष्ठ 26.

वे फिर वापस आयेंगे और 7 वर्ष और रहेंगे. इन सात वर्षों में पृथ्वी पर अनेक परिवर्तन आयेंगे। (बोगर नाड़ी, ग्रंथ पाठ का दिन 25 मई 2011)

–सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स, श्री वसन्ता साई, पृष्ठ 18.

अनेक ईसाई भी विश्वास करते हैं कि आनन्द और प्रसन्न्ता का सात वर्षों का एक समयकाल होगा, जिसे अकसर "द रैप्चर्" (परमानन्द की अवस्था) कहकर उल्लेखित किया जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ईसामसीह के द्वितीय आगमन का प्रारम्भ इस काल में होगा, इसके बाद में 1000 वर्षों तक सम्पूर्ण संसार शांतिमय हो जाएगा (विस्तृत विवरण "सत्य साई स्वर्णिम युग का उदय" नामक अध्याय में देखें)।

महदी का अन्तर्ध्यान होना

एक साई भक्त के रूप में मेरे प्रारम्भिक दिनों से ही मैं स्वामी के बारे में अनेक पुस्तकें पढ़ता रहा हूँ जिनमें महदी से सम्बन्धित भविष्यवाणियाँ दी हैं। इसलिये मैं हमेशा से ही आश्वस्त रहा हूँ कि ये भविष्यवाणियाँ सत्य साई अवतार से स्पष्टरूप सम्बन्धित हैं। इस पुस्तक को लिखना प्रारम्भ करने के बाद मेरे मन में एक विचार आया कि यदि ये भविष्यवाणियाँ स्वामी के बारे में थीं, तब उन पुस्तकों में स्वामी के समय पूर्व अन्तर्ध्यान होने के बारे में भी कुछ उल्लेख अवश्य होगा। मैंने स्वयं ही यह शोध करना शुरू कर दिया कि विभिन्न हदीस इस बारे में क्या कहते हैं। मैंने बिहार–उल–अनवर के कुछ खंडों के अंग्रेजी अनुवाद प्राप्त किये और उन्हें पढ़ना शुरू किया।

उन खण्डों में जो कुछ मिला वह अविश्वसनीय था। मैं विश्वास नहीं कर पा रहा था कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। **हजरत महदी के अन्तर्ध्यान होने और उसके परिणामस्वरूप उनकी वापसी के बारे में हदीस स्पष्ट रूप से बात कर रहे थे!** हदीस कहते हैं कि महदी पृथ्वी से दो बार अन्तर्ध्यान होंगे। पहली बार लम्बे समय के लिये और दूसरी बार वास्तविकतः अन्तर्ध्यान होंगे (या मृत्यु)।

> हजरत महदी एक बार नजरों से ओझल हो जायेंगे।
>
> –बिहार–उल–अनवर खंड 13, भाग 1, अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ 133.

> वे दो बार अन्तर्ध्यान होंगे। पहली बार इतने लम्बे समय के लिये कि लोग कहेंगे कि उनकी मृत्यु हो गई है। दूसरे कहेंगे कि वे चले गये। ना तो वे जो उन्हें प्रेम करते हैं ना ही कोई दूसरा ही यह जान पायेगा कि वे कहाँ हैं (...)
>
> –अल–मुत्तकी अल–हिन्दी, अल–बुरहान फी अलमत अल–महदी

> अल्लाह कसम, वे (महदी) वर्षों के लिये अन्तर्ध्यान हो जायेंगे। वे भुला दिये जायेंगे जब तक यह कहा जायेगा कि उनकी मृत्यु हो गई है, समाप्त हो गये हैं या किसी वादी में चले गये हैं। उन पर विश्वास करने वालों कि आँखें उन पर आँसू बहायेंगी और वे उसी तरह उलट जायेंगे जैसे कि समुद्र की लहरें किसी नाव को पलटा देती हैं।
>
> –बिहार–उल–अनवर खंड १३, भाग १, अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ १८०

अनेक छंदों में महदी के लिये कईम (या अल–कईम) का उपयोग किया गया है अरबी में जिसका अर्थ है "सत्य के लिये उन्नतिशील"। यहाँ दो बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता है। पहला तो शब्द "उन्नतिशील" है जो स्पष्टतः "आरोहण" की क्रिया के लिये संकेत करता है। दूसरा, शब्द "सत्य" जो स्वामी के संक्षिप्त नाम "सत्य"[१] का मूल अर्थ है। और आगे, महदी के इस अन्तर्ध्यान होने को बिहार–उल–अनवर ग्रहण काल कहता है। आमतौर पर "ग्रहण" शब्द का उपयोग आकाशीय पिण्डों (जैसे ग्रहों) के किसी अन्य ग्रह के पीछे छिपकर अस्थाई रूप से ओझल हो जाने के लिये किया जाता है। यहाँ भी, अस्थाई रूप से महदी के किसी अज्ञात लोक में अन्तर्ध्यान हो जाने के लिये इसी शब्द का उपयोग किया गया है। इस ग्रहणकाल के बारे में विभिन्न विद्वानों की कई व्याख्यायें मैंने देखीं हैं। कुछ ऐसा भी कहते हैं कि महदी मानवता से कई सौ वर्षों के लिये छिप जायेंगे और "समय समाप्ति" ("प्रलय") होने के ठीक पहले मानवता के सामने प्रकट होंगे। लेकिन बिहार–उल–अनवर में दी गई छंदें कुल मिलाकर एक अलग ही छवि प्रस्तुत करती हैं। बिहार–उल–अनवर की सबसे ज्यादा रोचक भविष्यवाणियों में से एक यह है कि जब कईम उठेंगे, तब लोग अत्यन्त आश्चर्यचकित होकर सोचेंगे कि यह कैसे हो गया क्योंकि उनका शरीर तो कब का नष्ट हो गया होगा। यह बताता है कि मृत्यु की क्रिया से कईम की देह के ओझल हो जाने के बाद से ही उस ग्रहण की क्रिया प्रारम्भ हो जायेगी।

[1] जैसा कि सत्य नारायण या सत्य साई बाबा में

(इस अध्याय में आगे आने वाले सभी छंद, अलग से सूचित किये गये छंदों के अलावा बिहार–उल–अनवर के खण्ड 13 भाग 1, अंग्रेजी अनुवाद से लिये गये हैं।)

> जब कईम उठेंगे, लोग कहेंगे, यह कैसे हो सकता है? उनकी तो हड्डियाँ भी गल गई होंगी। (पृष्ठ 181)

> मैंने उनसे पूछा, "हे अल्लाह के संदेशवाहक के पुत्र, उन्हें कईम कहकर क्यों पुकारते हैं?" वे बोलेः "क्योंकि वे उनकी यादों की भी मृत्यु के बाद उठ जायेंगे (...)" (पृष्ठ 193)

> सावधान, उनका एक ग्रहण काल होगा जिसके दौरान अनभिज्ञ लोग भ्रमित हो जायेंगे और संदेही नष्ट हो जायेंगे और तात्कालिक कार्यवाहक झूठ बोलेंगे। और तब वे उठेंगे। (पृष्ठ 193)

> मैंने कहाः उन्हें प्रतीक्षित क्यों कहा है? वे बोलेः "उनका ग्रहण काल होगा जिसके दिन बहुत सारे होंगे और जिसकी अवधि बहुत लम्बी होगी। निष्ठावान उनके उत्थान की प्रतीक्षा करेंगे और संदेही उनका त्याग कर देंगे और अविश्वासी उनका उपहास करेंगे। (पृष्ठ 193)

उपरोक्त छंद स्पष्ट कहती है कि ग्रहणकाल लम्बा होगा और कई दिनों तक चलेगा। लेकिन, छंदों में इस बात का कहीं कोई उल्लेख नहीं है कि अंतर्ध्यान रहने का समय (ग्रहणकाल) कई सौ वर्षों का होगा, जैसा कि कई विद्वानों नें निष्कर्ष निकाला है। अन्यथा इतने लम्बे समय का उल्लेख करने के लिये छंदों में स्पष्टरूप से "वर्ष" शब्द का उपयोग किया गया होता। इसके अलावा, कृपया निम्न शब्दों पर ध्यान दें–"अविश्वासी उनका उपहास करेंगे"। वस्तुतः अनेक अविश्वासियों ने आशान्वित समय के पूर्व स्वामी के देह त्याग का असफल भविष्यवाणी कहकर उपहास किया था।

महदी कब वापस आयेंगे?

हजरत महदी की वापसी से, स्वामी के दिव्य प्रवचनों में वर्णित "स्वर्णिम युग" के समान प्रेम और शांति के एक नये युग की वापसी की उम्मीद है। इस्लामी पुस्तकों में इस दिन का उल्लेख "याम अल–कियामह" कहकर किया गया है, जिसका अरबी में मूल अर्थ "पुनः जीवित हो जाने का दिन" है। यह भी जिक्र किया गया है कि ईश्वर के अलावा कोई नहीं जानता कि यह दिन कब आएगा।

> हे अल्लाह के संदेशवाहक, आपकी सन्तान में से कईम का उदय कब होगा? वे बोलेः उनका उदाहरण **घंटे (प्रहर) के उदाहरण के समान हैः** "...कोई और नहीं बल्कि वे स्वयं इसका समय होने पर इसको सृजित करते हैं; **स्वर्ग और पृथ्वी पर यह अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा**; लेकिन यह आप पर अचानक नहीं आ जायेगा। (पृष्ठ 189)

धर्मग्रंथ कहते हैं कि महदी का पुनर्आगमन किसी अप्रत्याशित समय में अचानक होगा, जिसका समय केवल उनको ही मालूम है। यह, नये टेस्टामेंट (बाइबल का दूसरा खण्ड) में दिये गए निम्नलिखित छंदों से बहुत मेल खाता है, जो "सन ऑफ मेन"[1] (मानव के पुत्र या मानव अवतार) के आने का वर्णन करते हैं।

> अतः सावधान रहो, तुम वह दिन या वह प्रहर नहीं जानते जब मानव–पुत्र आयेगा।
>
> –मेथ्यू 25:6-13, केजेवी

> लेकिन उस दिन और उस प्रहर को कोई मनुष्य नहीं जानता, नहीं, वे देवदूत भी नहीं जो स्वर्ग में रहते हैं, पुत्र भी नहीं, लेकिन पिता जानता है।
>
> –मार्क 13:32, केजेवी

क्या हजरत महदी नये शरीर में वापस आयेंगे?

"अतुल्यनीय नाड़ी ग्रंथ" अध्याय में नाड़ी ग्रंथों में स्वामी की वापसी के बारे में उल्लेखित भविष्यवाणियाँ हम देख ही चुके हैं। कुछ नाड़ी पाठों में इस बात का भी उल्लेख है कि जब वे वापस आयेंगे, वे युवा या मध्यवय देह धारण करेंगे।

> जब वे बाहर आयेंगे, वे शान्त होंगे। वे अपने उद्देश्यपूर्ति के कार्य में उसी तरह लग जायेंगे जिस तरह से पिछले 85 वर्षों से वे कर रहे थे। हालाँकि उनकी देह युवा होगी, लेकिन देह की परिपक्वता और अनुभव 85 वर्ष का ही होगा। वे फिर वापस आयेंगे और केवल सात वर्ष और रहेंगे। (बोगर नाड़ी, पाठ करने का दिन 25 मई 2011)
>
> –"सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स", श्री वसन्ता साई, पृष्ठ 18

बिहार–उल–अनवर भी कुछ इसी तरह के अद्‌भुत संकेत देता है:

> जब तुम्हारे कईम वापस आयेंगे उनका शकुन (चिन्ह) क्या होगा? **उन्होंने जवाब दिया: वे उम्र में अधिक होंगे, लेकिन वे एक युवक के समान होंगे।** जो भी उन्हें देखेगा वो कहेगा कि वे चालीस या कम के होंगे। दिन रात का चक्र उनके अंत तक उन्हें प्रभावित नहीं कर पायेगा।
>
> (खण्ड 13 भाग 2 पृष्ठ 178)

डॉ. जॉन हिस्लप ने स्वामी के साथ अपने एक साक्षात्कार का विवरण प्रकाशित किया था। इस साक्षात्कार के दौरान स्वामी ने कहा था: "यह देह 96 वर्ष तक जीवित और युवा रहेगी"[2]। सुश्री शकुन्तला बालू

---

[1] विश्वास किया जाता है कि ईसामसीह का दूसरी बार आगमन होगा।

[2] कन्वर्सेशन विद् सत्य साई बाबा, जे. एस. हिस्लप, बर्थ डे पब्लिशिंग कंपनी, सेन डिएगो, सीए, 1978, पृष्ठ 83 (उल्लेखित साक्षात्कार केवल इस संस्करण में ही प्रकाशित हुआ है)।

की पुस्तक "लिविंग डिव्हिनिटी" में वे स्वामी के कथन को उल्लेखित करती हैं: "इस देह में, मैं वृध्द या बीमार नहीं होउँगा जैसा कि मैं अपनी पूर्व देह में था"[1]।

क्या ये कथन संकेत करते हैं कि जब स्वामी वापस आयेंगे वे युवा दिखेंगे?

बिहार–उल–अनवर के छंदों की चर्चा हम पहले ही कर चुके हैं जो यह कहते हैं कि पुनर्आगमन के बाद महदी कम से कम 7 वर्ष तक रहेंगे। हजरत महदी के पृथ्वी से अंतिम प्रयाण के बारे में एक छंद मुझे भी मिला है:

> (उनके पुनर्आगमन के बाद) वे सात वर्ष तक रहेंगे और तब उनकी मृत्यु हो जायेगी और मुस्लिम उनके लिये प्रार्थना करेंगे। (पृष्ठ 91)

महदी का स्वर्णिम युग

महदी का आगमन स्वर्णिम युग का पूर्ववर्ती होगा जो पृथ्वी को शांति और न्याय से आच्छादित कर देगा; जिसकी भव्यता का सुन्दर कालक्रमित वर्णन बिहार–उल–अनवर में दिया है:

> अल्लाह कसम...वे संसार से तब तक नहीं जायेंगे जब तक कि वे आकर पृथ्वी को समभाव और न्याय से नहीं भर देते क्योंकि यह अन्याय और अत्याचार से भर गई होगी। (पृष्ठ 197)
>
> तुम भाग्यशाली होगे यदि तुम उनके समकालीन होगे! कोई भी जो उनका समकालीन होगा भाग्यशाली होगा! (पृष्ठ 170)
>
> और पृथ्वी उसके प्रभु के तेज से आलेकित हो जायेगी, और उनका राज्य पूर्व से लेकर पश्चिम तक फैल जायेगा। (पृष्ठ 113)
>
> वे तुम्हारे अंतः के अन्यायी को बाहर निकाल देंगे, तुम्हारे खतरों को काट देंगे, और तुम्हारे अन्यायी शासकों को पदच्युत कर देंगे, और बेईमानों से पृथ्वी को साफ कर देंगे। वे समानता से कार्य करेंगे और तुम्हारे बीच में न्याय का निष्पक्ष पैमाना स्थापित करेंगे। तुम्हारे मृत सम्बन्धी भी मन्नत करेंगे कि वे शीघ्र ही एक बार और पृथ्वी पर लौटें और फिर से जीवन जियें। यह होने वाला है। अल्लाह के लिये, तुम अभी तुम्हारे स्वप्न में हो! क्योंकि तुम कदाचरण में लग जाओगे, अपनी जीभ को ताले में रखो और अपनी रोज़ी में लगे रहो। और यदि तुम इंतजार करोगे, तुम्हें ईनाम मिलेगा और तुम निश्चित तौर पर जान जाओगे कि वह तुम्हारे उत्पीड़न का बदला लेने वाला और तुम्हारे अधिकारों का रक्षक है। मैं अल्लाह की कसम खाकर सत्य शपथ लेता हूँ कि वास्तव में अल्लाह भी उन लोगों के साथ है जो पवित्र हैं और जो अच्छे कार्य करते हैं। (पृष्ठ 155-156)

[1] लिविंग डिव्हिनिटी, शकुन्तला बालु, लंदन सॉ ब्रिज, 1984, पृष्ठ 40।

उस समय, पृथ्वी अपनी सम्पदा को प्रकट करेगी और सौभाग्य को दर्शायेगी। ऐसा कोई भी स्थान नहीं बचेगा जहाँ मनुष्य दान दे सके, या उदारता कर सके, क्योंकि सभी आस्तिक समृध्दि से ओतप्रोत होंगे। (भाग 2 पृष्ठ 233)

ये छंद भविष्यवाणी किये गये स्वर्णिम युग की सुन्दरता का वर्णन करते हैं, वर्तमान समय में विश्व के हालात देखते हुए यह असाधारण घटना असम्भव लगती है। लेकिन जैसा हम जानते हैं कि स्वामी जो सभी दिव्य सिद्धान्तों के स्त्रोत हैं, और महदी या मसीहा जो सभी पराभौतिक भविष्यवाणियों पर खरे उतरते हैं,उन्होंने वचन दिया है कि स्वर्णिम युग आयेगा। जब ऐसा होगा तो इसकी सुन्दरता सभी स्वप्नों और कल्पनाओं से परे होगीः

समय आ रहा है जब सम्पूर्ण मानवता सामंजस्य के साथ रहेगी। यह समय उससे भी शीघ्र आयेगा जितनी कोई कल्पना कर सकता है। (...) यह (स्वर्णिम युग) वह नहीं है, जैसा कि कोई जीवित व्यक्ति कल्पना कर सकता है। यह सभी बौद्धिक क्षमताओं से परे होगा। मैं कह सकता हूँ कि इसकी सुन्दरता सभी कल्पनाओं से भी शानदार होगी।

श्री सत्य साई बाल विकास, भाग 15, क्र. 9, सितम्बर 96

हजरत महदी वापस क्यों आयेंगे?

(...) क्योंकि (...) उन्होंने पृथ्वी को न्याय और समानता से परिपूर्ण नहीं किया है, जिस तरह से वृत्तांत में भविष्यवाणी की गई थी। अतः, यह उनके समय के अंतिम भाग में घटित होगा। ये सभी कारण घोषित नियति के कार्यान्वयन के लिये संयुक्त हो गये हैं। (पृष्ठ 141)

उपरोक्त छंद इस पुस्तक के संदर्भ में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। यह कहते हैं क्योंकि महदी ने पृथ्वी को शांति और समानता से परिपूर्ण करने सम्बन्धी अपने पूर्व नियत उद्देश्य की पूर्ति अभी तक नहीं की है। इसलिये इसकी पूर्ति के लिये उनकी वापसी निर्धारित है। यह पूर्णरूप से उस उद्देश्य से सामंजस्य रखती है जिस बिन्दु पर यह पुस्तक केन्द्रित हैः क्योंकि बहुत सी बातें जो स्वामी ने कहीं हैं, अभी घटित होना बाकी हैं और धर्मग्रन्थों ने जो अनेक भविष्यवाणियाँ की हैं, उनका पूर्ण होना भी बाकी है, **अतः वे अवश्य वापस आयेंगे!**

(...) मैं उसी तरह से पृथ्वीवासियों की सुरक्षा के लिये हूँ, जिस तरह से तारे स्वर्ग के निवासियों की सुरक्षा के लिये हैं...शीघ्र वापसी के लिये अधिक प्रार्थना करो क्यों की इसमें तुम्हारी सफलता है। (पृष्ठ 498)

अध्याय 8: आकाश में एक दिव्य दर्शन?

संसार के अनेक धर्मग्रंथ एक ऐसी घटना की भविष्यवाणी करते हैं जो प्रभु के पृथ्वी पर आने की घोषणा करती है। इनमें से सबसे ज्यादा लोकप्रिय और चर्चित भविष्यवाणी पवित्र बाइबल के न्यू टेस्टामेन्ट की "मानव के पुत्र के आगमन" की है। पवित्र बाइबल में ऐसे कई छंद हैं जो बहुत ही अप्रत्याशित समय में प्रभु के आकाश में प्रकट होने के बारे में बातें करते हैं, इस तरह से मानवता को आध्यात्मिक समर्पण के लिये मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

> **उस समय मानव के पुत्र के आने का संकेत आकाश में प्रकट होगा:** और तब पृथ्वी की सभी जातियों के लोग शोक करेंगे, **और तब वे मानव के पुत्र को शक्ति और महिमा के साथ आकाश के बादलों में आता देखेंगे।** और वे अपने देवदूतों को एक तुरही के तीव्र स्वर के साथ भेजेंगे, और वे (देवदूत) चारों दिशाओं से, स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक उनके चुने हुए लोगों को एक साथ इकट्ठा करेंगे।
>
> –मेथ्यू 24:30-31, केजेवी

> **प्रभु स्वयं उच्चस्वर के साथ स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरेंगे,** देवदूतों के मुखिया की आवाज के साथ, और ईश्वर की तुरही की आवाज के साथ (...)
>
> –1 थिस्सालोनिअन्स 4:16-17, केजेवी

पवित्र बाइबल की उपरोक्त छंद मानवता को एक ऐसे आकाशीय दिव्यदर्शन की घटना के होने का उल्लेख करती है कि मानवता ईश्वर के आगमन को "मानव के पुत्र" के आगमन के रूप में पुकारेगी। अनेक लोग इसे ईसामसीह के द्वितीय आगमन के रूप में देखेंगे। हालाँकि, स्वामी के अनुसार, ईसामसीह ने कभी भी उनके स्वयं के वापस आने का उल्लेख नहीं किया है। यह बाबा का आगमन था जिसका जीसस हमेशा उल्लेख करते थे।

> ईसामसीह का वक्तव्य सरल है: "वे जिन्होनें मुझे तुम्हारे बीच भेजा है फिर वापस आयेंगे!" और उन्होने एक भेड़ की तरफ इशारा किया। यह बा–बा की आवाज के लिये जानी जाती है; यह बाबा के अवतरण की घोषणा थी (...) **ईसामसीह ने यह नहीं कहा कि वे स्वयं पुनः आयेंगे। उन्होने कहा कि "जिन्होंने मुझे बनाया है वे पुनः वापस आयेंगे"। वह बा–बा यह बाबा है (...)**
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 11 अध्याय 54

क्या इसका यह अर्थ है कि पवित्र बाइबल में उल्लेखित "मानव का पुत्र" का द्वितीय आगमन स्वयं श्री सत्य साई बाबा के द्वितीय आगमन का संकेत करता है? क्या श्री सत्य साई स्वरूप के दर्शन का विश्व शीघ्र ही साक्षी हो सकता है?

देखो, वे बादलों के साथ आ रहे हैं; और हर आँख उनको देखेगी, और वे भी जिन्होनें उन्हें कष्ट दिया थाः और पृथ्वी के सभी लोग उनके कारण विलाप करेंगे। फिर भी, ऐसा ही हो।

–रेव्हलेशन् 1:7, केजेवी

बाइबल कहती है कि उस दिव्य–दर्शन के समय हर आँख उनको देख सकेगी, जो किसी वैश्विक स्तर की घटना की ओर संकेत करता है। "सेक्रेड नाड़ी रीडिंग" पुस्तक में स्वामी के पुनर्आगमन के बारे में अगस्त्य नाड़ी से उद्धत एक रोचक भविष्यवाणी दी है।

(...) प्रभु उनके वर्तमान स्वरूप में स्वयं का एक दिव्य दर्शन देंगे। यह उनकी वास्तविक देह का सच्चा स्वरूप होगा। **यह अनेक लोगों को दिखाई देगा जो अत्यंत विस्मय और उत्सुकता से भर जायेंगे** (...)भगवान शिव अब कहते हैं कि यह दिव्य दर्शन सिर्फ भारत में ही नहीं पूरे विश्व में दिखाई देगा। यह एक ही स्वरूप होगा, **लेकिन स्थान भिन्न–भिन्न होंगे।** अनेक लोग आश्चर्य से भर जायेंगे और दावा करेंगे कि हमने उन्हें यहाँ देखा या वहाँ देखा। वास्तव में, **एक ही समय में विभिन्न स्थानों पर बहुत से लोग उनको देखेंगे।**

–"सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स", श्री वसन्ता साई, पृष्ठ 18

अगस्त्य नाड़ी के ग्रंथ पाठ ऊपर वर्णित बाइबल की भविष्यवाणियों के सार से निश्चित तौर पर सामंजस्य रखते हैं। बाइबल यह भी कहती है कि "द्वितीय आगमन" किसी अनिश्चित समय पर होगा जो कोई भी मनुष्य ज्ञात नहीं कर सकता।

इसलिये तुम भी तैयार रहोः क्योंकि तुम उसके बारे में सोच भी नहीं रहे होगे और "मानव का पुत्र" आ जायेगा।

–मैथ्यू 24:44, केजेवी

लेकिन उस दिन और उस प्रहर के बारे में कोई मनुष्य नहीं जानता। नहीं, वे देवदूतों भी नहीं जो स्वर्ग में हैं, और पुत्र भी नहीं, लेकिन परमपिता जानता है।

–मार्क 13:32, केजेवी

बिहार–उल–अनवर में महदी या कईम के आने के बारे में या बाइबल में "मानव के पुत्र" के आने के बारे में समानताओं की चर्चा हम कर ही चुके हैं। बिहास–उल–अनवर यह भी कहता है कि जब उनके अन्तर्ध्यान होने के बाद कईम उठेंगे, तो यह कोई अप्रत्याशित समय ही होगा। बिहार–उल–अनवर में (पुनर्आगमन के बारे में) कई छंद हैं जो बाइबल के छंदों से सामंजस्य रखते हैंः

ध्यान दो, अल्लाह कसम, तुम्हारा महदी तुम्हारे बीच से अन्तर्ध्यान हो जायेगा (...) **उसके बाद वह चमकती हुई उल्का की तरह आयेंगे.** वे पृथ्वी को न्याय और समानता से भर देंगे क्योंकि यह अन्याय और अत्याचार से भरी होगी।

– बिहार–उल–अनवर, खंड 13, भाग 1, अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ 178

अब हम उसकी बाइबल की छंदों से तुलना करते हैं जो बात करते हैं मानव के पुत्र के बादलों में आने के बारे में, जो पूर्व से पश्चिम तक चमकने वाली उस आकाशीय बिजली के सदृश हैः

> जैसे बिजली पूर्व से आती है और पश्चिम तक कौंध जाती है; उसी तरह मानव का पुत्र भी प्रकट होगा।
>
> –मैथ्यू 24:27, केजेवी

> तब मानव के पुत्र को महाशक्ति और महिमा के साथ बादलों में प्रकट होते हुए लोग देखेंगे।
>
> मार्क 13:26, केजेवी

नये टेस्टामेंन्ट और बिहार–उल–अनवर के ये छंद मेरे इस विश्वास को और दृढ़ कर देते हैं कि विभिन्न स्थानों पर सम्पूर्ण विश्व सत्य साई स्वरूप का आकाशीय दिव्य दर्शन कर सकता है। "उनकी शीघ्र वापसी के लिये संकेत" नामक अध्याय से पाठकों को स्मरण होगा कि अनेक स्थानों पर एक साथ स्वामी के दर्शन देनें के स्वप्न बहुत से भक्तों को दिखें है और पूरे विश्व भर से लोगों ने स्वामी को देखने के दावे किये हैं। इसी अध्याय में हमने सुश्री सीमा देवन को स्वामी के संदेशों के बारे में भी चर्चा की है। "मैं कहीं नहीं गया हूँ" संदेश को "आकाश में दिव्य दर्शन" के सम्बन्ध में उपरोक्त भविष्यवाणियों के प्रकाश में मैं पुनः कसौटी पर कसना चाहूँगा (केवल सारांश दिया जा रहा है)।

> "(...) पवित्र मन वाले समर्पित हृदय और प्रेममय हृदय समय–समय पर मुझे पुकारेंगे। अपनी पवित्रता की शक्ति से केवल वे ही **मुझे एक बार फिर संसार के लिये दृश्यमान कर देंगे और मैं एक बार फिर मेरे भरे हाथों के साथ आउँगा**। तुम्हें मेरे शब्दों पर विश्वास करना होगा क्योंकि मैं जो कुछ भी कहता हूँ वह व्यर्थ नहीं जाता है। मैं जो भी कहता हूँ वह सत्य बन जाता है। मुझे हमेशा याद रखो, ज्ञात रहे मैं तुम्हारे पहले हूँ। स्वयं को भावनाओं से मुक्त करो और **मेरी वापसी का इंतजार करो**।"

स्वामी कहते हैं कि वे एक बार फिर विश्व के लिये "दृश्यमान" होंगे। "दृश्यमान" शब्द दर्शन से सम्बद्ध है। क्या स्वामी किसी ऐसे गरिमामय दर्शन की बात कर रहे थे, विश्व जिसका साक्षी होने वाला है। क्या आकाश में उनके अद्‌भुत दिव्य दर्शन के साथ उनके पुनर्आगमन का दिन वही है जिसे स्वामी ने "जागृति दिवस" होगा कहा था?

> **जागृति दिवस** अधिक दूर नहीं है और **जब यह आयेगा तब ईश्वर की वास्तविक शक्ति का रहस्योद्‌घाटन होगा, ईश्वर की सर्वव्यापकता का प्रकटीकरण।**
>
> –श्री सत्य साई बाबा एण्ड द फ्यूचर ऑफ मेनकाईण्ड,
>
> सत्यपाल रुहेला पृष्ठ 223

विश्वरूप दर्शनम् का स्थगन

> मैं एक शब्द भी ऐसा नहीं कहता जिसका कोई अर्थ नहीं हो, या जो हितकारी परिणाम रहित हो।
>
> –द लाइफ ऑफ भगवान श्री सत्य साई बाबा, एन. कस्तूरी पृष्ठ 196

गुरुवार, 4 अक्टूबर 2007 को, (स्वामी के निर्देशानुसार) प्रशांति निलयम में यह घोषित किया गया कि पुट्टपर्ति एयरपोर्ट की आग्नेय दिशा (उत्तर–पूर्व दिशा) में शाम 7 बजे के आसपास स्वामी एक "विश्वरूप दर्शनम्" देंगे। जैसे ही यह घोषणा हुई, स्वामी का नाम जपते हुए भक्त एअरपोर्ट की ओर दौड़ पड़े। टेलिविज़न चैनल्स ने भी यह समाचार प्रसारित कर दिया और पुट्टपर्ति में सभी लोगों ने अपने घरों में ताले लगाये और एअरपोर्ट की ओर कूच कर दिया। आसपास के गाँवों से भी हजारों लोग एअरपोर्ट की ओर भाग चले। वहाँ जमा भक्तों की भीड़ का ध्यान आकाश में आग्नेय दिशा की ओर था। भक्ति के इस ज्वार में कुछ लोगों ने स्वामी की कार को घेर लिया और वे कार के बाहर निकल नहीं पाये। सत्य साई ट्रस्ट के सदस्यों ने भक्तों को बैठ जाने के लिये समझाया लेकिन भक्त नहीं माने। इसके विपरीत वे स्वामी की कार के पीछे दौड़ पड़े। कार के पहले विश्वरूप दर्शनम् के लिये एक छोटा स्टेज बनाया गया था लेकिन स्वामी स्टेज तक भी नहीं पहुँच पाये क्योंकि भक्त उनके सामने दण्डवत हो गये। एक घंटे तक वे कार में ही रहने के लिये मजबूर हो गये। कुछ समय बाद सत्य साई ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने घोषणा की कि भक्तों के असहयोग और बादलों की वजह से "विश्वरूप दर्शनम्" स्थगित कर दिया गया है। और स्वामी अपने आश्रम लौट गये।[१]

इसकी निराली और अस्वाभाविक प्रकृति के कारण सत्य साई अवतार के इतिहास में सचमुच ही यह अत्यंत पहेलीनुमा घटना है। यह बिल्कुल भी "स्वामी के अनुरूप" नहीं थी, कि स्वामी जन–दर्शन की घोषणा करें और किसी भी कारण से एक विचित्र नाटक के द्वारा उसे स्थगित कर दें। स्वामी वहाँ अतिविस्मयकारी दर्शन देने वाले थे, यह स्वयं में एक विशाल चमत्कार होता। फिर वे छोटा सा यह चमत्कार दिखाकर 'कि वे कार से बाहर नहीं निकल सके', इस "विश्वरूप दर्शनम्" को स्थगित कर देते हैं। यह तर्क की पराकाष्ठा है। लेकिन, अन्ततः हम यह जानते हैं कि किसी भी तर्कसंगत कारण के बिना स्वामी कुछ नहीं करते।

स्वामी ने पहले भी कई भक्तों को आकाशीय दिव्य दर्शन दिये हैं। हालाँकि, यह केवल कुछ लोगों या लोगों के एक छोटे समूह तक ही सीमित था। इसी तरह की एक अद्‌भुत् घटना का वर्णन सुश्री विजयाकुमारी ने "अन्यथा शरणम् नास्ति" पुस्तक में किया है। इस पुस्तक में लेखिका कुछ अद्‌भुत् आकाशीय दिव्य दर्शनों का वर्णन करती हैं जो स्वामी ने उनको और कुछ अन्य भक्तों को दिये थेः

> एक दिन, जब हम सभी चित्रावती की तरफ जा रहे थे, स्वामी अचानक अन्तर्ध्यान हो गये। जब हम उनको ढूँढ़ रहे थे, हमने तालियों की एक आवाज सुनी, ऊपर देखा, तो हमने पाया कि स्वामी हम को सावधान कर रहे थे, "मैं पहाड़ी की चोटी पर हूँ"। उस समय शाम के छः बजे थे। सूर्य ने अपनी किरणों को शीतल करके पश्चिम में अस्तांचल में जा चुके थे। आकाश काले बादलों से भरा हुआ था, जैसे स्वयं को मोटे कम्बल में लपेट रहा हो। स्वामी बोले, तुम सब मेरी तरफ देखो। "मैं तुम्हें सूर्य दिखाउँगा।"
>
> हम यह सोच ही रहे थे कि, "सूर्यास्त होने के बाद सूरज वापस कैसे आयेगा?" हमने स्वामी के सिर के पीछे से सूर्योदय की नई किरणें आती देखीं, और पूरा आकाश नीला हो गया। ये किरणें

[1] सन्दर्भः www. ssso.net

तब तक लाल होती गईं, जब तक कि वे इतनी आग नहीं उगलने लगीं कि हम लोग पसीना–पसीना नहीं हो गये। किरणें अत्यन्त गर्म थीं जैसे कि तपती हुई दोपहर हो।

गर्मी सहन नहीं कर पाने के कारण हम सभी ने स्वामी से जोर से प्रार्थना की, "स्वामी! बहुत गर्मी है"। गर्मी मंद पड़ गई। अभी हम सम्भल ही रहे थे कि स्वामी की आवाज पहाड़ी की चोटी से आई, "मैं तुम्हें चन्द्रमा दिखाता हूँ"। हमें स्वामी के सिर के पीछे की तरफ, शहद के रंग की चन्द्रमा की अधखुली किरणें दिखाई दीं। शीघ्र ही वे सफेद हो गईं– सफेद और ज्यादा सफेद। बस, बात खत्म थी। हम ठंड से काँपने लगे। हमारे शरीर अकड़ गये। हमारे दाँत बजने लगे। "स्वामी! ठंड! बहुत ठंड है, स्वामी!" और हम इस प्रकार उनसे प्रार्थना कर रहे थे, ठंड धीरे से मंद पड़ गई।

उस समय, जब हम यह सोच ही रहे थे, कि स्वामी और क्या चमत्कार दिखायेंगे, उन्होंने घोषणा की, कि "मैं तुम्हें तीसरी आँख दिखाऊँगा। यह कैसी दिखती है? हम उत्सुक थे। स्वामी का शरीर दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन उनका सिर विशालकाय प्रतीत हो रहा था, जैसे यह पूरे आकाश में फैल गया हो। चकित, घबराहट से भरे दिमाग के साथ, हम आकाश को ताक रहे थे। स्वामी के मस्तक पर, उनकी दोनों भौहों के बीच में, एक छिद्र उत्पन्न हुआ, अग्निमय, उस छिद्र से तीव्र ज्वालाऐं निकलने लगीं। हमारी आँखें उन ज्वालाओं की चमक से चौंधिया गईं। हम भयभीत हो गये। हमारे स्वयं के लिये डर से ज्यादा हमें स्वामी के लिये चिंता थी, कि उनको क्या हो रहा होगा। ज्वालाऐं निरन्तर निकल रहीं थीं। जब हमने पीछे मुड़कर देखा, तो हमने पाया कि बहुत से लोग अचेत हो गये थे। हम नहीं जानते थे कि उन्हें बेहोशी क्यों आई थी। इसने हमें और घबरा दिया था। हमने ऊपर देखा, लेकिन स्वामी कहीं नहीं दिखे। खो देने की भावना से और कुछ नहीं सूझने के कारण, हमने रोना प्रारम्भ कर दिया। अचानक, हमने स्वामी को अपने बीच खड़े पाया।

"क्या हुआ?" हमारे कन्धे थपथपाते हुए उन्होंने हमसे पूछा। तुम क्यों रो रहे हो? ये बच्चे अचेत क्यों हो गये हैं? ये नहीं जानते हुए कि इन प्रश्नों के क्या उत्तर दें, हम उनसे लिपट गये और रोते रहे (...)

जो लोग अचेत होकर गिर गये थे, एक के बाद एक उन्होंने हिलना प्रारम्भ कर दिया। यह एक विचित्र अनुभव था। हमें ऐसा लग रहा था कि जैसे हमारा शरीर लड़खड़ाता यहाँ–वहाँ घूम रहा हो। हमें ऐसा लग रहा था जैसे कि हम हवा में तैर रहें हों। जैसे एक अवर्णनीय आनन्द हमारे पूरे अस्तित्व पर व्याप्त हो गया हो। (...)

शाम को हम ठीक से भजन नहीं गा सके। हमें चक्कर से आ रहे थे। वह पूरी शाम इसी अवस्था में व्यतीत हुई। जब हमने दूसरे दिन भी अपने को इसी अवस्था में पाया तो हमने इसके बारे में स्वामी को बताया। उन्होने मुस्कराते हुए कहा, "कि पिछले कई जन्मों से तुम लोग इस तीसरी आँख की झलक देखना चाहते थे। तुम्हारी प्रार्थनाओं के जवाब में, आज मैंने इसके दर्शन कराये हैं। लेकिन मैंने तुम्हें इसकी चमक का हजारवाँ भाग भी नहीं दिखाया है। और तुम तो उसे भी सहन नहीं कर पाये। तुम्हारी वर्तमान अवस्था उस भव्य दृश्य का परिणाम है।" इस रहस्योद्घाटन से अभिभूत, हम सभी टूट गये और रोने लगे। हमने उनके चरण कमलों को अपने आँसुओं से धो दिया (...)

–अन्यथा शरणम् नास्ति, सुश्री विजया कुमारी, पृष्ठ 58–61

उपरोक्त वृत्तान्त में, स्वामी भक्तों से कहते हैं कि उन्होंने अपने तेज का हजारवाँ भाग भी नहीं दिखाया। तब भी भक्त दिव्य–दर्शन को सहन नहीं कर सके और अचेत हो गये। स्वामी का तेज सभी कल्पनाओं से परे है। इन्हीं कारणों ने उपरोक्त वर्णित "विश्वरूप दर्शनम्" की घोषणा और उसके बाद उसके स्थगन को और अधिक गूढ़ बना दिया। स्वामी के कार्यों को वास्तव में कोई नहीं समझ सकता है। लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं जो हम अवतार के बारे में जानते हैं; कि वे कोई भी कार्य बिना कारण करेंगे। वे जो भी कार्य करते हैं वह मानवता की भलाई के लिये होता है। स्वामी किसी भी बंधन से परे हैं। इन "ज्ञात" पैमानों के उपयोग के द्वारा हम स्वामी के कुछ कार्यों को समझने की अभिलाषा कर सकते हैं। यदि स्वामी कहते हैं कि वे कुछ करेंगे तब वे इसे अवश्य करेंगे, चाहे हमारे लिये यह कल्पना करना भी मुश्किल हो कि यह कब और कैसे होगा। इसलिये स्वामी हमें कहते हैं किः "धैर्य रखो, समय आने पर, तुम्हें सब कुछ दिया जायेगा।"[8] इसी कारण से एक साई भक्त ने, जो "विश्वरूप दर्शनम्" घटना के समय उपस्थित थे, मुझसे कहाकि उनका विश्वास है कि पूरे नाटक का मंचन भविष्य में होने वाले दिव्य–दर्शन के संकेत के तौर पर था। इसलिये इस बात को भी ध्यान में रख लेना चाहिये कि (स्वामी के मार्गदर्शन में कार्यरत) श्री सत्य साई ट्रस्ट ने "विश्वरूप दर्शनम्" के "स्थगन" की घोषणा की थी ना कि "निरस्त" करने की।

शान्ति के पहले का तूफान

"सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स" में अगस्त्य नाड़ी की एक विचित्र भविष्यवाणी उल्लेखित है जो ईश्वर के दिव्य दर्शन के पहले एक बड़े तूफान के आने की भविष्यवाणी करता है।

> ईश्वर के आगमन के पूर्व एक गरजदार तूफान आयेगा। यह बहुत डरावना होगा, लेकिन यह एकाएक रुक जायेगा और ईश्वर का दिव्य–दर्शन होगा। इस दिन के बाद से, महान चमत्कारों का होना बढ़ जायेगा।
>
> –"सेक्रेड नाड़ी रीडिंग्स", सुश्री वसन्ता साई, पृष्ठ 21-22

> अपनी पुस्तक, "साई मैसेजेस फार यू एण्ड मी" में, ल्यूकास रेली एक तूफान[2] के बारे में स्वामी के संदेश का उल्लेख करते हैं, जिसके बाद एक पूर्णतया नया वातावरण होगा जो सम्पूर्ण संसार में शांति लायेगा। तूफान के बाद एक नई शुरूआत होगी और एकदम नया वातावरण होगा। युद्ध, लड़ाई, घृणा, ईर्ष्या, लालच और जीवन के सभी नकारात्मक पहलुओं को हटाकर यह नये युग के समान, प्रेम, सामंजस्य और सहयोग का युग होगा।
>
> –"साई मैसेजेस फार यू एण्ड मी", भाग 1, ल्यूकास रेली 1985

जब हम तार्किक ढंग से विश्लेषण करते हैं, तो पाते हैं कि ईश्वर का आगमन किसी एक ऐसे क्षण होगा जब किसी आपदा या प्राकृतिक दुर्घटना से मानवता की रक्षा के लिये उनकी आवश्यकता होगी। दूसरे शब्दों में, स्वामी का पुनर्आगमन या दिव्य–दर्शन किसी ऐसी घटना के बाद ही होगा। "अतुल्यनीय नाड़ी ग्रंथ" अध्याय में हमने देखा कि, नास्त्रेदमस छंद किसी ऐसी प्राकृतिक घटना के होने का संकेत करते हैं।

---

[1] सनातन सारथी अक्टूबर 1996, अंतिम आवरण पृष्ठ

[2] लाक्षणिक हो सकता है.

इसलिये मैं मानता हूँ, चमत्कारिक समय का अनुभव होने के पहले एक ऐसा अल्प समय आयेगा जब मानवता उसकी रक्षा के लिये एक स्वर में ईश्वर को पुकारने को मजबूर हो सकती है। लेकिन, ऊपर उल्लेखित नाड़ी भविष्यवाणी से हम यह मान सकते हैं कि प्राकृतिक आपदा भयानक होने के बावजूद भी, सर्वोच्च–रक्षक, हमारे सर्वप्रिय दयालु ईश्वर साई के हस्तक्षेप से एकाएक रुक जायेगी।

आकाश के आरपार एक भ्रमण

स्वामी ने एक बार उनके कुछ नजदीकी भक्तों से उल्लेख किया था कि एक समय आयेगा जब वे आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण करेंगे और तब लोग उनकी महत्ता जान पायेंगे। उन्होने इसका उल्लेख एक दिव्य प्रवचन में भी किया था।

मुझे आकाश के आरपार भ्रमण करना होगा; हाँ, यह भी होगा, मेरा विश्वास करो।

–श्री सत्य साई वचनामृत, भाग 2 अध्याय 18

जब मैं आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण करूंगा तब तुम लोग मेरी महत्ता जान पाओगे।

–तपोवनम् श्री सत्य साई सत्चरित्र, अध्याय ११

उपरोक्त घटनाओं से, यह माना जा सकता है कि आकाशीय "दिव्य–दर्शन" स्वामी की योजना में पहले से ही था। जब यह होगा तब यह कितना सुन्दर होगा! वे सभी भाग्यशाली होंगे जो इस घटना के साक्षी होंगे।

भाग 3

साई युग आयेगा

अध्याय 9: श्री सत्य साई स्वर्णिम युग का उदय

तुम नहीं जानते, अनेक महान घटनाऐं होने वाली हैं। हर चीज जो देखी, सुनी और महसूस की जायेगी, पवित्र हो जायेगी। यह सब शीघ्र ही होने वाला है। इस पवित्र अवसर को खोना और चूकना नहीं। एक बार खो देने के बाद यह तुम्हें कभी भी प्राप्त नहीं होगा। एक बार प्राप्त हो जाने के बाद तुम इसे कभी गँवाओगे नहीं।

–दिव्य संदेश, प्रशांति निलयम, 14 अक्टूबर 1999

स्वामी ने कई बार कहा है कि वे मानवता के इतिहास में एक नया स्वर्णिम अध्याय लिखने आए हैं, इस तरह से एक " स्वर्णिम युग", प्रेम, शांति, धर्म, और सत्य के युग में प्रवेश कराने। मानवता उस शांत और समृद्ध युग के मुहाने पर है जिसमें सत्य साई अवतार के नाम और रूप की सम्पूर्ण विश्व में स्थापना के साथ ही उनको सार्वभौमिक रूप से स्वीकार कर लिया जायेगा।

इस अद्भुत् समय के बारे में स्वामी ने अनेक दिव्य प्रवचनों में उनके वक्तव्य दिये हैं। इनमें से कुछ घटनायें आंशिक रूप से घटित हो भी चुकीं हैं। और हमारे मन में एक संदेह आ सकता है कि इनमें से कुछ वक्तव्य प्रेम साई अवतार के बारे में हैं। लेकिन स्वामी के बोलने के तरीके से यह जानते हैं कि आमतौर पर यदि वे "यह स्वरूप" या "यह देह" कहते हैं, तो इनका अर्थ श्री सत्य साई बाबा के रूप में उनके वर्तमान अवतार से होता है। इसके अलावा, उन्होने परोक्ष और कई बार अपरोक्ष रूप से संकेत दिये हैं कि जब तक प्रेम साई आयेंगे तब तक विश्व शांति स्थापित हो चुकी होगी। कृपया आगे दिया हुआ वार्तालाप देखें जो डॉ. जॉन हिस्लप का स्वामी के साथ एक साक्षात्कार में हुआ था:

डॉ. हिस्लपः अनेक लोग यह कह रहें हैं कि, शीघ्र ही हम महाविपत्ति के एक दौर में प्रवेश करेंगे।

साईः जैसा मैंने कहा था, कुछ उच्च तरंगें आ सकती हैं, लेकिन यह विश्व प्रसन्न, शान्तिमय और समृद्ध होगा।

अतिथिः कोई विश्व युद्ध नहीं?
साईः नहीं, कोई विश्वयुद्ध नहीं।

डॉ. हिस्लपः हम सौभाग्यशाली हैं कि हम जीवित होंगे ताकि हम इस शान्तिपूर्ण विश्व को देख पायेंगे।

साईः तुम सभी देख पाओगे। वृद्ध भी इसे देखने के लिये जीवित रहेंगे।

अतिथिः तब, प्रेम साई को करने के लिये अधिक कार्य नहीं होगा! स्वामी ने विश्व को शांतिमय बना ही दिया होगा।
साईः इसमें अभी करीब 40 वर्ष का समय है। उस समय संसार शांतिमय होगा। यही नाम हैः प्रेम साई। सब प्रेम होगा– सर्वत्र प्रेम, प्रेम, प्रेम।

–"माइ बाबा एण्ड आइ",डॉ. हिस्लप, पृष्ठ 189, दिसम्बर 1978 में एक साक्षात्कार से

प्रसिद्ध पत्रकार आर. के. करंजिया को एक साक्षात्कार में, स्वामी समझाते हैं कि प्रेम साई अवतार का उद्देश्य लोगों को यह समझाना होगा कि वे स्वयं ईश्वर हैं।

"इस अवतार का उद्देश्य लोगों को यह समझाना है कि वही ईश्वर या दिव्यत्व हरेक में स्थित है। लोगों को रंग या सम्प्रदाय के मतभेद बिना एक दूसरे का आदर, प्रेम और मदद करनी चाहिये। इस तरह से सभी कार्य आराधना हो जायेंगे। **अन्त में, तृतीय अवतार, प्रेम साई इस शुभ संदेश को प्रोत्साहित करेंगे कि ईश्वर केवल प्रत्येक शरीर में ही नहीं रहता, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर है। यह निर्णायक ज्ञान होगा जो प्रत्येक स्त्री और पुरुष को ईश्वर तक पहुँचने योग्य बनायेगा।**"

–ब्लिट्ज इन्टरव्यू, सितम्बर 1976

प्रेम साई अवतार का इस ज्ञान को मानवता तक पहुँचाना, जिसे स्वामी ने सर्वोच्च ज्ञान कहा है यह अत्यन्त उच्चस्तरीय ज्ञान होगा, क्या यह मान लेना उचित नहीं होगा कि उस समय तक मानवता आध्यात्मिक चेतना के सर्वोच्च स्तर पर पहुँच चुकी होगी। स्वयं श्री सत्य साई अवतार के अलावा, भला और कौन इस चेतना को ला सकता है?

स्वर्णिम युग का पुनर्आगमन होगा

ईश्वर की इच्छा को रोका नहीं जा सकता है। जिस कार्य के होने का आदेश ईश्वर देता है वह अवश्य ही घटित होता है। **आनन्दमय स्वर्णिम युग का पुनर्आगमन अवश्य होगा।**

–एन ईस्टर्न व्यू ऑफ जीसस क्राइस्ट, पृष्ठ 12

बहुत से लोग यह स्वीकार करने में झिझकते हैं कि परिस्थितियाँ बदलेंगी, कि सबका जीवन सुखी और आनन्द से भरपूर होगा, और यह कि **स्वर्णिम युग का पुनर्आगमन होगा। मैं तुम्हें आश्वासन देना चाहता हूँ कि यह धर्मस्वरूप, यह दिव्य देह, व्यर्थ ही नहीं आई है।** मानवता पर जो विपत्ति आई है उसे दूर करने में यह सफल होगी।

–साई बाबा, द होली मेन एण्ड द साइकिआट्रिस्ट, पृष्ठ 91

किसी की उम्मीद से भी शीघ्र पहले स्वर्णिम युग आयेगा

मेरे बच्चों, भयभीत मत हो, सब कुछ ठीक होगा। **प्रेम और प्रकाश अन्धकार का स्थान ले लेगा और अति शीघ्र ही एक नया युग तुम्हारे सामने होगा।**

–श्री सत्य साई बाबा एण्ड द फ्यूचर ऑफ मेनकाइण्ड, पृष्ठ 110

वह समय आ रहा है जब सम्पूर्ण मानवता सद्भाव से रहेगी। किसी की उम्मीद से भी पहले वह समय यहाँ होगा। इसके पहले कि यह आए, हर सजीव चीज को जीवन के उद्देश्य का रहस्योद्घाटन करने के लिये जो भी आवश्यकता हो उसके लिये तैयार रहो। **इसकी कल्पना**

कोई जीवित व्यक्ति नहीं कर सकता है। यह सभी बौद्धिक क्षमताओं से परे है। मैं कह सकता हूँ कि इसकी सुन्दरता सभी स्वप्नों से भी ज्यादा शानदार है। और यदि तुम में से हरएक अपना मौन कार्य करता है, तो मैं तुम्हें अपने हृदय से लगा लूँगा और परिणामस्वरूप तुम्हारी आत्मिक उन्नति हो जायेगी और तुम्हारी आँखें तुम्हारे अन्तः में ही मेरी उपस्थिति जान जायेंगी।

–श्री सत्य साई बाबा बाल विकास, भाग 15, अंक 9 , सितम्बर 96

(...) उस दिन का उदय हो रहा है और समीप आ रहा है जब मानवता का भातृत्व और ईश्वर का पितृत्व उज्ज्वल और सुन्दर चमकेगा।

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग 13, अध्याय 18

(...) आज पूरा संसार चिंता और भय से पीड़ित है। लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि काले बादल शीघ्र ही छँट जायेंगे और तुम पूरे विश्व में आनन्द के युग के साक्षी बनोगे।

– श्री सत्य साई वचनामृत भाग 11, अध्याय 28

जब संसार अव्यवस्था की कगार पर होता है, अवतार मनुष्यों के हृदय में चलने वाले तूफानों को शांत करने आते हैं। प्रशांति (सर्वोच्च शांति) की स्थापना शीघ्र ही होगी, सीधे दिव्य पथ की अपेक्षा दानवीयता की ओर रुझान को ठीक किया जायेगा। मानव के प्रत्येक समुदाय में धर्म को पुनर्जीवित और उर्जावान बनाया जायेगा।

– श्री सत्य साई वचनामृत भाग 11, अध्याय 31

स्वर्णिम युग की विशेषताऐं

जब स्वर्णिम युग का उदय होगा तो पूरे संसार में सद्भावना हो जायेगी और हर तरफ प्रेम बहेगा। घृणा के समस्त विचार विलोपित हो जायेंगे। आज तुम उस स्थिति की कल्पना नहीं कर पा रहे हो क्योंकि सब जगह अव्यवस्था फैली हुई है, झगड़े, षड़यंत्र, घृणा, बुराईयाँ; सभी नकारात्मक मनोभाव बढ़ रहे हैं। लेकिन अंततोगत्वा परिवर्तन अवश्य आयेगा।

–साई मैसेज़ेस फार यू एण्ड मी, भाग 2, पृष्ठ 70

जब भी कोई परिवर्तन होगा, **यह सार्वभौमिक परिवर्तन होगा।** स्थानीय नहीं। **यह प्रत्येक स्थान पर आयेगा।**

––माय बाबा एण्ड आइ, पृष्ठ 189

(...) वह दिन (...) जब सम्पूर्ण मानवता दृढ़ता से सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा (...) का पालन करते हुए एक बड़े परिवार के रूप में एकीकृत हो जायेगी **साई राष्ट्र की स्थापना की पुष्टि हो जायेगी और वे सभी सौभाग्यशाली होंगे जो पृथ्वी पर उस स्वर्ग का अनुभव करेंगे।**

–साई वन्दना, 25, 1990

यह एक नये युग के समान होगा,युद्ध, झगड़े, घृणा, ईर्ष्या, लालच और जीवन के सभी नकारात्मक पहलुओं को बदलकर प्रेम, सद्भाव और सहयोग का युग।

–श्री सत्य साई बाबा एण्ड द् फ्यूचर ऑफ मेनकाइण्ड, पृष्ठ 223

इस कलियुग की घृणा और ज्यादतियाँ जो आज वातावरण को प्रदूषित कर रहीं हैं उसी को प्रेम और शांति (...) शुद्ध कर देंगी।

–श्री सत्य साई बाबा एण्ड द् फ्यूचर ऑफ मेनकाइण्ड
पृष्ठ 10

जीवन बदलेगा, इसमें सुधार होगा और जो पहले तुमसे खो गई थी जीवन की उस गुणवत्ता की प्रचुरता को तुम अनुभव करोगे।

–श्री सत्य साई बाबा एण्ड द् फ्यूचर ऑफ मेनकाइण्ड
पृष्ठ 221

आज हम हर जगह हिंसात्मक कार्यों को पाते हैं। लेकिन जो कुछ भी हो रहा है, एक तरह से, तुम्हारी खुद भलाई के लिये ही हो रहा है। **हर व्यक्ति पवित्र भावना विकसित करेगा। शीघ्र ही सम्पूर्ण राष्ट्र शांति और प्रसन्नता अनुभव करेगा। कहीं भी, कोई कठिनाई या कष्ट नहीं होगा।**

–दिव्य प्रवचन, वृंदावन, 16 मार्च 2003

अवतार न तो सफल होते हैं न ही विफल; वे जो संकल्प करते हैं वह अवश्य पूरा होता है; वे जो भी योजना बनाते हैं वह अवश्य घटित होती है... **मैं, मानवता के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय लिखने आया हूँ, जब झूठ विफल हो जायेगा, सत्य की विजय होगी और सद्गुणों का साम्राज्य होगा। तब ज्ञान या आविष्कारिक क्षमता या धन–सम्पत्ति नहीं चरित्र शक्ति प्रदान करेगा। राष्ट्रों की परिषद में प्रज्ञान का राज्याभिषेक होगा।**

– सत्य साई बाबा, एम्बॉडीमेन्ट ऑफ लव, पृष्ठ 174

श्री सत्य साई अवतार की ब्रम्हाण्डीय स्वीकार्यता

शीघ्र ही मेरा नाम और स्वरूप सर्वत्र स्थापित हुआ पाओगे। संसार के प्रत्येक इंच में इनका वास होगा।

–गॉड डिसेन्डस् ऑन अर्थ, पृष्ठ 37

आने वाले दिनों में तुम स्वामी की दिव्य महिमा के प्रकट होने के साक्षी बनोगे। वे सम्पूर्ण संसार को आकर्षित करेंगे। यहाँ तक की लोगों को खड़े रहने की भी जगह नहीं होगी।

–दिव्य प्रवचन, वृंदावन, 16 मार्च 2003

साई बाबा को केवल पाँच फुट तीन इंच लंबी देह ही मत समझो। **उनकी उपस्थिति सारे संसार में अनुभव की जायेगी। इंतजार करो और देखो। कुछ दिनों में सारा संसार यहाँ आयेगा।**

– श्री सत्य साई वचनामृत भाग 28, अध्याय 19

अमेरिका तो क्या, संसार के प्रत्येक विकसित देश जैसे जापान, जर्मनी, इटली, फ्रांस आदि में पुट्टपर्ति का नाम जाना जायेगा। हर जगह विश्व के नक्शे में पुट्टपर्ति को महत्वपूर्ण स्थान की तरह चिन्हित किया जायेगा।

–दिव्य प्रवचन, प्रशांति निलयम, 19 अक्टूबर 1999

स्वामी इसके लिये क्या संकेत बतायेंगे जिससे ज्ञात हो कि स्वर्णिम युग का उदय हो रहा है वे इस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि **साई का गौरव संसार के प्रत्येक हिस्से में फैल जायेगा। यह कई हजार गुणा बढ़ जायेगा।**

–सनातन सारथी, दिसम्बर 1993

कुछ ही दिनों की बात है, तुम्हें मालूम हो जायेगा कि **तुम्हारे ऊपर परमानन्द और हर्ष की वर्षा करते हुए दिव्य महिमा दिन पर दिन बढ़ती ही चली जायेगी। शीघ्र ही पृथ्वी से समस्त अस्थिरता नष्ट हो जायेगी।**

–दिव्य प्रवचन, वृंदावन, 16 मार्च 2003

(...) वह दिन समीप आ रहा है जब अवतार से लाभ लेने के लिये लाखों–करोड़ों लोग इकट्ठा होंगे; मैं तुम्हें सलाह दे रहा हूँ कि जितनी समस्त कृपा और परमानन्द तुम एकत्रित और सुरक्षित कर सकते हो कर लो, (...)

– श्री सत्य साई वचनामृत भाग 11, अध्याय 41

साई संस्थाओं का महत्व

अभी साई संस्थाऐं आकार में छोटी हैं लेकिन जैसे ही समय बीतता जायेगा, **यह इतने लोगों को आकर्षित कर लेगी कि साई सभाओं में सामान्य जन को जगह ही नहीं मिल पायेगी। समस्त स्थान साई संस्थाओं के लोगों के लिये ही रहेगा।** इसलिये, साई संस्थाओं की सदस्यता एक मौका देती है।

–माय बाबा एण्ड आइ, डॉ जे. एस. हिस्लप, पृष्ठ 209, दिसम्बर 1982 के एक साक्षात्कार से

यही नहीं, इसके भी आगे:

"समस्त संसार सत्य साई संस्था में परिवर्तित हो जायेगा और सत्य साई की स्थापना प्रत्येक के हृदय में हो जायेगी।"

–सनातन सारथी, जनवरी 1999, पृष्ठ 16

भारत का गौरव

> पुनः, तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुम संसार के समस्त देशों को भारत के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए देखोगे; इस देह के रहते हुए ही तुम पूरे विश्व में सत्य साई के नाम के जप की प्रतिध्वनि सुनोगे –भविष्य के किसी दिन की तरह नहीं, बल्कि तुम्हारे साथ ही, तुम्हारे सामने ही। और पुनः, सारे संसार के लोगों के भले के लिये जिसे वेदों में दिया गया है, उस सनातन धर्म को तुम अतिशीघ्र ही उसकी प्रामाणिक और प्राकृतिक स्थिति में पुर्नस्थापित होते देखोगे। मेरी शक्ति और सामर्थ्य के प्रकटीकरण द्वारा केवल लोगों को मेरी तरफ आकर्षित करने के लिये नहीं, साई का संकल्प वैदिक धर्म का पुर्नउत्थान है।
>
> –दिव्य प्रवचन, १७ मई १९६८

> **हर तरह से–आध्यात्मिक रूप से, सांस्कृतिक रूप से, सामाजिक रूप से, राजनैतिक रूप से और आर्थिक रूप से भारत वैश्विक नेतृत्व करेगा।** उसका सम्पूर्ण ऐतिहासिक गौरव, संस्कृति और परम्पराऐं पुनर्जीवित होंगी और वह विश्व के सर्वोत्तम राष्ट्र के रूप में सबसे आगे चमकेगा। यह वैसे ही होगा जैसे यह युगों से था और यह वैसा ही एक बार फिर होगा।
>
> –सत्य साई अमृत वर्षिनी, पृष्ठ 34

> आज कृष्ण जन्माष्टमी है, भगवान कृष्ण का जन्मदिवस। **मैं आज एक वचन देना चाहता हूँ कि सभी राष्ट्रों के लोग, अर्थात् पाकिस्तान, चीन, जर्मनी, रूस एक हो जायेंगे (...) भारत की नैतिकता इस एकता का नेतृत्व करेगी।**
>
> –सनातन सारथी, सितम्बर 2002

हम केवल बहुप्रतिक्षित स्वर्णिम युग की कल्पना कर सकते हैं और सुन्दरता के बारे में धारणा कर सकते हैं जो स्वामी के अनुसार "सभी स्वप्नों से बढ़कर होगी"। स्वामी हमारे आसपास की विषम परिस्थितियों के बारे में दृष्टान्त देते हैं जिनके कारण हम यह समझ पाने में असफल हो जाते हैं कि इतना सुन्दर समय वापस आयेगा। लेकिन वे वचन देते हैं कि यह समय आयेगा।

> (प्रोफेसर कस्तूरीः) आइये हम आनन्दपूर्वक इस नये वैश्विक दौर का इंतजार करें, एक परिपूर्ण साई दौर, किसी दूर भविष्यकाल में नहीं, लेकिन बहुत ही जल्द, किसी मानवीय बुद्धि से परे, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए।
>
> –सनातन सारथी, अगस्त 1999

वर्ष 2012 का महत्व

सम्पूर्ण संसार वर्ष 2012 और प्रलय के नजदीक आने की चर्चाओं से गूँज रहा है। मीडिया के एक भाग ने भी अनेक अटकलों और प्रलय की भविष्यवाणियों को भुनाने की कोशिश की है और लोगों में भय की भावना पैदा कर दी है। 2012 के रहस्य के उन्माद के पीछे प्राचीन माया–सभ्यता का कैलेण्डर है जो रहस्यात्मक रूप से 22 दिसम्बर 2012 को दक्षिणायन के दिन खत्म हो रहा था। कुछ खगोलविदों ने दिसम्बर

2012 के अंत में "गैलेक्टिक एलाइनमेन्ट"[१] की भविष्यवाणियाँ भी की थी जब हमारे सौर–परिवार[२] आकाशगंगा की मध्यरेखा से सीधे ही गुजरेगी। कुछ लोगों के विचार से ये संकेत, समय–खत्म होने का संकेत देते हैं।

हालाँकि मैं "समय–खत्म" हो जाने के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करता हूँ, फिर भी मैं महसूस करता हूँ कि इस अतिशियोक्ति का कुछ न कुछ अभिप्राय अवश्य है। संसार में हर तरफ, अनेक लोग वर्ष 2012 या इसके आसपास किसी विशेष घटना के होने का विश्वास करते हैं हालाँकि कोई नहीं जानता है कि यह क्या है या क्या उम्मीद कर रहे हैं। कोई भी इस बात से सहमत नहीं हो पा रहा है कि यह अच्छा होगा या बुरा होगा। लेकिन हम जानते हैं कि कुछ भी अत्यन्त प्रलयंकारी होगा क्योंकि स्वयं स्वामी ने हमें सुनिश्चित किया है:

> कोई भी प्रलयंकारी घटना इस संसार के सन्निकट नहीं है। इस विशाल गोले के ऊपर यदा–कदा, यहाँ–वहाँ, कुछ छोटी–मोटी आपदायें आ सकती हैं।
>
> – श्री सत्य साई वचनामृत भाग 24, अध्याय 4

दूसरी तरफ ऐसे भी अनेक लोग हैं जो यह विश्वास करते हैं कि वर्ष २०१२, स्वयं समय के खत्म होने की अपेक्षा पृथ्वी के एक नये आध्यात्मिक पुर्ननिर्माण का प्रारम्भ हो सकता है। इन संकेतों को वे सार्वभौमिक सचेतनता के भारी–भरकम परिवर्तन के पूर्वगामी के रूप में देखते हैं। बात चाहे कुछ भी हो, संसार में सर्वत्र इस तरह की सामूहिक उम्मीदों के दृष्टिकोण से इनका कुछ तो औचित्य होगा ही, जिनके आधारभूत सिद्धान्त को निरर्थक कह कर नकारा नहीं जा सकता है। यह जानकारी रोचक है कि डॉ. श्रीकान्त सोला[3] ने "रेडियोसाई" को दिये एक साक्षात्कार में निम्नलिखित उल्लेख किया था:

> मुझे याद है कि एक बार 2007 में स्वामी कोडईकनाल में थे, मुझे यह उनके कुछ छात्रों ने सुनाया था। और स्वामी ने अकस्मात् ही टिप्पणी की कि **"सत्ययुग का प्रारम्भ** 2012 **में होगा"**। उन्होंने यह इतने सामान्य ढंग से कहा जैसे वे कह रहें हो कि मानसून के मौसम में वर्षा होती है अतः हम जानते हैं कि हम एक युग की समाप्ति पर और अगले युग के उदय पर हैं।[४]

ऊपर दिया गया यह वक्तव्य वर्ष 2012 के महत्व के बारे में निश्चित तौर पर एक संकेत देता है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि, इस अनिश्चित समय में, जब अधिकांश मानवता किसी विशेष घटना के होने की प्रतीक्षा में है, स्वामी का कोई भी चमत्कार होने से पूरे संसार का ध्यान उनकी ओर निश्चित रूप से खिंचेगा। इस दृष्टिकोण से, मैं यह विश्वास करने के लिये आकर्षित हो जाता हूँ कि यह तथाकथित "विभ्रम 2012" किसी दिव्य योजना का फल हो सकता है। इसलिये वर्ष 2012 अंततः किसी अंत की ओर संकेत करता है; जैसा कि आज हम जानते हैं समस्त बुराइयों और अन्याय का अंत, और जैसी कि अनेक धर्मग्रंथों ने भविष्यवाणी की है एक सुन्दर स्वर्णिम युग के प्रारम्भ का प्रतीक।

---

[1] आकाशगंगा की मध्य रेखा के ठीक केन्द्र में सौर–परिवार के आने की खगोलीय घटना जिसकी पुनरावृत्ति 26000 वर्ष बाद होती है।

[2] सौर परिवार या सौर प्रणाली: सूर्य और उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रहों का समूह

[3] वर्तमान में श्री सत्य साई इंस्टीट्यूट ऑफ हॉयर मेडिकल साइंसेज़, व्हाईटफील्ड, बंगलुरु, में कार्यरत अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एक हृदय रोग विशेषज्ञ

[4] यह साक्षात्कार media.radiosai.org पर 28 मई 2012 को प्रसारित हुआ था।

धर्मग्रंथों के अनुसार स्वर्णिम युग

ब्रह्मवैवर्त पुराण खण्ड 4 कृष्ण–जन्म–खण्ड में, अध्याय 4 को गोलोक–आरोहणम कहते हैं, क्योंकि यह वर्णन करता है कि द्वापर युग के अंत के बाद कृष्ण किस प्रकार से उनके धाम, वैकुण्ठ को लौट गये थे। उस अध्याय में भगवान कृष्ण और माँ गंगा के बीच एक विशिष्ट संवाद है।

> श्लोक 49: गंगा उवाच : हे रक्षणः, सत्चिदानन्द, आपके गालोकवासी हो जाने के बाद कलियुग में मेरी क्या स्थिति होगी?
>
> श्लोक 50: परमेश्वर भगवान कृष्ण उवाचः पृथ्वी पर कलियुग के 5000 हजार साल पापपूर्ण होंगे और पापी अपने पाप स्नान करके तुममें जमा करते रहेंगे।

गंगा माता से भगवान कृष्ण कहते हैं कि कलियुग के पहले 5000 साल तक अनेक पापी होंगे और बहुत दुःख होंगे। भगवान से माँ गंगा आगे और पूछतीं हैं कि इन 5000 वर्षों के बाद क्या होगा। भगवान उत्तर देते हैं:

> श्लोक 55: हे गंगा, यद्यपि यह पापपूर्ण थी, फिर भी पूरी पृथ्वी वैष्णवों की उपस्थिति से एक तीर्थ स्थल बन जायेगी।
> श्लोक 56: मेरे भक्तों की देह में शाश्वत (शोधक) रहता है। भू देवी मेरे भक्तों की चरण रज से पवित्र हो जायेंगी।
> श्लोक 57: तीर्थ स्थानों और समस्त संसार के प्रकरण में भी यही होगा. मेरे मंत्रों के वे विद्वान उपासक जो मेरे सद्गुणों को अपनायेंगे सब कुछ पवित्र कर देंगे।

भगवान कृष्ण कहते हैं कि, करीब 5000 वर्षों के कलियुग के बाद, एक कालखण्ड होगा जब सारे संसार में उनके भक्तों या वैष्णवों[1] की उपस्थिति के कारण सम्पूर्ण पृथ्वी एक तीर्थस्थल में परिवर्तित हो जायेगी। भगवान कृष्ण आगे उल्लेख करते हैं कि यह अवधि एक हजार वर्षों की होगी।

स्वामी के अनुसार "कलियुग की पूर्ण अवधि ग्यारह हजार वर्षों की है। (...) कलियुग समाप्त होने में अभी 5320 वर्ष और हैं।"[2] कलियुग के 5000 वर्ष से अधिक बीत चुके हैं, इसका यह अर्थ है कि भगवान कृष्ण जिस समयावधि की बात कर रहे थे हम उस गौरवपूर्ण समय में हैं। हावर्ड मर्फेट अपनी पुस्तक "साई बाबा अवतार" में महाभारत की उस घटना के बारे में लिखते हैं जिसमें वनवास के समय पाण्डवों से महर्षि मार्कण्डेय मिलते हैं। भगवान विष्णु के साथ हुए वार्तालाप के बारे में महर्षि मार्कण्डेय बताते हैं कि कलियुग के अन्धकारपूर्ण अवधि में एक ऐसा समय आएगा जब मानव मूल्यों का क्षय हो जायेगा, सब जगह हिंसा और अन्याय होगा, सत्य के ऊपर झूठ की विजय होगी, अत्याचार और अपराध का प्रचलन होगा। महर्षि मार्कण्डेय को भगवान विष्णु कहते हैं कि हस्तक्षेप करने और विश्व को एक नई दिशा दिखाकर "सत्ययुग" की स्थापना करने के लिये कलियुग में वे एक मानव अवतार लेंगे:

---

[1] शाब्दिक अर्थ "भगवान विष्णु के उपासक" लेकिन प्रासंगिक अर्थ "भक्त" या "आध्यात्मिक अभिलाषी" है।

[2] भगवान श्री सत्य साई बाबा से वार्तालाप (अंग्रेजी), पृष्ठ 27–28

"इस समय जब पृथ्वी पर सर्वत्र बुराईयाँ फैली हैं, मैं एक सद्‌गुणी व्यक्ति के परिवार में जन्म लूँगा, और एक मानव देह धारण करूँगा, सब तरह की बुराईयों को उखाड़–फेंक कर शान्ति की स्थापना करने के लिये; सच्चाई और मानवीय मूल्यों की रक्षा करने के लिये, जब कार्य का समय आएगा तब मैं एक अकल्पनीय मानव देह धारण करूँगा। पापों के कलियुग में मैं एक ऐसा अवतार स्वरूप धारण करुँगा जिसका श्याम वर्ण होगा। मैं दक्षिण भारत के एक परिवार में जन्म लूँगा। यह अवतार अत्यन्त ऊर्जा, विशिष्ट ज्ञान और अत्यन्त शक्ति धारण करेगा। इस अवतार के उद्देश्य की पूर्ति के लिये जिन भौतिक वस्तुओं की आवश्यकता होगी अवतार के स्मरण करने मात्र से वे वस्तुऐं प्रकट हो जायेंगी। सद्‌गुणों की शक्ति से वे विजयी होंगे। वे, विश्व में व्यवस्था और शान्ति की पुर्नस्थापना करेंगे। यह अवतार एक नये सत्ययुग का प्रारम्भ करेगा, और आध्यात्मिक लोगों से घिरा रहेगा। आध्यात्मिक लोगों की श्रद्धा वाले स्थान पर वे भ्रमण करेंगे।"

"पृथ्वी के लोग इस अवतार के आचरण का अनुसरण करेंगे, और समृद्धि और शान्ति होगी। मनुष्य स्वयं को पुनः धार्मिक आचरणों की तरफ ले जायेगा। ब्राह्मिक विधाओं के विकास के लिये शिक्षा केन्द्र, और मन्दिर सभी स्थानों पर पुनः दिखाई देने लगेंगे। आश्रम सत्यवान लोगों से भर जायेंगे। पृथ्वी के शासक उनके साम्राज्यों को सद्‌गुणपूर्वक शासित करेंगे। इस अवतार की प्रख्यात प्रतिष्ठा होगी।"

–साई बाबा अवतार, पृष्ठ 71

भगवान विष्णु के इन शब्दों को जैसा महर्षि मार्कण्डेय स्मरण करते हैं, श्री सत्य साई अवतार की विशिष्टताओं को स्पष्टरूप से वर्णित करता है। यह इस बारे में भी बताता है कि अवतार संसार में किस प्रकार से व्यवस्था और शाति की स्थापना करेंगे, आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र और आराधना स्थल सभी स्थानों पर स्थापित हो जायेंगे और सभी देशों में शासक सद्‌गुणी होंगे।

जैसा कि हमने पहले बह्मवैवर्त पुराण में देखा था, कि भगवान कृष्ण उल्लेख करते हैं कि यह संसार उनके भक्तों से भर जायेगा जिनकी अत्यधिक उपस्थिति इस पृथ्वी को तीर्थस्थल में बदल देगी। ईश्वर की ओर अधिक से अधिक मुड़ रहे लोगों द्वारा लाई जाने वाली उस "भक्त जनसमूह" की घटक इस संसार की आध्यात्मिक जागृति के अत्यधिक विस्तार की ओर यह संकेत करता है। सावधानीवश यह मान लेना केवल बुद्धिमत्तापूर्ण होगा कि प्रतिक्षित स्वर्णिम युग स्वयं भगवान कृष्ण द्वारा लाया जायेगा, उनके प्रेम, पराक्रम और दिव्य कृपा से सम्पूर्ण संसार को एक वृहद् साई संस्था में परिवर्तित करने के लिये।

सम्पूर्ण संसार सत्य साई संस्था में परिवर्तित हो जायेगा और सभी के हृदयों में सत्य साई की स्थापना हो जायेगी।

–सनातन सारथी, जनवरी 1999, पृष्ठ 16

"मानव के पुत्र" का आगमन

> ईसामसीह के इन शब्दों का परीक्षण करते हैं जो उन्होंने उनके अनुयाइयों को कहे थेः
> मुझे तुम्हें अभी बहुत सी बातें कहना है, लेकिन उन्हें तुम अभी सह नहीं सकते। लेकिन **जब वे, सत्य की आत्मा, आयेगी, वह सम्पूर्ण सत्य की ओर ले जाने के लिये तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे** (...)
>
> –जॉन 16:12-13, केजेवी

"सत्य की आत्मा"? ईसामसीह जिनका उल्लेख कर रहे थे वे श्री सत्य साई बाबा के अलावा और कौन हो सकते हैं? 1972 में क्रिसमस की पूर्वसंध्या पर, स्वामी ने चौंका देने वाला एक रहस्योद्घाट्न किया, यह घोषणा करके उन्होंने ईसाई समाज को अभिभूत कर दिया कि वे वही एक थे जिन्होंने ईसामसीह को इस पृथ्वी पर भेजा थाः

> एक बात है जो मैं ला नहीं सका परन्तु आज तुम्हारे ध्यान में विशेष तौर पर लाना चाहता हूँ। उस क्षण जब ईसामसीह दिव्यता की सर्वोच्च शक्ति में लीन हो रहे थे, उन्होंने कुछ सूचनाऐं अपने अनुयायियों को दी थीं, जिनका, टीकाकारों और जिन्हें लेखों के ऊपर लेख और अर्थ के ऊपर अर्थ लिखने में आनन्द आता है, ऐसे लोगों द्वारा उनकी विभिन्न तरह से तबतक व्याख्या की गई जब तक की उन व्याख्याओं के विशाल ढेर नहीं बन गये।
>
> स्वयं इस वक्तव्य को हस्तक्षेप करके और उलझा करके पहेलीनुमा बना दिया गया। **ईसामसीह का वक्तव्य सरल हैः "वे जिन्होंने मुझे तुम्हारे बीच भेजा है पुनः वापस आयेंगे!"** और उन्होंने एक भेड़ की ओर संकेत किया। भेड़ तो केवल एक प्रतीक है, एक संकेत। यह बा–बा ध्वनि का प्रतीक मात्र है, यह बाबा के अवतरण की घोषणा थी। क्राइस्ट ने घोषणा की, **"उनका नाम सत्य होगा"। "वे लाल रंग का एक लबादा[1] पहनेंगे, एक रक्ताभ लाल लबादा।"** (यहाँ बाबा अपने उस लबादे की ओर इशारा करते हैं जो वे पहने हुए थे!)। **"वे कद में छोटे, (बालों के) मुकटधारी होंगे। भेड़, प्रेम का प्रतीक और चिन्ह है।"**
>
> ईसामसीह ने यह नहीं कहा था कि वे स्वयं आयेंगे। उन्होंने कहा था कि, "वे जिन्होंने मुझे बनाया है पुनः आयेंगे।" **वह बा–बा यह बाबा है और साई,कद में छोटे, घुंघराले बालों के मुकटधारी, लाल लबादाधारी बाबा आये हैं।** वे केवल इस स्वरूप में ही नहीं हैं, वे तो, तुममें से हरएक में हैं, हृदय निवासी के रूप में। वे वहाँ हैं, छोटे, रक्त के रंग का लबादा पहने, जो उसे भरता है।
>
> –सत्य साई वचनामृत भाग 11 अध्याय 54

[1] या चोगाः एक ढीला लम्बा वस्त्र

जैसा कि "रेव़लेशन्"[1] की पुस्तक में वर्णित किया गया है, ऊपर दिये गये स्वामी के शब्द, संत जॉन को हुए दिव्य–दर्शन से पूर्णतः सामंजस्य रखते हैंः

> फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और वहाँ मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था; और वे जो इस सफेद घोड़े पर सवार थे वे **विश्वसनीय और सत्य** कहलाते थे, क्योंकि वे न्याय के साथ निर्णय करते थे और युद्ध करते थे। **उनकी आँखें जैसे आग की लपटें थीं, और उनके सिर पर कई ताज थे**; और उनका एक नाम लिखा हुआ था, जो कोई और नहीं, केवल वे स्वयं जानते थे। **और उन्होंने एक वस्त्र पहना हुआ था जो रक्त में डूबा हुआ थाः और उनका नाम ईश्वर का शब्द कहलाता है।** और स्वर्ग में जो सेनाऐं थीं वे उनके पीछे सफेद घोड़ों पर आयीं, **सफेद और स्वच्छ मलमल के वस्त्रों में। और उनके मुख से एक तीक्ष्ण तलवार निकल रही थी जिससे की वे राष्ट्रों पर प्रहार कर सकें : और वे उनपर लौह–दण्ड से शासन करेंगेः और उन्होंने बर्बरता की चरखी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध को शांत कर दिया।** और उनके वस्त्रों पर और जंघा पर एक नाम लिखा था, **राजाओं का राजा और देवताओं का भी देवता**[2] ।
>
> –"रेव़लेशन्" 19:11-16, केजेवी

संत जॉन सांकेतिक सफेद घोड़े[3] के सवार को "विश्वसनीय और सत्य" कहते हैं। यह स्वामी के आंशिक नाम "सत्य" से मिलता है। प्रदीप्त आँखें स्वामी के भौतिक स्वरूप की प्रमुख विशेषताओं में से एक है और उनके घुंघराले बाल किसी बड़े मुकुट के समान दिखते हैं। खून में डूबा हुआ लबादा उनके लाल या केसरिया रंग के वस्त्र की ओर संकेत करता है जो स्वामी पहनते हैं। "उनका नाम ईश्वर का शब्द कहलाता हैं"[4] प्रसंगवश "भगवान" शब्द के अर्थ को इंगित करता है। मुख से निकलती तीक्ष्ण तलवार स्वामी के दिव्य प्रवचनों की शक्ति का प्रतीक है। उनकी इच्छा शक्ति और अधिकारिता का उल्लेख "लौह–दण्ड" के रूप में किया गया है। क्या यह सफेद घोड़े पर सवार तलवारधारी भगवान कल्कि के अवतरण की हिन्दू भविष्यवाणी के समान नहीं है? निश्चित रूप से, जैसा पहले उल्लेख किया गया है घोड़ा और तलवार प्रतीक हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि संत जॉन उनको "राजाओं का राजा ओर देवताओं का देवता" कहकर उल्लेख करते हैं। यह भी नाड़ी ग्रन्थ की भविष्यवाणी मे ं दिये गये वर्णन के सदृश हैः "जब कलियुग का प्रभाव बहुत बढ़ जायेगा तब लोग उनकी सच्ची शक्ति से परिचित होंगे और यह स्वीकार करेंगे की वे ही सर्वोच्च शक्ति हैं। तब मानवता उन्हें महान सम्राट की तरह नमन करेगी ।"

संत जॉन यह भी देखते हैं कि लाखों की संख्या में लोगों के झुंड मानव के पुत्र के सिंहासन के आसपास एकत्र हो गये हैं ।

> और मैंने देखा, और सिंहासन और प्राणियों और वरिष्ठजनों के चारों तरफ अनेक देवदूतों की आवाज सुनीः **और उनकी संख्या दस हजार का दस हजार, और हजारों की हजारों गुणा थी ।**
>
> ––रेव्हलेशन् 5:11, केजेवी

---

[1] पवित्र बाइबल के न्यू टेस्टामेंट में

[2] अनुवादक की टिप्पणीः देवताओं का भी देवता अर्थात् महादेव या भगवान शंकर

[3] सफेद रंग शांति का और घोड़ा शक्ति का प्रतीक है ।

[4] अनुवादक की टिप्पणीः भगवान बाबा के नाम सत्य नारायण में "नारायण", भगवान का एक नाम है।

अब हम स्वामी के स्वयं के शब्दों इसकी तुलना करते हैंः

(...) वह दिन शीघ्र आ रहा है जब इस अवतार से लाभ लेने के लिये लाखों–करोड़ों लोग एकत्र होंगे; मैं तुम्हें सलाह दे रहा हूँ कि, जब तुम समस्त कृपा और परमानन्द एकत्रित और सुरक्षित कर सकते हो कर लो, (...)

– श्री सत्य साई वचनामृत भाग 11, अध्याय 41

नये टेस्टामेंट में "मानव के पुत्र" के आगमन के बारे में अनेक वर्सेस (श्लोक) हैं जिनके बारे में ईसाई विश्वास करते हैं कि ये ईसामसीह के द्वितीय आगमन के बारे में हैं। लेकिन स्वामी का कथन पहले ही हम देख चुके हैं जिसमें उन्होंने कहा है कि ईसामसीह ने उनके स्वयं के वापस आने के बारे में नहीं कहा है। यह बाबा के बारे में था जिसकी ईसामसीह चर्चा कर रहे थे। तो क्या पवित्र बाइबल में उल्लेखित "मानव के पुत्र" का यह "द्वितीय आगमन" स्वयं श्री सत्य साई बाबा के द्वितीय आगमन की ओर संकेत करता है?

जब मानव–पुत्र उनकी समस्त दिव्यता और समस्त पवित्र देवदूतों के साथ आयेंगे, तब वे अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेंगे। और उनके सामने समस्त राष्ट्र एकत्र होंगेः (...)

–मेथ्यू 25:31-34, केजेवी

ऐसा विश्वास किया जाता है कि, स्वामी के दिव्य प्रवचनों में उल्लेखित स्वर्णिम युग के समान ही "मानव के पुत्र" का यह आगमन सत्य, प्रेम और शांति के एक नये युग का उद्घोष करेगा।

मानव–पुत्र अपने देवदूतों को भेजेंगे, और वे उनके साम्राज्य के बाहर उन चीजों को एकत्र कर लेंगे जो भय उत्पन्न करती हैं , और उन्हें जो पापकर्म करते हैं।

–मेथ्यू 13:40-43,केजेवी

नये साम्राज्य में धर्म और शांति सुनिश्चित करने के लिये मानव–पुत्र और उसके देवदूत समस्त बुराइयों का नाश कर देंगे। कहते हैं, यह स्वर्णिम काल जहाँ बुराइयाँ, झूठ, घृणा और असमानता पूर्णरूप से अनुपस्थित होंगी एक हजार वर्ष तक रहेगाः

और मैंने एक देवदूत को स्वर्ग से नीचे उतरते देखा, उनके हाथ में पाताल की चाबी और एक बड़ी जंजीर थी। और उन्होंने ड्रेगन को, उस पुराने सर्प को पकड़ लिया, जो दैत्य और शैतान है, और उसे एक हजार वर्ष के लिये बाँध दिया, और उसे पाताल में धकेल कर बंद कर दिया और उसके ऊपर पाबंदी लगा दी कि जब तक एक हजार वर्ष पूरे नहीं हो जाते वह मनुष्यों को और अधिक धोखा नहीं दे पायेगा।

–रेव्हलेशन् 20:1-3

संत जॉन के दिव्य दर्शन में, वे देखते हैं कि देवदूत शैतान को बाँधकर एक हजार साल के लिये दूर कर देते हैं। यह सभी बुराइयों, असत्य और असमानता का प्रतीक है जिसे पृथ्वी से दूर किया जा रहा है। इसके बाद जो आगे आया वह एक और भव्य दिव्यदर्शन था जिसमें संत जॉन एक सुन्दर नये नगर को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरते देखते हैं, जो इस शान्त विश्व का केन्द्र बन गया है।

और फिर मैं, जॉन ने, स्वर्ग से निकलकर, ईश्वर की ओर से पृथ्वी पर आता वह पवित्र शहर नया जेरूसलेम देखा। उसे ऐसा सजाया गया था जैसे दुल्हन को उसके पति के लिये सजाया गया हो। और तभी मैंने स्वर्ग से आती एक आकाशवाणी हुई, **"देखो, ईश्वर का मन्दिर मनुष्यों के बीच में है, और वे उन्हीं के साथ रहेंगे। और वे (मनुष्य) उनकी प्रजा होंगे, और ईश्वर स्वयं उनके साथ होंगे, और उनके ईश्वर होंगे। और ईश्वर उनकी आँखों के समस्त अश्रु पोंछ देंगे; और अब वहाँ ना कभी मृत्यु होगी, ना दुःख, ना विलाप होगा, और कोई पीड़ा भी नहीं होगीः क्योंकि ये सब पुरानी बातें अब समाप्त हो चुकी हैं" ।**

–रेव्हलेशन- 21:2-4

संत जॉन इस नये नगर को स्वर्ग से आता देखते हैं। इस नये नगर में ईश्वर मानव–पुत्र के रूप में अपने भक्तों के साथ रहेंगे। वे पृथ्वी से समस्त प्रकार के दुःख दूर कर देंगे। और वहाँ मृत्यु से और अधिक भय नहीं होगा। संत जॉन इसे नया जेरुसलेम कहते हैं। "जेरुसलेम" का हिब्रू[1] में शाब्दिक अर्थ "शान्ति का निवास" है।[2] "प्रशान्ति निलयम" का शाब्दिक अर्थ भी क्या यही नहीं है? क्या संत जॉन को हुए दिव्य–दर्शन में सर्वोच्च शान्ति के निवास, प्रशान्ति निलयम के भविष्य की झलक दिखी थी। स्वामी कहते हैं कि यह वह नगर है जहाँ आने के लिये समस्त विश्व को कृपा प्रदान की जायेगी।

आने वाले दिनों में, **समस्त संसार को प्रशान्ति निलयम आने देने के लिये कृपा प्रदान की जायेगी।**

–सनातन सारथी, दिसम्बर 1991

पुट्टपर्ति के मथुरा[3] नगर बनने के तुम साक्षी बनोगे। कोई भी व्यक्ति इस विकास को प्रभावित या रोक नहीं सकता।

–दिव्य प्रवचन, प्रशान्ति निलयम
21 अक्टूबर 1961

मेरा विश्वास करो, शीघ्र ही यह पुट्टपर्ति एक तिरुपति बन जायेगा (...) **सनातन धर्म की पुर्नस्थापना यहीं से होगी।**

–सत्यम शिवम सुन्दरम् भाग 1 अध्याय 16

रोचक तथ्य यह है कि, हिन्दू मान्यताओं के अनुसार, भगवान कल्कि का अवतरण "शम्भल" नामक नगर में होगा जिसका शाब्दिक "शान्ति, प्रशान्ति और आनन्द का स्थान" है।[4]

---

[1] इज़राइली भाषा
[2] संदर्भः विकिपीडिया
[3] भगवान कृष्ण का जन्मस्थान
[4] संदर्भः विकिपीडिया

आइये हम सभी मानवीय इतिहास के उस निर्णायक क्षण का इंतजार करें, जब प्रशान्ति निलयम का स्वर्गिक नगर, जहाँ ईश्वर स्वयं (पुनः) निवास करने वाले हैं, सत्य साई स्वर्णिम युग के उदय की घोषणा करता हुआ, आध्यात्मिक महापरिवर्तन का केन्द्र बिन्दु बन जायेगा।

धैर्य रखो। समय आने पर तुम्हें प्रत्येक वस्तु प्रदान की जायेगी। प्रसन्न हो जाओ। किसी भी विषय में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है (...) **तुम पवित्र आत्माऐं हो और नये स्वर्णिम युग के महानाट्य के प्रकटीकरण में तुम्हें तुम्हारी भूमिका निभानी होगी।**

– सनातन सारथी, अक्टूबर 1996, अंतिम आवरण पृष्ठ

अध्याय 10: स्वामी ने उनकी भौतिक देह क्यों त्यागी?

मेरे रहस्य को कोई नहीं समझ सकता। तुम्हारे लिये सर्वश्रेष्ठ यह है कि तुम इसमें डूब जाओ।

–सत्य साई बाबा, द एम्बाडीमेन्ट ऑफ लव, पृष्ठ 96

यह कोई नहीं जानता कि स्वामी ने उनकी दिव्य देह निर्धारित समय से पहले क्यों छोड़ी? यह उनकी योजना का हिस्सा रहा होगा। अब तक हमने जो देखा या सुना हम केवल वह जानते हैं। उनकी देह कमजोर पर कमजोर होती जा रही थी और साथ ही एक–एक करके समस्त आवश्यक अंग कमजोर होते जा रहे थे, यह एक ऐसे चरम बिन्दु पर पहुँच चुकी थी जहाँ इसका परित्याग होना ही था। अब प्रश्न यह उठता है कि उन्होंने स्वयं को स्वस्थ क्यों नहीं कर लिया। इस तरह के प्रश्न हमारी पहुँच से परे हैं और स्वामी रूपी महान रहस्य के हिस्से हैं। इसका एकमात्र उत्तर यही है कि उन्होंने संकल्प किया तो यह इस तरह से हुआ। कभी भी संयोग के लिये कोई स्थान नहीं था; वे "सब के स्वामी" हैं।

यह देह भक्तों के लिये आयी है

(...) एक बीमारी निश्चित की, संकल्प किया, एक व्यक्ति को पीड़ा मुक्त करने के लिये जो इससे जीवित नहीं बच सकता था या इसे सह नहीं सकता था। यह दिव्यता के उन कार्यों में से एक है, जिसके लिये उन्होंने अवतार लिया है –भक्तों के ऊपर कृपा बरसाने का (...) **मैं इस देह के साथ इन दूसरी देहों को दर्द और कष्ट से बचाने के लिये।** यह देह व्याधि और पीड़ा से हमेशा मुक्त रहेगी; व्याधियाँ इस देह को कभी–भी प्रभावित नहीं कर पायेगी। यही सर्वोच्च सत्य है।

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग 10 अध्याय 37

स्वामी के उपरोक्त शब्दों से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि कोई भी व्याधि उनके शरीर को भुगतनी पड़ी वह उनके स्वयं के शरीर से उत्पन्न नहीं हुई थी। कर्म का सिद्धान्त अत्यन्त रहस्यमय तरीके से कार्य करता है। एक बात जो निश्चित है वह यह है कि जब एक बार कर्म (विचार) प्रारम्भ हो जाने पर उसका परिणाम या "फल" अवश्यम्भावी है। यह भी सत्य है कि "कर्म का भुगतान" एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को स्थानांतरित किया जा सकता है। स्वामी ने अनेक बार अपने भक्तों के कर्म अपने ऊपर लिये हैं क्यों कि उनके भक्त उन कर्मफलों को भुगतने में सक्षम नहीं थे। हालाँकि स्वामी इन कर्मों को अपनी इच्छाशक्ति से नकार सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसकी अपेक्षा उन्होंने भक्तों के कर्मों को अपने ऊपर ले लिया। मानव देह धारण करने के कारण स्वामी ने कर्म के सिद्धान्त का हमेशा सम्मान किया, हालाँकि वे स्वयं इससे अप्रभावित थे।

कोई भी त्वरित हल प्रकृति के नियमों और कर्म–फल के सिद्धान्त के विरुद्ध होगा।

–द् ब्लिट्ज को दिये एक इंटरव्यू से, सितम्बर 1976

पहले जब भी उन्होंने किसी भक्त का कर्म अपने ऊपर लिया, उनकी देह को कुछ ना कुछ प्रतिफल सहन करना पड़ता था, यद्यपि यह संक्षिप्त समय के लिये होता था। लेकिन, क्या इस बार हमारे प्रिय करुणामय भगवान ने सम्पूर्ण मानवता का कर्मफल अपने ऊपर ले लेने का निर्णय कर लिया था और अपनी

देह की एक–एक कोशिका[1] से इसे जला दिया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता के उत्थान के एकमात्र उद्देश्य के लिये व्यतीत किया और अपनी देह भी इसी उद्देश्य के लिये समर्पित कर दी?

प्रसिद्ध पत्रकार आर. के. करंजिया को दिये गये एक साक्षात्कार में स्वामी ने बताया था कि मनुष्यों के बुरे कर्मों के सामूहिक कर्मफलों के परिणाम स्वरूप ही प्राकृतिक आपदायें होती हैं।

> पीड़ा और विपत्तियाँ ब्रह्माण्डीय नाटक के अनिवार्य कार्य हैं। ईश्वर इन आपदाओं के लिये आदेश नहीं देता, बल्कि मनुष्य अपने बुरे कर्मों के परिणाम स्वरूप उन्हें स्वयं आमंत्रित करता है।
>
> –द् ब्लिट्ज को दिये एक इंटरव्यू से, सितम्बर 1976

स्वामी ने इस विषय को अन्य अवसरों पर भी स्पर्श किया हैः

> (...) मनुष्य प्रकृति से असंख्य देन प्राप्त करता है और प्रकृति से प्राप्त विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का उपभोग करता है। लेकिन वह किस प्रकार से प्रकृति का आभार व्यक्त करता है? वह किस प्रकार से ईश्वर का आभार व्यक्त करता है? सब कुछ प्रदान करने वाले ईश्वर को वह भूल जाता है। यही कारण है कि वह विभिन्न कठिनाईयों और आपदाओं का शिकार हो जाता है (...)
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 21, अध्याय 19

> (...) अनेक प्राकृतिक आपदायें पूर्ण रूप से मनुष्य के व्यवहार का परिणाम है। भूकम्प, ज्वालामुखी, युद्ध, बाढ़ और अकाल और दूसरी अन्य आपदाऐं प्रकृति में प्रतिकूल कारणों से है। ये अव्यवस्थाऐं मनुष्य के कार्यकलापों के परिणामस्वरूप हैं। मनुष्य ने मानवता और प्रकृति के आन्तरिक सम्बन्धों को पहचाना नहीं है (...)
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 25, अध्याय 37

कार्मिक सिद्धान्त में इसे "सामूहिक कर्म" कहा गया है, भगवान ने कहा है कि इस तरह की बड़े पैमाने की प्राकृतिक और परमाणु–विध्वंस जैसी मानव निर्मित आपदाओं का निवारण करना उनके अवतरण के उद्देश्य में शामिल हैं ।यदि आपदायें सामूहिक कर्म का प्रतिफल हैं, तो क्या इनके निवारण के लिये इनके सामूहिक कर्मों के भुगतान की भी आवश्यकता नहीं होगी? क्या कुछ अत्यन्त विनाशकारी घटनाओं के निवारण के लिये सामूहिक कर्मों का विशाल परिमाण स्वामी अपने ऊपर ले रहे थे? जिस समय स्वामी अस्पताल में थे उस समय की विभिन्न वैश्विक घटनाओं पर यदि हम गौर करें तो यह सम्बन्ध स्थापित करना कठिन नहीं है। जापान में भूकम्प/सूनामी/परमाणु–आपदा आने के कुछ दिन बाद, श्वांस लेने में कठिनाई (या न्यूमोनिया) की समस्या के कारण उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। इस तीन तरफा आपदा अत्यन्त दुर्भाग्यकारी घटना थी जिसने हजारों जिन्दगियाँ ले ली थीं और अनेक लोगों को बेघर और बीमार कर दिया था। भयानक सूनामी पैदा कर देने वाले, जापान के इतिहास के इस सर्वाधिक विनाशकारी भूकम्प ने फुकुशिमा परमाणु बिजलीघर के हिस्सों को तबाह कर दिया था और जापान एक परमाणु आपदा के किनारे पर खड़ा था। रिक्टर पैमाने पर 8.2 की तीव्रता वाले भूकम्प की संभावना को ध्यान में रखकर फुकुशिमा परमाणु संयंत्र का निर्माण किया गया था, लेकिन यह भूकम्प इस तीव्रता को भी पार कर गया था (रिक्टर पैमाने पर 9.0)।

[1] cell

कुछ विशेषज्ञों ने कहा कि इस संयंत्र का इस आपदा को झेल जाना किसी चमत्कार से कम नहीं था और इसलिये संयंत्र का पूरी तरह से "नाभिकीय पिघलाव"[1] से बच जाना सम्भव हो पाया। संक्षेप में, यदि पूर्ण "नाभिकीय पिघलाव" हो जाता तो इस आपदा ने अकल्पनीय रूप ले लिया होता; इतने बड़े पैमाने का कि जिसे मानवता ने अभी तक देखा नहीं है। यह तो वह है जिसके बारे में हम जानते हैं, लेकिन उन आपदाओं का क्या जिन्हें नियति ने निर्धारित तो कर दिया था लेकिन कभी घटित नहीं हुईं इसलिये उनके बारे में हम तो जानते ही नहीं हैं? केवल वे ही जानते हैं! इस समय मुझे शुक नाड़ी ग्रंथ की यह भविष्यवाणी याद आती है: "वे दिखा देंगे कि प्रकृति के क्रोध को केवल वे ही नियंत्रित कर सकते हैं"। स्वामी ने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि उनकी देह को जो भी होगा वह केवल मानवता की भलाई के लिये ही होगा।

> जैसा नरसिम्हामूर्ति ने उल्लेख किया कि कस्तूरी ने मुझे एक बार प्रार्थना की थी कि किसी भक्त को बचाने के लिये मैं इस देह की उपेक्षा नहीं करूँ। **मैंने जवाब दिया कि यह देह भक्तों की भलाई के लिये आयी है और उनके भले के लिये कुछ भी और सब कुछ करने के लिये ही उपयोग की जायेगी।** शारीरिक–मोह मानवीय और निर्मोह दिव्यत्व है। शरीर का मोह सभी दुःखों और कष्टों का कारण है। क्योंकि ईश्वर को देह से कोई लगाव नहीं होता, वे उनकी देह को होने वाले कष्टों को भी कोई महत्व नहीं देते। **वे एक देह धारण करते हैं, उस देह को अनेक कष्ट होने हैं। जो भी होता है वह पूरे संसार की भलाई के लिये होता है।**
>
> –दिव्य प्रवचन, प्रशान्ति निलयम, 14 जनवरी 1999

हमें और क्या प्रमाण चाहिये? हमें जो समझने की जरूरत है वह यह है कि **"समस्त संसार के कल्याण के लिये"** उनका देह–त्याग हुआ। जैसा कि दिव्य–प्रवचन से उद्धत उपरोक्त उक्ति में उल्लेख किया गया है, उन्होंने अपनी देह को हुए किसी भी कष्ट को कोई महत्व नहीं दिया। जैसा कि बाद में उसी दिव्य प्रवचन में स्वामी ने रहस्योद्घाटन किया है कि अपने किसी भक्त को बचाने के लिये वे किसी भी सीमा तक जा सकते हैं:

> (मेरे अपने विनम्र विचार से, स्वामी के इस दिव्य प्रवचन को स्वामी के अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रवचनों में से एक मानकर प्रत्येक साई भक्त को इसका अध्ययन करना चाहिये।)
>
> (दिसम्बर माह में) जब बंगलौर से वापस लौट रहा था, **मैंने वार्डन को निर्देश दिया कि बालकों को खेल–समारोह के लिये नहीं लाया जाए।** उन्होंने मेरे निर्देश के लिये विभिन्न कारणों को उत्तरदायी माना (...) विद्यार्थी कोमल हृदय के हैं, स्वामी के लिये प्रेम और सद्विचारों से भरपूर। मुझे प्रसन्न करने के दृष्टिकोण से उन्होंने अनेक कार्यक्रमों की योजनाऐं बनाईं। **सन्निकट संकट से मैं पूर्णरूप से परिचित था। लेकिन, विद्यार्थी मेरे वचन के प्रति ग्रहणशील नहीं थे।** मुझे लगा कि इस परिस्थिति में उन्हें सलाह देने का कोई फायदा नहीं है। केवल जब वे मेरे वचन की उपेक्षा करने का परिणाम भुगतेंगे तभी उन्हें मेरे वचनों का मूल्य समझ में आयेगा। इस समय तक किसी को यह नहीं मालूम कि 11 की सुबह क्या हुआ था। उन्होंने कहाकि खेल–समारोह एकदम सफल रहा। जब तुम सफल होते हो तो मैं भी खुश होता हूँ। विद्यार्थियों ने बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया। इस आयोजन की सफलता के लिये प्रत्येक ने अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार सहयोग किया। उस दिन जब मैंने स्टेडियम में प्रवेश किया, मैंने दो ट्रकों को देखा। छिपे हुए खतरे को तुरन्त ही मैंने भाँप लिया। मैंने ट्रकों को देखा उन पर विशाल मचान रखे हुए थे। बच्चों ने उन पर कुछ साहसिक करतब दिखाने की योजना बनाई हुई थी। मैं

[1] nuclear melt down

जानता था कि उनमें से एक छड़ ठीक ढंग से नहीं लगाई गई है और वह निकलने वाली है। **यदि ऐसा होना था तो बच्चों को मस्तिष्क की गंभीर चोट लगती और मेरूदण्ड टूट जाता। मैंने संकल्प किया कि बच्चों को बचाउँगा और इस विपत्ति को अपने ऊपर ले लूँगा (...)** उसके एक दिन पहले मैंने चार बच्चों को निर्देश दिया था कि रथ को घेर कर रखें और सतर्कता रखें। वे भी स्वामी के लिये प्रेमपूर्ण और समर्पित हैं। लेकिन मैंने ध्यान दिया कि उनमें से कोई भी उस स्थान पर उपस्थित नहीं था। किसी के भी ऊपर दोषारोपण नहीं करना है। किसी ने भी यह जानबूझ कर नहीं किया। स्वामी विद्यार्थियों की प्राणवायु हैं।

मैंने रथ को रोकने के लिये कहा। एक वरिष्ठ भक्त रथ को पूरी भक्ति, प्रेम और निष्ठापूर्वक चला रहे थे। उन्होंने वाहन मेरी आज्ञानुसार रोक दिया। जैसे ही मैं कुलपति से बात करने वाला था कि चालक ने ब्रेक लगाने की अपेक्षा अपना पाँव क्लच पर रख दिया। **इससे एक झटका लगा और मैं रथ पर गिर पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप मुझे सिर पर और हाथ पर चोट आई और मेरा मेरूदण्ड बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। जो बच्चों को भुगतना था वह मैंने अपने ऊपर ले लिया।** दर्शक दीर्घा में अनेक पुरूष और महिलाऐं बैठीं थीं, लेकिन मैंने सावधानी रखी की कोई भी मेरी चोटों को जान नहीं पाये। मैं ऐसा प्रदर्शित करता रहा कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। कुलपति चिन्तित थे कि स्वामी खड़े नहीं हो पा रहे हैं। **मैं जानता था कि अब थोड़ा अधिक विलम्ब भी भक्तों के मन में चिंता उत्पन्न कर सकता है। इसलिये मैं दर्द भूलकर तुरन्त ही उठकर खड़ा हो गया और हाथ हिलाकर भक्तों को आशीर्वाद देने लगा। दर्द इतना तीव्र था और मेरे हाथ में घाव इतना गहरा था कि जैसे इसे किसी चाकू से छेद दिया हो। लेकिन मेरे हाथ को ढाँकने वाले मेरे रोब (चोगे) की बाँह ठीक थी। यह घटना तुम्हें दिव्यता की अनन्त शक्ति की एक झलक देती है।**

मैंने अपने आप को एक उलझनभरी स्थिति में पाया। मुझे मेरी चोटों को किसी की जानकारी में लाये बिना ही मंच तक चल कर जाना था। **तो मैंने संकल्प किया कि मेरी चोटों पर किसी का ध्यान नहीं जाए, ताकि वे चिंतित नहीं हों।** मैं मंच तक गया और अपने स्थान पर बैठ गया। लेकिन इस बीच मेरे चोगे के नीचे की धोती रक्त से सराबोर हो गई। यह देखकर कि भक्त इस बारे में जान जायेंगे मैं सतर्कता से बाथरूम में चला गया। रिसते खून को साफ करने के लिये वहाँ उपलब्ध तौलिये पर्याप्त नहीं थे। मैं रक्तरंजित तौलिये बाथरूम में छोड़ना नहीं चाहता था ताकि किसी की नजर उन पर नहीं पड़ जाये। हालाँकि, दर्द अत्यंत तीव्र था फिर भी मैंने स्वयं तौलियों को साबुन से धोया, निचोड़ा और फिर उन्हें सूखने के लिये ऊपर डाला। किसी भी हालत में मैं अपनी परेशानी, दर्द और थकावट प्रकट नहीं करता। कुछ बच्चे यह जानने को उत्सुक थे कि मैं बार–बार बाथरूम क्यों जा रहा था। मैंने उन्हें जवाब दिया, "तुम क्यों परेशान हो? यह मेरा मामला है?" आमतौर पर मैं केवल दो बार बाथरूम जाता हूँ, सुबह और शाम। लेकिन खून बहुत ज्यादा बह रहा था इसलिये उस छोटे से अन्तराल में मुझे 5-6 बार बाथरूम जाना पड़ा। इस बीच में दो विद्यार्थी आये और ध्वजारोहण के लिये प्रार्थना की। जब मैं कुर्सी से उठा तो ऐसा महसूस हो रहा था कि मुझे बिजली का झटका लग रहा हो। इस घटना पर विचार करने पर मुझे अपने आप पर हँसी आई। मै जमीन पर ठीक से खड़ा नहीं हो पा रहा था। मैंने सोचा कि मुझे देह के मोह से भ्रमित नहीं हो जाना चाहिये और मुस्कराते हुए ध्वजारोहण के लिये आगे बढ़ा। फिर मैंने दीप जलाया। मैंने अपने आप को परेशानी की स्थिति में पाया। मैं किसी भी मुद्रा में ठीक से बैठ नहीं पा रहा था। जब मैं सभी भक्तों को देह का मोह त्यागने की

सलाह देता हूँ, तो मुझे स्वयं भी इस सम्बन्ध में एक उदाहरण पेश करना चाहिये। इस तरह से स्वयं को कहकर मैंने इसके अनुसार व्यवहार किया।

प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया और मेरे साथ फोटो खिंचवाने की इच्छा प्रकट की। क्योंकि मैं उन्हें निराश नहीं करना चाहता था,उनकी प्रार्थनानुसार मैं उनके पास तक गया और फोटो खिंचवाई। इसी तरह बाकी बचे हुए विद्यार्थियों के साथ फोटो खिंचवाने के लिये मैं 5 बार और मैदान में गया। इस तरह मैंने अपने आप को देह से विरक्त कर लिया। मेरा शरीर सुन्न था। उसमें किसी भी प्रकार की कोई अनुभूति नहीं थी। मेरा सिर चकरा रहा था। **चाहे मेरी देह को कुछ भी हो जाये मैं उन्हें प्रसन्न करने के लिये कृतसंकल्प था। मैंने यह अपने तक ही रखने का निर्णय लिया।** इस विचार से कि जब खेल के मैदान से मंच पर वापस आउँगा खून के धब्बे दिख सकते हैं, मैं अपनी कुर्सी तक आने वाली सीढ़ियाँ चढ़ गया। **क्या किसी मनुष्य के लिये इतने विशाल जनसमुदाय के बीच में लोगों की एकटक दृष्टि के बीच इतने लम्बे समय तक इतनी बड़ी चोट छिपाना सम्भव है? नहीं।** मैं अपने स्थान पर लगातार 5 घंटे तक बैठा रहा था। **मैं यह सब इस लिये सुना रहा हूँ ताकि भक्त और विद्यार्थी दिव्यता की प्रकृति को समझ सकें। मेरी परिस्थिति में कोई भी एक क्षण के लिये भी बैठने में सक्षम नहीं होता। एक कदम आगे रखना भी असम्भव होता। यह ऐसा था जैसे बिजली का झटका मेरे शरीर को चीर रहा हो।** यह विद्युत धारा होती है जो झटका देती है, लेकिन जब मैं स्वयं ही विद्युत धारा हूँ, तो मुझे विद्युत से झटका लगने का प्रश्न ही कहाँ उठता है?

इस भावना के साथ मैं पूरे समारोह में बैठा रहा और मन्दिर वापस लौट आया। सेन्ट्रल ट्रस्ट के सदस्य मेरे साथ आये पर वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि मुझे क्या हुआ था। जो हुआ था इसके लिये वरिष्ठ भक्त ने मुझसे क्षमा मांगी। तब मैंने उन्हें कहा, "कि तुम अतीत के बारे में क्यों चिन्तित होते हो? जो बीत गया सो बीत गया। मैं प्रसन्न हूँ। मेरे बारे में चिन्तित मत हो।" उन सभी ने अपना दोपहर का भोजन किया। भोजन के बाद पुनः रक्तस्त्राव होने लगा। सभी विद्यार्थी बाहर फोटो खिंचवाने के लिये इंतजार कर रहे थे। खून साफ करने के लिये मैं पुनः बाथरूम में गया। यह देखकर इन्दूलाल शाह चीख पड़े, "स्वामी, यह क्या है?" मैंने उन्हें प्रेम से कहा, "इन्दूलाल शाह, देह को जो होना था वो हो गया", यह कहकर मैंने उन्हें अपनी चोट बताई। वे सभी व्यथा से रो पड़े। उन्होंने हर तरफ खून लगा देखा। मैंने उन सभी से कहाकि यदि वे इस तरह से अपना दुःख व्यक्त करेंगे तो भविष्य में मैं उन्हें कभी भी कुछ नहीं बताउँगा। मेरे मन्दिर पहुँच जाने तक किसी को भी इसके बारे में कुछ भी पता नहीं लगा। **इसी तरह, मैं अपने विद्यार्थियों और भक्तों की रक्षा करने के लिये उनकी अनकही विपत्तियाँ अपने ऊपर ले लेता हूँ।** इस दुर्घटना के लिये काई भी जिम्मेदार नहीं है। तुम एक व्यक्ति या किसी अन्य की गलती ढूँढ़ सकते हो, लेकिन इसके लिये कोई भी जिम्मेदार नहीं है। बस इतना ही।

यह वाकया मैं सिर्फ इस तथ्य की पुष्टि करने के लिये बता रहा हूँ कि मेरे जो भक्त मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं मैं उनकी रक्षा करने के लिये किसी भी हद तक जा सकता हूँ।

जब मैं मन्दिर वापस लौटा मैंने उन चारों बालकों को बुलाया। उन्होंने मेरी चोटों को देखा और दुःखी हो गये। मैंने उन्हें मेरी आज्ञा नहीं मानने पर डाँटा। मैंने उन्हें पूछा, "जैसी मैंने उन्हें आज्ञा दी थी वे उस समय वहाँ पर उपस्थित क्यों नहीं थे? यदि तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया होता, तो आज यह घटना नहीं घटी होती।" मैंने उन्हें कहा कि वे इस बारे में दुःखी नहीं हों।

– दिव्य प्रवचन, प्रशान्ति निलयम, 14 जनवरी 1999

जैसे ही स्वामी ने अपना दिव्य–प्रवचन खत्म किया, भावनाओं का ज्वार बहने लगा; भक्त सुबकने लगे, विद्यार्थी रोने लगे। स्वामी ने अपने ऊपर सिर्फ गम्भीर चोटें ही नहीं ली, बल्कि, समारोह में किसी तरह का खलल नहीं पड़े इसको ध्यान में रखते हुए अत्यन्त सावधानीपूर्वक उन्हें अपने भक्तों से छुपाया भी। केवल अपने भक्तों की संतुष्टि के लिये वे पूरे कार्यक्रम के दौरान उस तीव्र दर्द में भी बैठे रहे। हमारे प्रति स्वामी के प्रेम का शब्द कैसे वर्णन कर सकते हैं? बावजूद इसके कि विद्यार्थियों ने उनके निर्देश की अवहेलना कर दी थी, फिर भी उन्होंने उनकी रक्षा की। जब भी उनके भक्तों के हित की बात आती है, हजार माताओं के प्रेम के बराबर अनन्त प्रेम रखने वाले स्वामी कोई समझौता नहीं करते। हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमें उनका प्रेम प्राप्त है।

स्वामी का अपनी देह के साथ "निर्णायक कार्य" करने की उदारशीलता को समझने के लिये, हम एक लोकप्रिय घटना पर मनन करते हैं कि किस तरह से स्वामी ने एक विद्यार्थी का दमा अपने ऊपर लेकर उसे बीमारी से मुक्त कर दिया था। वृन्दावन का एक छात्र अस्थमा[1] की बहुत गम्भीर अवस्था में था। अपनी बीमारी से मुक्ति के लिये वह स्वामी को पत्र लिख–लिखकर प्रार्थना कर रहा था। एक सायंकालीन दर्शन के दौरान, स्वामी सीधे उस बालक के पास गये और उसका हाथ थाम लिया। एक ही क्षण में उस विद्यार्थी ने देखा कि स्वामी कठिनाई से श्वांस ले पा रहे हैं। यह जानकर कि स्वामी उसकी बीमारी को अपने ऊपर ले रहे हैं, वह बालक विलाप करने लगा, बाबा, मैं आपसे मेरी बीमारी ठीक करने की प्रार्थना कर रहा था ना कि मेरी बीमारी अपने ऊपर ले लेने के लिये। कृपया मेरे लिये पीड़ा नहीं लें। इतना कहकर, उसने स्वयं को स्वामी की पकड़ से छुड़ाने का प्रयास किया। लेकिन स्वामी दो मिनिट तक उसका हाथ थामे रहे और फिर सामान्य रूप से श्वांस लेने लगे। फिर उन्होंने गहराई से उस बालक की ओर देखा ओर बोले:

> तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हें क्या हो रहा है यह जानने के लिये मुझे तुम्हारे पत्रों की आवश्यकता पड़ती है? मैं तुम्हारे अस्थमा के बारे में जानता हूँ। तुम्हारा कर्म बन्धन मुझे स्थानान्तरित हो गया है। **तुम्हारी 20 वर्ष की पीड़ा मेरी 2 मिनिट की पीड़ा के बराबर है।**

यदि एक व्यक्ति की 20 वर्ष की पीड़ा स्वामी की केवल 2 मिनिट की पीड़ा के बराबर थी, हम यह समझने का प्रयास भी कैसे कर सकते हैं कि उन 28 दिनों में हमारे प्रिय स्वामी ने किस परिमाण में कर्म–बन्धन अपने ऊपर लिये होंगे? और जब वे चुपचाप पीड़ा सह रहे थे इसके पहले कितने दिन, सप्ताह और महिने यह गणना की बात नहीं है!

प्रार्थना की शक्ति

> याद रखो इस संसार की रक्षा करने के लिये इसमें ईश्वर के नाम से अधिक शक्तिशाली कुछ भी नहीं है। ये हथियार और बम नहीं हैं जिनसे संसार की रक्षा होगी। केवल ईश्वर का नाम ही संसार की रक्षा करेगा। मनुष्य के लिये सर्वोत्तम कर्तव्य यह है कि वह ईश्वर की कृपा के लिये प्रार्थना करे। प्रार्थना का महत्व सबसे अधिक है।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 24 अध्याय 4

> सच्ची प्रार्थना से, बुराईयों के पहाड़ भी चूर–चूर हो कर नष्ट हो जाते हैं।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 13 अध्याय 26

[1] दमा

जब स्वामी अस्पताल में थे उनसे स्वयं उनको स्वस्थ करने के लिये सभी भक्त गम्भीरतापूर्वक प्रार्थना कर रहे थे। संसार के समस्त भागों में निरन्तर प्रार्थनायें और मन्त्र जाप चल रहे थे। स्वामी के प्रत्येक भक्त के मन में केवल एक विचार था, स्वामी का स्वास्थ्य। यदि मैं केवल अपने मामले में विचार करूँ, तो आज तक मैंने कभी भी इतनी एकग्रता के साथ प्रार्थना नहीं की थी जितनी उन 28 दिनों में की थी। मैं मानता हूँ कि प्रत्येक साई भक्त की भी यही स्थिति रही होगी। केवल साई भक्तों के समन्वित प्रयासों के परिणामस्वरूप ही उन 28 दिनों में इस संसार में सकारात्मक स्पंदनों का स्तर अत्यंत बढ़ गया होगा। सुश्री सीमा देवन को अनुभूत संदेशों में से 4 अप्रेल 2011 को प्राप्त "केवल तुम्हारे लिये" नामक एक संदेश में स्वामी ने उनसे एक रहस्योद्घाटन किया (केवल अंश प्रस्तुत है)।

"(...) **जब ईश्वर का नाम निरन्तर लिया जाता है तब वह उस नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त कर देता है जो आज विश्व पर मंडरा रही है।** मैं हमेशा आनन्द में रहता हूँ, तब भी जब मेरी देह ऊँच–नीच से गुजरती है। मैं दर्द अनुभव नहीं करता हूँ ... मैं केवल तुम्हें... तुम्हारी सुरक्षा याद रखता हूँ... और मैं आनन्द में रहता हूँ। अधिकांशतः तुम मुझे परेशानी के समय में याद करते हो। लेकिन मैं तुम्हें परेशानी कैसे दे सकता हूँ? मैं तुम्हारी माँ हूँ। मैं हमेशा तुम्हारी भलाई करता हूँ। तुम्हारा एक आँसू भी मुझे तुम्हारी सहायता के लिये दौड़ा देता है। तुम मुझे देख नहीं पाते क्योंकि तुम्हारी आँखें केवल इस संसार को देखने की अभ्यस्त हैं।

तुम भी केवल मैं हूँ। **नकारात्मक ऊर्जा दूर करने के लिये तुम्हें केवल ईश्वर का नाम याद रखना चाहिये। इसलिये मैंने यह बीमारी अपने ऊपर ली है। तुम मुझे याद रखो... प्रार्थना करो और इसके द्वारा एक शुद्ध और पवित्र मनोदशा धारण करो। केवल तुम्हारे अंतः में उत्पन होने वाली उस सकारात्मक ऊर्जा के द्वारा ही तुम पर या तुम्हारे अपनों पर आने वाली परेशानियाँ और आपदाऐं दूर हो जायेंगी।**

मुझसे पूछो शरीर की व्याधियाँ कुछ भी नहीं हैं। **तुम्हें पीड़ा होती है जब तुम मुझे इस तरह से देखते हो और इससे तुम प्रार्थना ,प्रेम, एकता और सत्कार्य करने के लिये शक्ति प्राप्त करते हो। यह केवल वही है जो मैं तुम्हारे लिये चाहता हूँ।** तुम्हारी शांति केवल अच्छाई में ही है।

(...) जब माँ बीमार होती है तो आपस में लड़ने वाले भाई–बहन भी एक हो जाते हैं। **मैं तुम्हें एक–दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण एकता के साथ पूरी तरह से एक देखना चाहता हूँ और विश्वास रखो कि तुम पूरी तरह से मेरी छत्र छाया में हो।"**

स्वामी स्पष्टरूप से अपनी इच्छा व्यक्त कर रहे हैं कि संसार को नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त करने के लिये भक्त सच्चे हृदय से प्रार्थना करें। क्या वास्तव में संसार की भलाई सुनिश्चित करने के लिये समस्त नामस्मरण और प्रार्थनाओं का दिशा परिवर्तन कर दिया गया था ? बीमारी लेने का स्वामी का तरीका शायद उनके भक्तों को प्रार्थनाओं के लिये एक करना हो सकता है। जब साई माँ बीमार हुई तो उसके सारे बच्चे उसके लिये प्रार्थना करने के लिये एक हो गये। स्वामी के भौतिक रूप में जाने के बाद भी साई परिवार में बन्धुत्व दस गुणा बढ़ गया है। हरएक ने दूसरे की देखभाल की आवश्यकता महसूस की है। भक्ति बढ़ी है। साई गतिविधियों में वृद्धि हुई है। हरएक को यह लगता है कि स्वामी उनके पहले से ज्यादा नज़दीक हैं। लोग भौतिक रूप से ऊपर उठकर उनको "हृदयवासी" के रूप में पहचान रहे हैं।

समाचार जो चारों दिशाओं में फैला

मार्क ट्वेन ने एक बार कहा था: "जब तक सच पहला कदम भी चलना शुरू करे, झूठ आधी दुनिया का चक्कर लगा लेता है"। यही स्थिति अरुचिकर समाचार के बारे में थी। शीघ्र ही यह चारों तरफ फैल गया। वास्तव में सारे संसार में अनेक लोगों को स्वामी के बारे में जानकारी उनके भौतिक देह छोड़ने के समाचार से मिली। यह जानकर विचित्र सा लगता है कि कुछ दिनों तक स्वामी के भौतिक देह छोड़ने का समाचार गूगल का सबसे पहला अर्न्तराष्ट्रीय समाचार और "टाईम" पत्रिका के अनुसार 2011 का ग्यारहवाँ सबसे बड़ा समाचार था। जिन लोगों को स्वामी के बारे में नकारात्मक जानकारी थी वे शायद अपना दृष्टिकोण भारत सरकार द्वारा उन्हें राजकीय सम्मान के साथ विदा करने से बदल सके हों।

दूसरी ओर, वहाँ नकारात्मक प्रचार बहुत ज़्यादा था। भारत से बाहर रह रहे भक्तों का सामना ऐसे लोगों से हुआ होगा जो हाल ही में भारत में गुजर गये उनके गुरू के बारे में पूछताछ कर रहे थे।[१] विशेषकर, वे यह जानने में ज्यादा उत्सुक थे कि उनके 96 वर्ष तक जीवित रहने की भविष्यवाणी विफल कैसे हो गई।[२] जब स्वामी अस्पताल में भर्ती हुए उस समय से ही साई भक्त संघों पर विभिन्न समूहों द्वारा कटुतापूर्ण हमले हुए। जब साईभक्त स्वामी से स्वयं को स्वस्थ करने के लिये गम्भीरतापूर्वक प्रार्थनाऐं कर रहे थे, तब ये लोग प्रश्न कर रहे थे कि जो स्वयं बीमार हो और अस्पताल में भर्ती हो उसे ईश्वर कैसे मान लिया जाए। स्वामी के भौतिक देह त्यागने के बाद, वैश्विक माध्यम हमारे विश्वास का मजाक उड़ाने पर उतर आये थे। ऐसा होने के बावजूद भी, कारण चाहे जो भी हो महत्वपूर्ण यह है कि उनका नाम चारों दिशाओं में फैल रहा था। अब कल्पना कीजिये कि जब स्वामी वापस आयेंगे तो ज्यादातर लोगों ने उनके और उनकी विफल भविष्यवाणी के बारे में सुना ही होगा!

मेरे विचार से, समस्त नकारात्मक प्रचार किसी उद्देश्य से ही रहा होगा और संम्भवतः दिव्य योजना का हिस्सा रहा होगा। जब विभिन्न लोग अपने स्वार्थवश उनकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे और वे निष्फल रूप से साई भक्तों का विश्वास कम करने का प्रयास करेंगे, मेरे अपने लालायित मन में मैं एक दिव्य नाटक का पर्दा उठता देखता हूँ , एक गरज़दार जवाब जो इस ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म विस्तार में आकार ले रहा है।

> (...) वे भी जो स्वामी के सत्य को पहचान नहीं पाये हैं उनको पश्चाताप के आँसुओं के साथ आना होगा और मेरा अनुभव करना होगा। शीघ्र ही, यह विश्वव्यापी होगा।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 15 अध्याय 55

कोई भी नाटक कमजोरियों के साथ आनन्ददायक कैसे होगा? नाटक लिखने वाला नाटककार मुख्य पात्र के बारे में कुछ कठिनाईयाँ जरूर डालता है ताकि अंत में उस पात्र की जीत पर दर्शक बहुत प्रसन्न हो सकें। स्वयं स्वामी के द्वारा लिखित और निर्देशित इस दिव्य–नाटक में वे अपने लिये ही अप्रत्याशित बदलाव क्यों नहीं शामिल करें? ताकि उनके भक्त जिन्होंने अपना सर्वस्व उनके चरण कमलों में अर्पित कर दिया है उनकी निर्णायक जीत के आनन्द में नाच सकें !

---

[1] भारत में ज्यादातर लोग उनके बारे में जानते हैं।

[2] भारत में भी यही स्थिति थी

यह (दिव्य) घटना सत्य पर खरी उतरेगी, यह झूठ को उखाड़ फेंकेगी, ओर **उस जीत से तुम सभी प्रसन्नता से नाचने लगोगे**। यह साई–संकल्प है।

–दिव्य प्रवचन, 17 मई 1968

एक तीर से कई शिकार

"मैं इस अवतार का उद्देश्य अवश्य पूरा करूँगा, इसमें सन्देह मत करो। मैं अपनी योजना पूरी करने के लिये अपने अनुसार समय लूँगा। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मैं इसलिये जल्दी नहीं कर सकता क्योंकि तुम्हें जल्दी हो रही है। मैं कुछ समय इंतज़ार कर सकता हूँ , जिस तरह किसी इंजन को केवल एक डिब्बा खींचने के लिये उपयोग में नहीं लाया जाता, बल्कि तब तक इंतजार किया जाता है जब तक कि उस इंजन की क्षमता के अनुरूप ढुलाई इकट्ठा नहीं हो जाती। उसी प्रकार, कई बार, मैं भी एक बार में ही दस कार्य करने के लिये इंतजार करता हूँ। लेकिन **मेरे वचन कभी व्यर्थ नहीं होंगे, जैसा मैं चाहूँगा वैसा ही होगा।"**

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग 1 अध्याय 31

स्वामी ने अपना शरीर क्यों छोड़ा इस विषय पर स्वयं स्वामी के शब्दों के आधार पर हम अनेक कारणों की चर्चा कर चुके हैं, जैसे : एक स्वर्णिम युग का आगमन होना था, आपदाओं को टलना था, सामूहिक कर्म–बन्धनों का और नकारात्मक ऊर्जा को दूर किया जाना था।

यह कैसे सम्भव था? उनकी देह में कर्मों के ले लिये जाने के द्वारा ओर भक्तों से प्रार्थना करवाकर। यह यहीं नहीं थम जाता। उनके भक्तों के समर्पण और साधना की तीव्रता में वृद्धि कैसे करवाते? उनको और अधिक एकता में कैसे बाँधते? उनको इस बात का अहसास कैसे करवाते कि साई केवल एक भौतिक देह ही नहीं है; वह हर व्यक्ति और हर वस्तु में है? यही नहीं, अनेक लोगों को स्वामी के बारे में जानकारी उनके भौतिक देह छोड़ने के समाचार से मिली। उन्होंने ठीक ईस्टर के दिन अपनी भौतिक देह त्यागी।[1] स्वामी ने कहा है कि वे कई बार तबतक इंतजार करते हैं जबतक कि वे एक ही बार में दस कार्य ना कर सकें। लेकिन उनके अस्पताल में दाखिल होने और अंततोगत्वा भौतिक देह त्यागने में, शायद उन्होंने बीस कार्य पूरे किये होंगे!

किसी भी चीज के बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। जो भी अनुभव हो, जो भी हो, यह जान लो कि अवतार की यह योजना थी। इस पृथ्वी पर कोई भी ताकत नहीं है, जो इस अवतार के उद्देश्य में एक मिसाल के तौर पर भी कोई रुकावट उत्पन्न कर सके।

–सनातन सारथी, अक्टूबर 1996, अंतिम आवरण पृष्ठ

[1] कृपया "पुनर्जीवित होने की महिमा" नामक अध्याय देखें

अध्याय 11: पुनर्जीवित होने की महिमा

ईसामसीह के अनुयायियों का विश्वास है कि अपने शिष्यों का पाप अवशोषित कर लेने के लिये क्रास पर पीड़ा भोगी और मृत्यु प्राप्त की। स्वामी ने भी यह उल्लेख किया है कि जीसस ने अपने अनुयायियों के लिये अपना जीवन बलिदान कर दिया।

> जिन्होंने मुझे समर्पण कर दिया है उनके कष्ट अपने ऊपर ले लेना मेरा कर्तव्य है। मुझे कोई कष्ट नहीं है और जब मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ तुम्हें कष्ट भोगने का कोई कारण नहीं है। यह समस्त लेन–देन प्रेम का खेल है। यह मेरे द्वारा प्रेम से लिया गया है; तो मुझे कष्ट कैसे हो सकता है? **ईसामसीह ने अपना जीवन उन लोगों के लिये बलिदान कर दिया जिन्होंने अपनी आस्था ईसामसीह में व्यक्त की थी। उन्होंने इस सत्य का प्रचार किया कि सेवा ही ईश्वर है, त्याग ही ईश्वर है।**
>
> –बाबा, सत्य साई भाग 2, पृष्ठ 171

हमें पवित्र बाइबल से ज्ञात है कि ईसामसीह ने सूली पर चढ़ा दिये जाने के तीन दिन बाद स्वयं को जीवित कर लिया था। वही देह जो कर्म–बन्धन अवशोषित करने से नष्ट हो गई थी उनकी दिव्य शक्तियों से पुनर्जीवित हो गई थी। लेकिन ईसामसीह के पुनर्जीवित हो जाने के बाद की गतिविधियों के बारे में हम कम ही जानते हैं। पवित्र बाइबल में उदाहरण दिये गये हैं जिनमें उनके नज़दीकी भक्तों को पुनर्जीवित हो जाने के बाद उन्होंने दिव्य–दर्शन दिये हैं। इसके बाद वे और क्या करते?

आइये हम पेग्गी मेसन और रॉन लेंग की पुस्तक "सत्य साई बाबा" के एक अंश की चर्चा करते हैं।

> मैं बाबा से एक प्रश्न पूछने को उत्सुक था। इसलिये, मैंने कहा:
> "स्वामी, एक बात है जिसके बारे में मैं लम्बे समय से जानना चाहता था। क्या ईसामसीह की भौतिक देह मकबरे में मिली थी? मेरा मतलब, यह उसी तरह से उस दिव्यात्मा का साकाररूप नहीं था– जिस तरह से योगानन्द को उनके गुरू (स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरि) ने समाधी लेने के तीन माह बाद पूर्ण सूक्ष्म शरीर में दर्शन दिया था?"
>
> स्वामी ने जवाब दिया, "नहीं – भौतिक देह। सूक्ष्म रूप नहीं। साकार रूप। भौतिक रूप।"
>
> मैंने कहा, "अहा!" "तब, क्या उन्होंने कश्मीर तक अपना उद्देश्य जारी रखते हुए, पूर्व दिशा में यात्रा की?"
>
> "हाँ– और उन्होंने कलकत्ता और मलेशिया तक यात्रा की।"
>
> "तो क्या यह ईसामसीह की देह है जिसे कश्मीर में श्रीनगर की रज़बल दरगाह में दफनाया गया था?"
>
> स्वामी ने सहमति में सिर हिलाया, और कहा "हाँ" (...)
>
> –सत्य साई बाबा, द एम्बाडीमेन्ट ऑफ लव, पृष्ठ 48-49

उपरोक्त पुस्तक स्वामी के साथ पेग्गी मेसन के उस इंटरव्यू के बारे में बताती है जिसके दौरान वे उनसे पूछती हैं कि ईसामसीह उनकी वास्तविक भौतिक देह में पुनर्जीवित हुए थे या यह प्रकट की गई थी। स्वामी जवाब देते हैं कि यह उनकी वास्तविक भौतिक देह थी। और स्वामी उन सब तथ्यों कि पुष्टि करते जाते हैं जिसके बारे में कई शोधकर्ताओं ने तब तक केवल अनुमान ही लगाया था। कि पुनर्जीवित हो जाने के बाद ईसामसीह ने भारत तक यात्रा की थी ओर यह भी कि वास्तव में श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर, भारत) में रज़बल दरगाह का मकबरा उनका है। ऐसा माना जाता है कि ईसामसीह की देह (जिसे संसार के उस हिस्से में युज़[1] असफ के नाम से जाना जाता है) को उनकी वास्तविक मृत्यु के बाद वहाँ दफनाया गया था। ऐसा भी माना जाता है कि पुनर्जीवित होने के बाद कई वर्षों तक ईसामसीह ने आध्यात्मिक गुरू के रूप में जीवन व्यतीत किया था। स्वामी के साथ पेग्गी मेसन के साक्षात्कार में स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरि की घटना का भी सन्दर्भ है जिन्होंने अपनी मृत्यु के तीन माह बाद पुनर्जीवित होकर अपने शिष्य श्री परमहंस योगानन्द जी को सशरीर दर्शन दिया था। जैसा कि स्वामी ने स्वयं अपरोक्ष रूप से पुष्टि की है, श्री युक्तेश्वर गिरि सूक्ष्म शरीर में पुनर्जीवित हुए थे, इस तरह से दो प्रकार के पुनर्जीवित होने की चर्चा हो रही है। शिर्डी साई बाबा ने भी अपनी देह त्यागने के केवल तीन दिन बाद उसमें पुर्नप्रवेश किया था, महत्वपूर्ण यह है कि पुनर्जीवित होने की क्रिया समय–समय पर होने वाले अवतारों[2] के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। लेकिन जब हम दूसरे दृष्टिकोण से देखते हैं तो, वास्तव में यह मृत्यु है जो पुनर्जीवित होने को महत्व प्रदान करती है। यदि मृत्यु ही नहीं होगी तो पुनर्जीवन कैसे होगा। वास्तव में, ईसामसीह के उस एकमात्र कार्य ने आज उन्हें करोड़ों लोगों का आराध्य बना दिया। 1-कोरिन्थियन्स 15 (नये टेस्टामेन्ट) में, संत पॉल ने ईसामसीह के पुनर्जीवित हो जाने के महत्व का विस्तार से वर्णन किया हैं।

यदि ईसामसीह नहीं उठे, तो हमारा प्रवचन देना व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।

–1 कोरिन्थियन्स 15:14, केजेवी

---

[1] युज़ अर्थात् जोसेफ का पुत्र

[2] अनुवादक की टिप्पणी: श्री राम अवतार में सीता माता ने लक्ष्मण जी के स्वर्ण मृग के पीछे जाने के बाद श्री राम के सामने ही अपनी भौतिक देह अग्नि को समर्पित कर दी थी और सूक्ष्म देह में अग्नि से प्रकट हुई थीं। इसके बाद रावण विजय के बाद, भगवान श्री राम ने अग्नि परीक्षा के बहाने उनकी सूक्ष्म देह को पुनः अग्नि में प्रवेश कराने का अवसर देकर भौतिक देह में प्रवेश कराया। इस तरह से यह भौतिक देह से सूक्ष्म देह में पुर्नजीवित होकर कई वर्षों तक जीवित रहने और सूक्ष्म देह से पुनः भौतिक देह में पुर्नजीवित होकर अनेक वर्षों तक जीवन बिताने का एक अनुपम उदाहरण है।

इसी प्रकार आदि शंकराचार्य ने भी मण्डन मिश्र के साथ हुए शास्त्रार्थ में गृहस्थ जीवन सम्बधित प्रश्न का जवाब देने के लिये अपनी देह अल्प समय के लिये त्याग कर मृत राजा की देह में प्रवेश किया था ओर गृहस्थ जीवन का अनुभव करने के बाद पुनः अपनी स्वयं की भौतिक देह में प्रवेश किया था। यह परकाया प्रवेश करके पुर्नजीवित होने का एक और अनुपम उदाहरण है।

धूनी वाले दादाजी, खण्डवा वाले दादाजी और साई खेड़ा वाले दादाजी के नाम से प्रसिध्द और स्वयं को शंकर का अवतार बताने वाले स्वयंभू संतश्रेष्ठ श्री दादा जी का कार्य क्षेत्र मध्यप्रदेश में नर्मदा–क्षेत्र रहा है. उन्होंने तीन बार मृत्यु के बाद और हर बार समाधिस्थ कर दिये जाने के बाद, तीन बार भौतिक देह धारण की. यही नहीं बल्कि खण्डवा (मध्यप्रदेश, भारत) में अपने अंतिम प्रयाण के बाद भी जब उनके भक्तों को उनके देह त्याग देने का ज्ञान नहीं था. और वे समझ रहे थे कि दादाजी समाधिस्थ हैं. तो दादाजी ने पुनः सूक्ष्म देह में पुर्नजीवित होकर स्वयं पुलिस थाने में जाकर पुलिस अधिकारी से कहा कि वे दादाजी के भक्तों को जाकर बतायें कि उन्होंने भौतिक देह त्याग दी है.

संत पॉल की टीका के लिये संक्षेप में कहा जा सकता है कि "पुनर्जीवन (मृतोत्थान या पुनरुत्थान) में विश्वास करना ही ईश्वर में विश्वास करना है"। क्योंकि यदि वास्तव में ईश्वर का अस्तित्व है और उसने ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है, तो उसमें मृतकों को जीवित कर देने की शक्ति भी है। जो जीवन प्रदान करते हैं, केवल वे ही मृत्यु के बाद पुनर्जीवित कर सकते हैं। संत पॉल यह भी समझाते हैं कि यदि पुनर्जीवन नहीं होता, तो ईसामसीह के बारे में प्रवचन देने का कोई अर्थ नहीं होता। पुनर्जीवन की घटना वह स्तम्भ है जिस पर ईसाई धर्म टिका हुआ है। ईसामसीह ने जितने भी चमत्कार किये थे उनमें से इसे सबसे बड़ा भी माना जाता है। इस्लामिक मान्यता में, वह दिन, जब वचन दिये गये शिक्षक महदी के उत्थान की आशा है को "याम अल–कियामह" कहते हैं, जिसका अरबी में अर्थ " पुनरुत्थान का दिन है"। जब स्वामी "नये आगमन" के बारे में बात करते हैं यह एक नये स्वर्णिम युग[1] की घोषणा होगी, क्या वे इसी तरह के चमत्कार की बात कर रहे थे? जिसे जीसस के पुनरुत्थान दिवस के रूप में मनाया जाता है, उस ईस्टर[2] पर्व का चुनाव स्वामी ने अपने भौतिक देह त्यागने के लिये क्यों किया। क्या वे हमें एक और संकेत दे रहे थे कि साई अवतार में भी यही होगा। कई साई पुस्तकों के लेखक और अनुवादक एक साई भक्त श्री बी. के मिश्रा अपना दृढ़ विश्वास व्यक्त करते हैं[3]:

> वे (स्वामी) एक दिव्यात्मा हैं। उन्होंने सिर्फ अपनी नश्वर देह त्यागी है। वास्तव में ईस्टर के दिन उनका भौतिक प्रयाण यह संकेत देता है कि वे बिल्कुल क्राइस्ट की तरह ही पुनर्जीवित होंगे।

देह का प्रश्न

> तुम चकित होगे कि मैं एक ही समय में एक साथ दो देह में, या एक हजार विभिन्न स्थानों पर हो सकता हूँ।
>
> –सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भाग 4, पृष्ठ 194

स्वामी के जाने के बाद उन कुछ दिनों में, मेरे दिमाग में कई विचार आये। क्या जीसस की ही तरह स्वामी कुछ ही दिनों में स्वयं को पुनर्जीवित कर लेंगे ? यदि उनको इतने जल्दी ही पुनर्जीवित होना था तो वे देह त्याग करते ही क्यों? स्वामी ने संकेत दिया था कि सम्पूर्ण संसार को उनकी दिव्यता का परिचय एक घटना के माध्यम से होगा। शायद पुनरुत्थान उस उद्देश्य को पूरा करेगा? लेकिन वास्तव में क्या तब विश्व इसे स्वीकार करेगा?[4] यदि स्वामी पुनर्जीवित होते हैं, तो क्या उन्हें उसी देह की आवश्यकता होगी? क्या यह उस देह के नष्ट हो जाने के पहले ही हो जाना चाहिये? इस तरह के कई प्रश्न हैं जो मैंने स्वयं से पूछे थे। लेकिन सत्य यह है कि जब स्वामी और उनके अभेद्य तरीकों की बात आती है तो कोई भी तर्क–शक्ति काम

---

[1] कृपया "उनकी अवश्यंभावी वापसी के संकेत" नामक अध्याय देखें।

[2] स्वामी ने भौतिक देह से प्रयाण के लिये ईस्टर पर्व चुना था और इसके महत्व को ध्यान में रखकर स्मृति दिवस मनाने के लिये और इसलिये उनकी शीघ्र वापसी की अवश्यंभाविता की प्रत्याशा में, इस पुस्तक का प्रथम अंग्रेजी संस्करण 8 अप्रेल 2012 को ईस्टर पर्व के दिन प्रकाशित हुआ था।

[3] दिनांक २५ अप्रेल २०११ को 'अहमदाबाद मिरर' नामक एक अखबार को दिये गये उनके वक्तव्य के अनुसार।

[4] मन में एक हल्का या अगम्भीर विचार आता है कि यदि स्वामी दो–तीन दिन के समय में ही वापस आ गये होते तो शायद प्रशासन सत्य साई ट्रस्ट के पीछे पड़ गया होता कि भक्तों ओर पूरे संसार को भ्रम में डालने के लिये यह नाटक किया गया है। क्यों कि दुर्भाग्य से यह ईसामसीह या शिर्डी साई बाबा वाला समय नहीं है!

नहीं करती है। देवताओं के भी देवता स्वामी समय और ब्रह्माण्ड से भी परे हैं। उनके लिये किसी शरीर को पुनः प्रकट करने का कार्य एक घास के तिनके को उठाने के समान है।

> इस ब्रह्माण्ड में ऐसा कुछ भी नहीं है जो दिव्य शक्ति प्राप्त नहीं कर सकती है। यह पृथ्वी को आकाश में और आकाश को पृथ्वी में परिवर्तित कर सकती है। इसमें सन्देह करना यह सिद्ध करता है कि ब्रह्म की महिमा को समझने में तुम अत्यन्त अक्षम हो।
>
> –श्री सत्य साई वचनामृत भाग 4, अध्याय 49

यहाँ तक की जब स्वामी ने भौतिक देह धारण की हुई थी, ऐसी घटनायें हुई थीं जब वे एक ही समय में विभिन्न स्थानों में उपस्थित हुए थे। ऐसा ही एक अनुभव जो याद आता है वह एक व्यवसायी श्री के. एन. पी. नायर[1] का है। 6 जून 1993 को स्वामी उनके घर सूक्ष्म देह में उपस्थित हुए थे। स्वामी नहीं सिर्फ उनके घर पर करीब चार घंटे रुके थे, बल्कि वे श्री नायर ओर उनकी पत्नि के साथ दार्शनिक स्थानों के भ्रमण पर भी गये थे। यह देह वास्तविक थी जिसे श्री नायर ओर उनकी पत्नि स्पर्श और अनुभव कर सकते थे। इस सब के दौरान उनकी भौतिक देह तब भी पुट्टपर्ति में ही अपने नियमित कार्यकलापों में व्यस्त थी। यह इसी तरह की कई उन घटनाओं में से एक है जब स्वामी एक ही समय में दो (या अधिक) स्थानों पर उपस्थित थे। अब प्रश्न यह उठता है कि कौनसी देह वास्तविक थी? वह 'देह' जो प्रशान्ति निलयम में अपने नियमित कार्यक्रमों में व्यस्त थी या वह 'देह' जो संसार के किसी दूसरे छोर पर अपने किसी भक्त के साथ समय व्यतीत कर रही थी? या दोनों? **कौनसी देह उनकी महासमाधि में विश्राम कर रही है?** हमारे पास इसका कोई जवाब नहीं हैं! जब स्वामी उनकी भौतिक देह में थे तब भी, वे केवल एक भौतिक देह तक सीमित नहीं थे। तो उनमें से केवल एक देह छोड़ देने के बाद भी कौनसी बाध्यताऐं होंगी?

'राम कथा रसवाहिनी' में स्वामी उल्लेख करते हैं, कि कैसे रावण ने "माया सीता" का अपहरण किया था ना कि "सीता माता या वास्तविक सीता का"। वास्तविक सीता माता को तो रावण स्पर्श भी नहीं कर पाया था। लेकिन नाटक तो होना ही था ताकि रामावतार का उद्देश्य पूरा हो सके। और रावण की मृत्यु के बाद अग्नि परीक्षा के प्रहसन के द्वारा सीता माता के वास्तविक रूप के प्रकट होने तक माया–सीता की भूमिका रही, और माया रूप में वे वास्तविक सीता माता के समान उसी तरह कार्य करती रहीं जैसी उस दिव्य नाटक में उनकी आवश्यकता थी। जब स्वामी पूर्व अवतारों के सम्बन्ध में इस तरह के सूक्ष्म सत्य प्रकट करते हैं, तो वास्तव में वे उनके स्वयं के अवतार के सहित अवतारों के सामान्य व्यवहार पर संकेत करते हैं। "अतुल्यनीय नाड़ी ग्रंथ" नामक अध्याय में हमने कुछ नाड़ी ग्रन्थों को स्वामी की माया देह के बारे में उद्धत करते देखा। और हमने महदी के बारे में भविष्यवाणियाँ भी देखीं, जो महदी के अदृश्य हो जाने की ओर संकेत करती हैं जो महदी की मृत्यु के सदृश्य प्रतीत होता है। तो यह सम्भव हो सकता है कि स्वामी का देह त्याग बाह्य भौतिक जगत के लिये एक भ्रम था और इस परिस्थिति में उनकी वापसी उनकी वास्तविक देह का प्रकटीकरण या पुनरागमन हो सकता है!

[1] सन्दर्भः श्री टेड हेनरी और श्रीमती जोडी क्लेअरी द्वारा लिये गये श्री के. एन. पी. नायर के वीडियो साक्षात्कार– souljourns.net

निर्माण काया[1] का सिद्धान्त

भौतिक रूप से मृत्यु हो जाने के बाद भी देह का पुनः निर्माण कर लेने की क्षमता का वर्णन "निर्माण काया"[2] के रूप में किया जाता है। यह सर्वोच्च यौगिक शक्तियों में से एक मानी जाती है। ऐसा माना जाता कि बहुत पहुँचे हुए योगियों में ही यह क्षमता होती है। ईशा फाउण्डेशन[3] के सद्गुरू जग्गी वासुदेव की व्याख्या में मैंने इसे पाया था:

> भूतकाल में अनेक योगी हुए हैं, जो अभी भी हैं, उन्होंने अपनी अतिसूक्ष्म देह अभी भी धारण की हुई है, और करे रहेंगे। जब भी वे आवश्यकता समझेंगे, वे अपनी स्थूल देह को धारण करने में सक्षम हैं (...) जो अपनी देह का पुनर्निर्माण स्वयं करते हैं इस तरह के लोगों को "निर्माण काया" कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि गौतम बुद्ध निर्माण–कायाओं में से एक थे। ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने स्वयं अपनी देह का निर्माण किया पहले यह जैसी थी, एक युवा देह जैसी वे चाहते थे (...) समय कोई समस्या नहीं है।

यदि योगियों में अपनी देह के पुनर्निर्माण की शक्ति है, क्या सर्वशक्तियों के प्रदाता यह नहीं कर सकते हैं? मेरा अनुमान है कि यह प्रश्न तो कभी था ही नहीं कि स्वामी ऐसा कर सकते हैं कि नहीं। बहुत से यह तर्क देते हैं क्योंकि स्वामी प्रकृति के नियमों का सम्मान करते हैं, वे उनके विरुद्ध नहीं जायेंगे। तो क्या इसका अर्थ यह है कि जीसस प्रकृति के नियमों के खिलाफ भी कार्य कर रहे थे? तथापि, मैं ऐसी कई घटनाऐं बयान कर सकता हूँ जहाँ स्वामी पहले ही प्रकृति के नियमों को लांघ चुके थे। स्वामी ने स्वयं इस बात के होने की पुष्टि की है।

आइये हम स्वामी के निम्नलिखित उद्धरण को लेते हैं:

> कुछ वरिष्ठजन तुम्हें भ्रमित करते हैं। **कृष्ण ने आश्चर्यजनक रूप से प्रकृति के नियमों के खिलाफ जा कर अनेक चमत्कार दिखाये** और इसलिये, उन वरिष्ठजनों के अनुसार, उनकी मृत्यु एक शिकारी के बाण से हुई! वे कहते हैं ईसामसीह को भी सूली पर चढ़ाया गया, क्योंकि उन्होंने भी अनेक चमत्कार दिखाये! उनका तर्क है, मुझे भी उनकी (**कृष्ण** और ईसामसीह की) तरह ही भुगतना होगा **क्योंकि मैं भी प्रकृति के नियमों की अवज्ञा करता हूँ**! वे डर उत्पन्न करना चाहते हैं और घबराहट फैलाते हैं। लेकिन, ये सब कमजोरी, अज्ञान और ईर्ष्या से उत्पन्न वाचालता है। **वे इस महिमा को समझ नहीं सकते हैं, ना ही वे इसे सहन करने की इच्छा रखते हैं!**
>
> –सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भाग 3, अध्याय 8

उपरोक्त कथन में, स्वामी अपरोक्ष रूप से यह पुष्टि करते हैं कि सभी ने, भगवान कृष्ण, ईसामसीह और स्वयं उन्होंने प्रकृति के नियमों का उल्लंघन किया था। अवतार किसी भी चीज से प्रभावित नहीं होते। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रत्येक अवतार को प्रकृति के नियमों के परे जाना पड़ता है। वास्तव में, प्रत्येक अवतार के कार्यकाल में ऐसे विशिष्ट क्षण आये जब असाधारण कार्य किये गये ताकि लोग उन्हें दिव्यता के अवतरण के रूप में स्वीकार कर सकें, उनके बारे में भजनों की रचना, उन्हें गा सकें और उनकी महिमा का

---

[1] देह या शरीर

[2] यौगिक शक्तियों के द्वारा निर्माण या प्रकट की गई देह

[3] संदर्भ: सद्गुरू जग्गी वासुदेव द्वारा दिये गये प्रवचन के वीडियो से साभार–www.ishafoundation.org

ध्यान कर सकें। अतिवृष्टि से गाँव की रक्षा करने के लिये बाल्यकाल में ही भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठा लिया था। उन्होंने अपने गुरू के बारह वर्ष पूर्व मृत पुत्र के शरीर का निर्माण करके उसे जीवित कर दिया था। भगवान कृष्ण ने अचम्भित कर देने वाले ऐसे कई कार्य किये थे। जिसमें पृथ्वी से टकराने उसके समीप आ रहे नरक ग्रह को नष्ट करना भी शामिल है।[1] साई अवतार में भी, उन्होंने अगणित अविश्वसनीय चमत्कार किये, जिसमें भक्तों को पुनर्जीवित करने, वर्षा और बाढ़ रोक देने, बीमारियाँ ठीक कर देने और यहाँ तक की भक्तों को अतीन्द्रिय शक्ति द्वारा पल भर में दूसरे महाद्वीप में पहुँचा देने जैसे चमत्कार शामिल हैं। क्या यही कारण नहीं है कि उन्हें पहले चमत्कार ही कहा जाता है?

स्वामी के साथ एक साक्षात्कार में प्रसिद्ध पत्रकार आर. के. करंजिया ने उनसे पूछा कि क्या कारण है कि ईश्वर को मानव देह धारण करनी पड़ती है? स्वामी ने जवाब दिया:

> क्योंकि ईश्वर का मनुष्य के बीच में अवतरण का यही एक रास्ता है। अवतार मानवीय रूप धारण करते हैं और मनुष्य के समान व्यवहार करते हैं ताकि मानवता उनसे बन्धुता स्थापित कर सके और दिव्यता को अनुभव कर सके। **उसी समय वे ईश्वरीय उच्चता तक उठते हैं ताकि मानवता भी ईश्वर तक पहुँचने की प्रबल अभिलाषा रख सके।** अन्तः में विराजित ईश्वर ही प्राण की प्रेरणा हैं इसका ज्ञान कराना ही वह उद्देश्य है जिसके लिये अवतार मानवीय रूप में आते हैं।
>
> –द ब्लिट्ज इन्टरव्यू , सितम्बर 1976

मनुष्य को उसकी स्वयं की दिव्यता का स्मरण कराने के लिये ईश्वरीय कार्य भी उदाहरण हैं। कि यदि वे उस स्तर तक ऊँचा उठ सके तो वे भी दिव्यता के समान कार्य कर सकते हैं। इसलिये जीसस कहते हैं:

> मैं तुम से सत्य कहता हूँ , वह जो मुझ पर विश्वास रखता है, वह भी उन कार्यों को कर सकता है जो मैं करता हूँ; और इससे भी महान कार्य कर सकता है; क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ।
>
> –जॉन 14:12, केजेवी

स्वयं स्वामी ने पुनरुत्थान के बारे में क्या कहा है?

> वास्तव में, पुनरुत्थान क्या है? यह मनुष्य में अन्तर्निहित दिव्यता का प्रकटीकरण है।
>
> –दिव्य प्रवचन, 28 फरवरी 1964

इस संसार के लिये उदाहरण के रूप में स्वामी ने उनका जीवन व्यतीत किया। उनके चमत्कार हम सभी की अन्तर्निहित क्षमताओं का स्मरण कराने वाले रहे हैं। इसलिये स्वामी हमेशा कहते हैं, "मैं ईश्वर हूँ और तुम भी ईश्वर हो"। तो उनके पुनरागमन के विरुद्ध यह मान्यता कि यह प्रकृति के नियमों का उल्लंघन होगा पूर्णतः निराधार है। वास्तव में, पृथ्वी पर अवतरित महानतम अवतार की महिमा में यह तो केवल एक अलंकरण होगा!

---

[1] एक बार, नरक ग्रह पृथ्वी के अत्यंत समीप आता प्रतीत हुआ. पृथ्वीवासी अचानक आने वाली इस महाविपत्ति के भय से भर गये। उन्होंने भगवान से इस अवश्यंभावी आपदा को दूर करने और उनकी रक्षा करने की प्रार्थना की। उस अवस्था में, श्री कृष्ण ने उस ग्रह को नष्ट करने के लिये उनके प्रज्ञान का उपयोग किया।

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग 24 अध्याय 26

अध्याय 12: निष्कर्ष

इस पुस्तक में स्वामी की अवश्यंभावी वापसी पर कई संकेत दिये गये हैं। हालाँकि, मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि यह उनके भक्तों का विश्वास और उनकी प्रार्थना ही है, जो उन्हें वापस लायेगी। स्वामी ने एक बार कहा था कि भक्तों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वे प्रशान्ति निलयम से अलग हो जाने के लिये भी तैयार हैं।

> मैं तुम्हारी प्रार्थनायें पूरी करने के लिये प्रशांति निलयम को भी बेच देने के लिये तैयार हूँ। मैं लोगों की भलाई के लिये कुछ भी करने को तैयार हूँ। मेरे लिये केवल यही महत्वपूर्ण है।
>
> –साई वाणी, श्री सत्य साई बाबा के दिव्य प्रवचनों से संकलित सन्देश

स्वामी का क्या मतलब था यह हम सब जानते हैं, लेकिन, किसी ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि वे प्रशांति निलयम से शब्दशः अलग हो जायेंगे। मुझे विश्वास है कि यह सम्पूर्ण संसार की भलाई के लिये ही किया गया था।[1] तो यदि वे वापस आ रहे हैं, तो वह भी केवल इसी कारण आयेंगे। मेरे नम्र विचार से, इसके लिये पहला कदम उठाने की आवश्यकता भक्तों को है। स्वामी के अवतारकाल की प्रारम्भिक घोषणाओं में से एक के दौरान, उन्होंने कहा था कि, "साधुओं ने प्रार्थनायें की ओर मैं आया हूँ"। सत्य साई अवतार के अवतरण की भविष्यवाणी विभिन्न धर्मग्रंथों में हजारों वर्ष पहले कर दी गई थी। लेकिन अभी भी साधुओं को उनसे उनके अवतरण की प्रार्थना करनी है। तो यह मान लेना तर्कसंगत नहीं है कि हम भक्तों को उनकी वापसी के लिये अत्यधिक प्रयासपूर्ण प्रार्थना करनी होगी?

> स्वामी ने एक बार उनके एक भक्त से कहा था:
> हाँ, मेरे वचन उन लोगों के लिये हैं जो अपने विश्वास में दृढ़ हैं।
>
> –सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भाग 4, पृष्ठ 181

हम जानते हैं कि सम्पूर्ण विश्वास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भक्तों में स्वामी की वापसी के प्रति विश्वास रखने और एकमत होकर प्रार्थना करना ही इस पुस्तक को प्रकाशित करने का प्रमुख कारण है। मेरा कोई भी गूढ़ प्रयोजन या गुप्त उद्देश्य नहीं है। इस पुस्तक का "ऑनलाइन" (इन्टरनेट) संस्करण निःशुल्क पढ़ने के लिये भी उपलब्ध करवाया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से मैं एक बात दृढ़तापूर्वक कहना चाहता हूँ कि **स्वामी की वापसी में विश्वास करना कोई कमजोरी नहीं है। वास्तव में, गुरू के शब्दों पर अडिग विश्वास होना किसी भक्त या किसी शिष्य की सामर्थ्य बताता है।** हालाँकि, किसी को उसके गुरू के तरीकों पर प्रश्न नहीं करना चाहिये। स्वामी जो भी करते हैं, केवल वे ही उसका अर्थ या उसका कारण जानते हैं। हम उस पर प्रश्न पूछने के लिये नहीं हैं। लेकिन उनके शब्दों पर पूर्ण विश्वास रखना यह हमारा अधिकार है क्योंकि यह वह है जो स्वामी चाहते हैं कि हम करें:

> प्रतिज्ञा के शब्दों सत्य पर आधारित होते हैं। मेरे शब्द सत्य की छाप लिये होते हैं। मै सत्य से डिग नहीं सकता। मैं उनसे बात नहीं करता जिनके लिये मेरे शब्दों का कोई मूल्य नहीं है (...)

[1] "स्वामी ने अपनी देह क्यों छोड़ी" अध्याय में विचार किये गये कारणों से

जब लोग मेरे शब्दों पर ध्यान देते हैं, तो मैं उनकी हर तरह से सहायता करने के लिये तैयार हूँ और उन्हें सुख–शांति प्रदान करूंगा।

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग 28 अध्याय 2

उनके शब्दों को सम्पूर्ण महत्व देने के लिये स्वामी सभी को निर्देश देते हैं। तब हम भक्त चयनशील कैसे हो सकते हैं कि उनके किन शब्दों को हम चुने और किन्हें नहीं। हम भक्त उन्हें अपने स्वयं के दृष्टिकोण से सीमित करने का प्रयास करते हैं कि वे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं। स्वामी के शब्दों की अवश्यंभाविता पर विश्वास करने की अपेक्षा, उनकी अस्पष्ट और दुर्बोध व्याख्या करते हुए हम उन पर वह बैठाने का प्रयास करते हैं जो पहले ही घट चुका है। हम यह भूल जाते हैं कि ये वही ईश्वर हैं जिन्होंने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और वहाँ जो कुछ भी है उसकी रचना की है। क्या वे किसी चीज तक सीमित हो सकते हैं? स्वामी के भौतिक रूप में जाने के प्रारम्भिक दिनों में अधिकांश भक्त यह विश्वास करते थे कि वे स्वयं को भौतिक देह में पुनर्जीवित कर लेंगे। क्योंकि स्वामी के शब्दों के अनुसार अभी उनके जाने का समय नहीं था। तो अब अन्यथा क्यों सोचें? तब से अब तक क्या परिवर्तन हुआ है? यदि वे तब वापस आ सकते थे, तो अब उन्हें वापस आने से क्या रोक सकता है? वे किसी भी तरह से उस देह तक सीमित नहीं थे! यह हमारा कर्तव्य है कि हम उनके शब्दों पर सम्पूर्ण विश्वास रखें। मैं निश्चिंत हूँ कि केवल यह दृढ़ विश्वास ही उन्हें वापस लायेगा।

12 फरवरी 2012 को श्री विनोद कार्तिक[1] द्वारा रेडियो साई को दिये गये एक इंटरव्यू में, स्वामी की वापसी के बारे में मेरा स्वयं का विश्वास प्रतिध्वनित हुआ। उन्होंने अपनी प्रबल आस्था उस इंटरव्यू[2] में साझा की (केवल अंश दिये जा रहे हैं):

(...) व्यक्तिगत तौर पर, मैं एक प्रबल आस्था साझा करूंगा जो– पुनः, मैं व्याख्या नहीं कर सकता– यह केवल अन्तःज्ञान है कि निश्चित रूप से स्वामी सर्वव्यापी हैं; **वे हमेशा यहाँ हैं, लेकिन मैं पूर्णतः, 200 प्रतिशत आश्वस्त हूँ कि हम उन्हें भौतिक रूप में पुनः देखेंगे। मुझे इस बारे में कोई सन्देह नहीं है।**

स्वामी ने कई बातें कहीं हैं; मैं सोचता हूँ कि हमें किसी भी कारण से हमारी आस्था कम करने की आवश्यकता नहीं है। स्वामी उनके प्रत्येक शब्द पर कायम रहते हैं। **उनके शब्दों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिये सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को स्वयं को पुनरावलोकन करना होगा। हम सभी याद रखें, कि हम किसी सामान्य व्यक्ति के बारे में नहीं अपितु ईश्वर के अवतार के बारे में बात कर रहे हैं।**

जहाँ तक मेरे अनुभव से, यदि स्वामी के भौतिक रूप से कम से कम एक महत्वपूर्ण सीख का सवाल है, तो **मैं जानता हूँ कि स्वामी की आवाज अन्तरात्मा की भी आवाज है।** कभी भी यह दुविधा नहीं रही, कि स्वामी कुछ कह रहे हैं और अन्तरात्मा कुछ और कह रही है। **इसलिये मैं पूर्ण विश्वास से कहता हूँ कि प्रत्येक बात जो उन्होंने कही है समय के साथ स्वयं को सिद्ध करेगी।**

[1] श्री सत्य साई इंस्टीट्यूट ऑफ हायर लर्निंग के एम.बीए. पाठ्यक्रम के स्वर्ण पदक विजेता एक पूर्व छात्र

[2] media.radiosai.org/journals/vol_10/01FEB12/04_vinod_04.htm से साभार

स्वामी प्रत्येक वचन को पूरा करेंगे

स्वामी ने कहा है कि परिस्थितियां चाहे कुछ भी रहें वे अपने वचनों को पूरा करेंगे। सत्य साई अवतार के प्रारम्भिक दिनों के दौरान की एक भक्त श्रीमती सुब्बम्मा की कहानी है, जिनके घर में स्वामी के दर्शन के लिये भक्त एकत्र होते थे। उन्हें भगवान के प्रति असीम प्रेम और भक्ति थी। स्वामी ने उन्हें वचन दिया था कि वे उनकी एक इच्छा पूरी करेंगे। उनकी इच्छा अंतिम समय में स्वामी के दर्शन करने की थी। जब सुब्बम्मा का देहान्त हुआ तो स्वामी पुट्टपर्ति में नहीं थे। तथापि, उनके रिश्तेदारों ने अगले दिन स्वामी के वापस आने तक उनकी मृत देह को रखा। स्वामी ने उनकी अंतिम इच्छा कैसे पूर्ण की यह एक रोमांचकारी कहानी है, जो स्वामी ने स्वयं सुनाईः

(...) लोग मेरे पास दौड़ते हुए आये और बोले, "स्वामी, आपकी सुब्बम्मा पिछली रात गुजर गईं।" तुरंत, मैंने कार घुमाई और सीधा बुक्कापट्टनम गया। उनकी देह एक कपड़े में लपेट कर बरामदे में रखी हुई थी। घर के सभी लोग दुखी थे। **जब स्वामी एक बार वचन दे देते हैं, तो उसे किसी भी हालत में पूरा करते हैं।** मैंने वह कपड़ा हटाया जिससे देह ढँकी हुई थी। क्योंकि वे पिछली रात ही गुजर गईं थी इसलिये पूरी देह पर चीटियां चल रहीं थीं। मैंने पुकारा, "सुब्बम्मा", और उन्होंने अपनी आँखें खोल दी। यह समावार कुछ ही समय में "जंगल की आग" की तरह फैल गया। बुक्कापट्टनम के लोग यह बातें करते हुए वहाँ एकत्र होने लगे कि सुब्बम्मा को पुनर्जीवित कर दिया है। उस समय सुब्बम्मा की माँ सौ वर्ष की थीं। मैंने उन्हें तुलसी पत्र डालकर एक गिलास पानी लाने के लिये कहा। मैंने तुलसी पत्र सुब्बम्मा के मुख में डाला और उन्हें थोड़ा पानी पिलाया। मैंने कहा, "सुब्बम्मा, मैंने अपना वचन निभाया है। अब, तुम अपनी आँखें शांति से बंद कर सकती हो।" वे बोलीं, "स्वामी, इससे ज्यादा मुझे और क्या चाहिये? मैं आनन्दपूर्वक जा रहीं हूँ ।" आनन्द के आँसू बहाते हुए, उन्होंने मेरे हाथ थामे और अपनी अन्तिम सांस ली। **इस प्रकार से किसी भी हालत में मैं अपना वचन निभाता हूँ। इस तरह से मैं अपने वचन से कभी पीछे नहीं हटता हूँ।**

–दिव्य प्रवचन, 20 अक्टूबर 2002

स्वामी ने सुब्बम्मा को अन्तिम दर्शन देने के लिये उनकी आत्मा को अस्थायी रूप से वापस बुलाया। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि चाहे कुछ भी हो जाये स्वामी अपना वचन निभाते हैं। यदि स्वामी केवल अन्तिम दर्शन देने के अपने वादे को पूरा करने के लिये उनके भक्त को पुनर्जीवन दे सकते हैं, तो उनके स्वयं के वचनों को पूरा करने के लिये स्वयं को वापस लाने से उन्हें कौन रोक सकता है?

मुझे लेशमात्र भी सन्देह नहीं है कि स्वामी के वे वचन जो पूर्ण होना बाकी हैं, अंततोगत्वा पूर्ण होंगे। कैसे और कब, केवल स्वामी जानते हैं ! केवल कुछ वर्षों के बाद ही जब हम पीछे मुड़ कर देखेंगे, तब हमें समझ में आयेगा। श्री सत्य साई बाबा सामान्य अवतार नहीं हैं। हम, ईश्वर के मानव रूप में अवतरित हुए अब तक के सबसे शक्तिशाली अवतार के बारे में बात कर रहे हैं ! आज से कई साल बाद, आने वाली पीढ़ियाँ जब सत्य साई अवतार की महिमा के बारे में बातें करेंगी, तब समस्त गौरवशाली विजय गाथाओं के बीच में एक भी भविष्यवाणी के विफल होने का निशान भी नहीं होगा। मैं यह मानने से इंकार करता हूँ कि ऐसा होगा!

उनके भक्तों के लिये प्रशिक्षण का समय?

जब स्वामी गये, सभी भक्त शोक में डूब गये थे। जैसे कि उस घटना के लिये हमें तैयार करने के लिये, स्वामी ने हमें एक अद्वितीय आश्वासन दिया थाः

> किसी को भी स्वामी के कुशल–क्षेम की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। स्वामी पर कभी भी कोई खतरा नहीं आ सकता है। स्वामी सभी कठिनाईयों और परेशानियों से हमेशा सही–सलामत बाहर आ जायेंगे; किसी को भी डरने या बुरा लगने या दुखी होने की जरूरत नहीं है। स्वामी समस्त सफलतायें अर्जित करेंगे।
>
> –दिव्य प्रवचन, 13 जुलाई 2003

उपरोक्त वक्तव्य अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि स्वामी, जब यह स्वीकार कर रहें हैं कि आगे कठिनाईयाँ और परेशानियाँ आयेंगी, तो वे यह भी आश्वासन दे रहे हैं कि वे उनमें से सही सलामत बाहर आ जायेंगे। लेकिन हम चिंतित और परेशान क्यों ना हों? वे हमारे प्रिय स्वामी हैं! स्वामी कहते हैं कि जब कृष्ण ने उनकी देह का त्याग किया था, तो अर्जुन इस विछोह को सह नहीं पाये थे और अपनी मानसिक शक्ति खो बैठे थे।

> अर्जुन हमेशा यह समझते थे कि कृष्ण उनके हृदय में थे ओर वे ही उन्हें शक्ति प्रदान करते थे। जब उन्होंने सुना कि कृष्ण अपने धाम वापस लौट गये हैं, तो उन्हें लगा कि कृष्ण चले गये हैं और उनकी वह शक्ति भी चली गई है।
>
> –कन्वर्सेशन विद् सत्य साई बाबा, पृष्ठ 159

जब द्वापर युग में अर्जुन जैसे पहुँचे हुए भक्त उनके इष्ट से विछोह सहन नहीं कर सकते हैं, तो इस कलियुग में हम कैसे इस दुःख को सहन कर सकते हैं? फिर भी, स्वामी की कृपा से, यह भी सत्य है कि बहुत से भक्तों ने भौतिक रूप से और आगे जा कर स्वामी को अपने हृदय में स्थापित कर लिया है। मेरे विचार से यह भी उनके रूप और देह से उनके भक्तों का मोह खत्म करने में उनकी मदद करना उनके दिव्य नाटक का ही एक भाग है।

भले ही, हम उनकी वापसी के लिये अत्यंत लालायित हैं, हमें यह बात सुनिश्चित कर लेनी चाहिये की हमारी प्रार्थनाओं का उद्देश्य उनकी भौतिक निकटता पुनः प्राप्त करने के लिये नहीं हो। इस तरह की प्रार्थना प्रथमतया केवल उनके भौतिक रूप में अन्तर्ध्यान हो जाने के उद्देश्य को दूर ही करेगी। पहले के अध्यायों में स्वामी की दीर्घायु के बारे में उनके वक्तव्य और श्री सत्य साई अवतार इस संसार में स्वर्णिम युग का प्रवेश किस प्रकार करवायेंगे यह हम देख ही चुके हैं। यदि स्वामी ने वे वक्तव्य नहीं दिये होते तो हम सभी इस समय श्री प्रेम साई अवतार की प्रतीक्षा कर रहे होते ना कि श्री सत्य साई अवतार की वापसी की। आज संसार दारुण स्थिति में है। इसी कारण से, हमें इस दृष्टिकोण से प्रार्थना करना चाहिये कि स्वामी की वापसी का संसार पर पड़ने वाला प्रभाव उच्चतर हो।

जैसा कि स्वामी ने कई बार उल्लेख किया है, उनके समस्त भक्तों को उनके दिव्य उद्देश्य में भूमिका निभानी है।

तुम सभी को (स्वर्णिम युग की तरफ ले जाने वाले) रूपांतरण को शीघ्रता से लाने के लिये भूमिका निभानी है और जिस साधन का उपयोग करना है वह प्रेम है।

- श्री सत्य साई बाबा एण्ड द् फ्यूचर ऑफ मेनकाइण्ड
पृष्ठ 224

करीब–करीब 1979 में, चार्ल्स पेन को दिये एक संदेश के माध्यम से, स्वामी हम सभी को उनके अवतरण के उद्देश्य का साधन बनने के लिये तैयार रहने का निर्देश देते हैं।

तुम्हारा कार्य शुरु हो गया है, मेरे भक्तों, मेरे वो शब्द तुम्हारे लिये हैं। तुम में से हरएक को इस जीवन में एक अद्वितीय और बहुमूल्य भूमिका निभानी है। केवल वे ही मेरी सेवा कर सकेंगे जिन्हें मैंने बुलाया है। मेरा कार्य अब उस बिन्दु तक पहुँच चुका है जब तुम में से प्रत्येक के करने के लिये कार्य है। उस महान आकाश गंगा में इस ग्रह का एक प्रयोजन है जो इसे धारण किये है। यह प्रयोजन हमारी आँखों के सामने प्रकट हो रहा है। मैं तुम्हें आव्हान कर रहा हूँ कि तुम अपने अंदर भक्ति प्रस्फुटित करो, ताकि इसकी अदृश्य शक्ति उन सभी को आवृत्त कर ले जो भी तुम्हारी परिधि में आये। तुम्हारी भूमिका सफलता पूर्वक सम्पन्न करने के लिये, हमेशा मुझ पर केन्द्रित रहो (...) मेरे प्रेम का विस्तार सम्पूर्ण संसार में अनुभव किया जायेगा। मैंने तुम्हें इस कार्य के लिये कई अवतरणों के दौरान तैयार किया है। मैंने तुम्हें अपनी ओर खींचा है। मेरे कार्य में मैंने पिछले अवतरणों में महान प्रगति की है। मेरा कार्य निरन्तर है और इसलिये तुम्हारा भी अन्तहीन है। (...)

यह ज्ञान रखो कि मैं तुम्हारे अंदर भी और बिना भी हूँ। वहाँ कोई भेद नहीं है। क्षुद्रता से तुम हमेशा के लिये पीछा छुड़ा लो। अब तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूँ। कहीं कोई अंतर नहीं है। मेरे दर्शन मुझसे तुम तक ओर तुम में परमानन्द का प्रवाह करेंगे। तुम इस निरन्तर क्रिया से अनभिज्ञ हो। हृदय और आत्मा से हमेशा निर्मल रहो और मानवता तुम्हारे इस अद्वितीय गुण से लाभान्वित होगी।

दूसरे भी, मुझे इस कार्य में सहयोग देंगे जब मैं उन्हें अपनी ओर खींचूंगा। वह समय आ रहा है जब समस्त मानवता सामंजस्य के साथ रहेगी। किसी की उम्मीद से भी पहले यह समय आयेगा। *यह आये इसके पहले ही, प्रत्येक जीव को जीवन का सच्चा उद्देश्य बताने के लिये प्रत्येक जरूरत की तैयारी करके रखो* (...)

–माय बिलव्ड, चार्ल्स पेन, पृष्ठ 96-97

स्वामी के कार्य की निरन्तरता के लिये उनकी वापसी के बारे में इंतजार करने की अपेक्षा, प्रत्येक भक्त को अपनी साधना तीव्र करनी चाहिये और नये साई युग में उनका दिव्य साधन बनने के लिये लालायित रहना चाहिये। उपरोक्त विचारोत्तेजक सन्देश में स्वामी हमें इसी बात के लिये प्रेरित कर रहे हैं।

पहले के समय में भी जब स्वामी भक्तों सहज पहुँच में थे, मैंने कहानियाँ सुनी हैं जिनमें उन्होंने किसी समय बहुत नज़दीक रहे भक्तों से दूरी बना ली थी। स्वामी को यह क्यों करना पड़ा? जैसा मैं समझता हूँ , स्वामी का मातृवत प्रेम और उन भक्तों को स्वामी के भौतिक रूप के मोह से दूर करने की आतुरता के कारण स्वामी को यह करना पड़ा, ताकि वे उनकी निराकार वास्तविकता से एकात्म हो सकें। जो उनकी भौतिक उपस्थिति में कई बार कठिन होता है। मेरा मानना है कि इसलिये वे हमसे अदृश्य हो गये हैं; जिससे

हम यह अत्यावश्यक सबक सीख सकें कि स्वामी केवल भौतिक देह नहीं हैं, और यह भी कि वे हमारे ऊपर, हमारे आसपास और हमारे अन्तः में हैं। इस ज्ञान के साथ हमें अन्तर्मुखी हो जाना चाहिये और अपने आप को उस सुन्दर आध्यात्मिक युग के लिये तैयार कर लेना चाहिये जिसके लिये स्वामी ने वचन दिया है।

दूसरी ओर, जब स्वामी वापस आयेंगे, तो क्या उस वापसी का इस संसार पर पड़ने वाले प्रभाव के परिमाण की हम कल्पना भी कर पायेंगे? स्वामी ने एक बार कहा था कि सारा संसार प्रशांति निलयम आयेगा और वहाँ खड़े रहने का भी स्थान नहीं होगा।[१] डॉ. के. हनुमन्थप्पा ने उनकी पुस्तक "श्री सत्य साई बाबा ए युगावतार"[2] में पुट्टपर्ति के भविष्य के बारे में उनके स्वप्न का वर्णन करते हैं।[3]

> केवल त्यौहारों के अवसर पर कोई स्वामी के दर्शन दूर से कर सकता है। तब भी हम स्वामी के सम्पूर्ण भौतिक स्वरूप का दर्शन नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार भविष्य में, यह स्थिति अकल्पनीय होगी। हम पुराने भक्तों को लगेगा कि जैसे हम किसी अपरिचित संसार में आ गये हैं।

इस तरह से केवल यह उचित होगा कि हम भक्त उनकी असम्भव सी भौतिक सामीप्यता की लालसा करने के स्थान पर उन्हें अपने हृदय में स्थापित करने का प्रयास करें। "महदी का अन्तर्ध्यान होना" नामक अध्याय में हम देख चुके हैं कि कैसे हजरत महदी के बारे में की गई भविष्यवाणियाँ श्री सत्य साई बाबा की विशेषताओं के सदृश हैं। हमने यह भी देखा था कि हजरत महदी के अदृश्य हो जाने और उसके परिणामस्वरूप पुनः प्रकट होने के बारे में क्या लिखा गया है। मैं एक और भविष्यवाणी के सम्पर्क में आया हूँ जो कहती है कि महदी जब वापस आयेंगे तो उनका किसी को कोई समर्थन नहीं होगा।

> जब वे उठेंगे, हमारे कईम पर किसी के प्रति निष्ठा की जिम्मेदारी नहीं होगी।
>
> –बिहार–उल–अनवर, खण्ड 13, भाग 1, अंग्रेजी अनुवाद पृष्ठ 147

दूसरे शब्दों में, जब कईम या हजरत महदी अदृश्य होने के बाद पुनः प्रकट होंगे, तो, उनका उत्थान किसी समुदाय विशेष के लिये नहीं होगा। बल्कि वे सम्पूर्ण मानवता के लिये परमेश्वर होंगे। सम्भवतः उनके अदृश्य होने की यह समयावधि हम भक्तों के लिये इस तरह के अलगाव से उबरने के लिये प्रशिक्षण सत्र के समान है।

स्वामी ने हमेशा से ही अपनी शक्तियाँ माया और मानवीयता के आवरण में अवरुद्ध की हुई थीं। उनका तर्क यह था कि यदि वे अपनी शक्तियों को वास्तविक रूप में प्रकट कर देंगे तो सम्पूर्ण संसार उनकी ओर खिंचा चला आयेगा, लेकिन उसके लिये समय अभी परिपक्व नहीं है।

> वह समय (अवतरण की सार्वभौमिक घोषणा का) अभी बहुत दूर है। इसके पहले मुझे इस तरह के लोगों को समीप लाना होगा, जो, उनके पूर्व जन्मों में, उनकी घोर साधनाओं के माध्यम से, अथक और निरन्तर प्रयासों के द्वारा मुझ तक पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं। एक समय आएगा जब इस विश्व को सार्वभौमिक घोषणा के माध्यम से अवतार के बारे में ज्ञात हो जायेगा।
>
> –साई बाबा एण्ड नर नारायण गुफा आश्रम, भाग–2, पृष्ठ 38

---

[1] कृपया "श्री सत्यसाई युग का उदय" नामक अध्याय देखें।

[2] पृष्ठ 167

[3] कृपया "उनकी अवश्यंभावी वापसी के संकेत" नामक अध्याय देखें।

जैसे–जैसे समय गुजरता जायेगा, वे लोग भी जो अभी स्वामी का सत्य पहचानने में सक्षम नहीं हैं, उन्हें भी पश्चाताप के आँसूओं के साथ आना होगा। शीघ्र ही, यह विश्वस्तर पर होगा। स्वामी अभी इस परिवर्तन को रोके हुए हैं। एक बार जब इसे प्रकट होने दिया जायेगा, सारा संसार प्रशांति निलयम में परिवर्तित हो जायेगा।

–श्री सत्य साई वचनामृत भाग 15, अध्याय 55

सम्भवतया अब समय इस विश्वस्तरीय परिवर्तन के लिये परिपक्व हो रहा है। अतः जब स्वामी वापस आयेंगे तो वे किसी भी बंधन से मुक्त रहेंगे। उस समय इसकी आवश्यकता भी नहीं होगी। स्वामी सबके लिये संदेश और उदाहरण स्वरूप 85 वर्ष का दीर्घ जीवन व्यतीत कर ही चुके हैं। अब यह किसी भी स्व–आरोपित अवरोध के बिना, सर्व–शक्तिमान के सम्पूर्ण प्रकटीकरण का द्वितीय–आगमन होगा। ज्ञात हुए सभी संकेत दिये गये हैं, इतनी सम्भावनाओं के बावजूद कौन इंकार कर सकता है?

हे परम प्रिय भगवान सत्य साई, आपका युग आये....
...यह शीघ्र आये!

प्रार्थना

स्नेही साई माँ,
प्रेम से रहे तुम्हें पुकार....

होगा यह अवश्य,
तेरा साम्राज्य आयेगा!

सुनो हमारी पुकार,
चरणों में करें पुकार

और समर्पित सर्वस्व कर,
हम तेरे बच्चे रहे पुकार

नहीं रोक सकती घनघोर घटाऐं
दीर्घकाल तक अरूण की रश्मियाँ

तेरे साम्राज्य में चमकने को
अब सूरज भी है बेकरार...

तेरी इबादत और आराधना के लिये
नये लम्हों का अब इंतजार![१]

[1] सुश्री जूली चौधरी द्वारा अंग्रेजी में लिखित प्रार्थना. हिन्दी अनुवादकः संजय ढगट

हे प्रभु, थाम लो मेरा प्रेम,
इसे श्रद्धा से तुम तक बहने दो;

हे प्रभु, थाम लो मेरे हाथ
सेवा में इन्हें निरन्तर रहने दो;

हे प्रभु, थाम लो मेरी आत्मा को
तुममें एकाकार होने को;

हे प्रभु,, थाम लो मेरे मन और विचारों को
तुम में लय हो जाने को;

हे प्रभु, थाम लो मुझे
अपना सर्वस्व बनाने को.

सन्दर्भ सूची

- *An Eastern View of Jesus Christ*, Lee Hewlett and K. Nataraj, Sai Publications, 1982
- *Anyatha Saranam Nasthi (Other than You Refuge There is None),* Smt. Vijayakumari, Sai Shriram Printers, 1999
- *Baba: Satya Sai*, Ra. Ganapati, Satya Jyoti, 12, Radhakrishnan Street, Madras, 600017, India, 1981
- *Bihar-ul-Anwar* Volume 13 Part 1 & 2*,* Allamah Muhammad Baqir al-Majlis, English Translation, Ja'fari Propagation Centre, Mumbai
- *Bhagavan Sri Sathya Sai Baba (An Interpretation)*, V.K.Gokak, New Delhi: Abhinav Publications, 1975
- *Conversations with Bhagavan Sri Sathya Sai Baba*, J.S.Hislop, Sri Sathya Sai Books & Publications Trust
- *Conversations with Sathya Sai Baba*, J.S.Hislop, Birth Day Publishing Co., San Diego, CA, 1978
- *God Descends on Earth*, Sanjay Kant, Sri Sathya Sai Towers Pvt. Ltd., 1998
- *In Search of Sai Divine*, Satya Pal Ruhela, M.D. Publications Pvt. Ltd., 1996
- KJV: *King James Version* of the Holy Bible
- *Living Divinity*, Shakuntala Balu, Sawbridge Enterprises, 1981
- *Modern Miracles: An Investigative Report on Psychic Phenomena Associated With Sathya Sai Baba*, Erlendur Haraldsson, Hastings House, 1997
- *My Baba and I*, Dr.John S. Hislop, Birth Day Publishing Co., 1985
- *My Beloved. The Love and Teaching of Bhagavan Sri Sathya Sai Baba*, Charles Penn, Sri Sathya Sai Baba Books and Publications Trust, Prasanthi Nilayam, 1981
- *Sacred Nadi Readings*, Compiled by Sri Vasantha Sai, Sri Vasantha Sai Books & Publications Trust, Mukthi Nilayam, 2011
- *Sai Baba and the Nara Narayan Gufa Ashram Part 1 & 2*, Swami Maheshwaranand, ed. B.P. Mishra. Bombay: Prasanthi Printers, 1990
- *Sai Baba Avatar: A New Journey into Power and Glory*, Howard Murphet, San Diego, Birth Day Publishing Co., 1977
- *Sai Baba, The Holy Man and the Psychiatrist*, Samuel H. Sandweiss, San Diego: Birth Day Publishing Co., 1975
- *Sai Messages for You and Me Vol. I*., Lucas Ralli, London: Vridnavanum Books, 1985
- *Sai Messages for You and Me Vol. II*., Lucas Ralli, London: Vridnavanum Books, 1988
- *Sai Vaani*: Messages collected from discourses of Sri Sathya Sai Baba
- *Sai Vandana*, ed. K.Hanumanthappa, Prasanthi Nilayam, Sri Sathya Sai Institute of Higher Learning, 1995
- *Sanathana Sarathi*: A monthly magazine published from Prasanthi Nilayam
- *Sathya Sai Baba, Embodiment of Love*, Peggy Mason and Ron Laing, London, Sawbridge, 1982
- *Sathya Sai Speaks*: Discourses by Bhagawan Sri Sathya Baba translated from Telugu (Sri Sathya Sai Books and Publication Trust)
- *Sathyam Sivam Sundaram* Volumes 1-4, Sri N.Kasturi, Sri Sathya Sai Books and Publications Trust, Prasanthi Nilayam, 1961-1980
- *Sri Sathya Sai Avathar*, V.Aravind Subramaniyam, Sura Books Pvt. Ltd., 2004
- *Sri Sathya Sai Baba and the Future of Mankind*, Sathya Pal Ruhela, New Delhi: Sai Kripa, 1991
- *Sri Sathya Sai Baba A Yugavatar*, Dr.K.Hanumanthappa, Sri Sathya Sai Books and Publications Trust, Prasanthi Nilayam, 2008
- *Thapovanam Sri Sathya Sai Sathcharithra*, Jandhyala Venkateswara Sastry, Sri Sathya Sai Books and Publications Trust, 2002
- *The Blitz Interview*: The extended interview given by Sri Sathya Sai Baba to the chief editor R.K.Karanjia of Blitz Magazine in September of 1976
- *The Heart of Sai*, R. Lowenberg, Sri Sathya Sai Towers Pvt. Ltd., 1981
- *The Life of Bhagavan Sri Sathya Sai Baba*, Kasturi.N, Sri Sathya Sai Baba Book Center of America, 1971